संपूर्ण पंचांग ज्ञान

सत्य प्रकाश द्विवेदी

सत्य प्रकाश द्विवेदी

दो शब्द

कुछ भी कहने से पूर्व मैं यह उचित समझता हूँ कि सर्वप्रथम पुस्तक लिखने का उद्देश्य क्या है, यह संक्षेप में कहना उचित होगा। जैसा कि हम जानते हैं कि वेदांग के एक अंग के रूप में ज्योतिष—शास्त्र जाना जाता है। कुछ समय पूर्व तक ज्योतिष—शास्त्र एक दुरूह विषय के रूप में जाना जाता था तथा एक सीमित वर्ग के बीच में ही जाना जाता था, परंतु वर्तमान समय में ज्योतिष—शास्त्र के प्रचार—प्रसार के कारण आम जातक भी ज्योतिष में रुचि ले रहा है; परंतु संस्कृत भाषा एवं पंचांग ज्ञान के अभाव में आम जातक ज्योतिष—शास्त्र को पढ़ने एवं सीखने में कठिनाई महसूस कर रहा है। संस्कृत के विकल्प के रूप में आज बहुतायत पुस्तकें विभिन्न विद्वानों द्वारा हिंदी भाषा में लिखी गई हैं, जो सर्वत्र उपलब्ध हैं, परंतु पंचांग का विकल्प आज भी उपलब्ध नहीं है तथा मेरी जानकारी के अनुसार पंचांग ज्ञान के विषय से संबंधित कोई भी पुस्तक उपलब्ध न होने के कारण पंचांग ज्ञान से संबंधित विषय को समझने में कठिनाई होती है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर पंचांग ज्ञान को प्रचलित सरल भाषा में लिखने का प्रयास किया गया है, ताकि विषय—वस्तु को समझने में नवीन विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की कठिनाई महसूस न हो तथा बिना किसी मदद के मात्र इसी पुस्तक से पंचांग का संपूर्ण ज्ञान संभव हो सके।

पंचांग में प्रयुक्त होनेवाली विभिन्न प्रकार की शब्दावली को सरल भाषा में उदाहरण सहित समझाने का प्रयास किया गया है तथा पुस्तक के अंतिम अध्याय के रूप में विभिन्न प्रकार की सारणियाँ भी दी गई हैं, जिससे पाठकों को अन्यत्र भटकना न पड़े। इसके अतिरिक्त पंचांग में अंकित विभिन्न प्रकार के व्रत और त्योहार, अंकित मुहूर्त आदि को भी समझाया गया है। एक अति महत्त्वपूर्ण अध्याय मौखिक ज्ञान में पंचांग के विभिन्न अंग एवं अन्य संबंधित विषय—वस्तु को मौखिक रीति से समझाया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक को 9 अध्यायों में बाँटा गया है, जो 9 ग्रहों को समर्पित हैं। प्रस्तुत पुस्तक के 9 अध्याय क्रम से अथ पंचांग ज्ञानम् 'सूर्य' को, अथ मौखिक ज्ञानम् 'चंद्र' को, अथ पंचांग अवलोकन ज्ञानम् 'मंगल' को, अथ जन्मांग ज्ञानम् 'बुध' को, अथ मुहूर्त ज्ञानम् 'बृहस्पति' को, अथ व्रत और त्योहार ज्ञानम् 'शुक्र' को, अथ मेलापक ज्ञानम् 'शनि' को, अथ विविध ज्ञानम् 'राहु' को तथा अथ सारणी ज्ञानम् 'केतु' को समर्पित है; क्योंकि उक्त 9 ग्रहों के आशीर्वाद से ही उक्त 9 अध्याय का लेखन संभव हो पाया है।

अंत में, मैं अपने गुरुजी पंडित राधेश्याम शास्त्रीजी, जो भारतीय ज्योतिष विद्यापीठ, लखनऊ के संस्थापक, अध्यक्ष एवं संचालक हैं, को नमन करता हूँ; क्योंकि आपके प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ही उक्त कार्य संभव हो पाया है। साथ ही मैं अपनी धर्म—पत्नी श्रीमती रंजना द्विवेदी का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने इस कार्य हेतु मुझे सहयोग प्रदान किया।

पुस्तक को लिखने में मैंने बहुत ही सरल भाषा एवं सामान्य बोल—चाल की भाषा का ही प्रयोग किया है, जिससे जन—साधारण भी पंचांग ज्ञान का लाभ उठा सके। विषय—वस्तु की व्याख्या करने में यदि किसी प्रकार की त्रुटि रह गई हो तो उसको क्षमा कर उस त्रुटि की सूचना देने का कष्ट करेंगे तथा विषय—वस्तु में किसी भी प्रकार का सुझाव हो तो उसका स्वागत है।

—सत्य प्रकाश द्विवेदी

लखनऊ

आश्विन शुक्ल दशमी
विक्रम संवत् 2067

पंचांग ज्ञान

पंचांग ज्ञान केवल काल—गणना का साधन मात्र ही नहीं है, अपितु हिंदू संस्कृति का आधारभूत स्तंभ है। पंचांग मात्र तिथि, वार, नक्षत्र, करण एवं योग का ज्ञान ही नहीं अपितु इसमें हिंदू संस्कृति में प्रचलित समस्त प्रकार के व्रत और त्योहार, ग्रहों की स्थिति, विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त आदि सम्मिलित हैं।

आज के इस भौतिक युग में जब प्रत्येक जातक भौतिकता के पीछे भाग रहा है तथा जितना ही वह भाग रहा है उतना ही वही दु:ख एवं कष्टों को अपने पास आने के लिए आमंत्रित कर रहा है। अत: आज आवश्यकता है कि जातक किसी भी कार्य—सिद्धि के लिए काल को अच्छी तरह से समझ लें। यदि जातक काल के अनुसार कार्य का चुनाव करे, तब जातक को अपेक्षित कम श्रम में अधिक लाभ की प्राप्ति हो सकती है तथा काल की पहचान के लिए हमारे ऋ षि—मनीषियों ने पंचांग का निर्माण किया, जो सारे विश्व में काल गणना का अद्‍भुत शास्त्र है।

उक्त से स्पष्ट है कि पंचांग ज्ञान से पूर्व काल परिचय आवश्यक है, क्योंकि पंचांग एक प्रकार से काल शास्त्र भी है। काल को विषय वस्तु के अनुसार विभिन्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। एक विषय—वस्तु के अनुसार काल के पाँच अंग— वर्ष, मास, दिन, लग्न एवं मुहूर्त है। दूसरे प्रकार की विषय—वस्तु के अनुसार काल के पाँच अंग तिथि, वार, नक्षत्र, करण एवं योग है। एक अन्य प्रकार से काल के दो अंग माने गए हैं—सूक्ष्म काल एवं स्थूल काल। सूक्ष्म काल वह काल है, जो लोक—व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होता है तथा स्थूल काल वह काल है, जो लोक—व्यवहार में प्रयुक्त होता है।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत हम लोग काल के सभी अंगों के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे; परंतु उसके पूर्व काल की विभिन्न इकाइयों को समझने का प्रयास करेंगे। पंचांग में काल की इकाइयों में घटी, पल, विपल, घंटा, मिनट, राशि, अंश, कला, विकला आदि का प्रयोग विषयानुसार किया गया है, जिनके परस्पर संबंधों को चार खंडों में निम्नानुसार बाँटा गया है—

प्रथम खंड

60 त्रुटि = 1 रेणु

60 रेणु = 1 लव

60 लव = 1 लीक्षक

60 लीक्षक = 1 प्राण

60 प्राण = 1 पल

60 पल = 1 घटी

द्वितीय खंड

60 प्रतिपल = 1 विपल

60 विपल = 1 पल

60 पल = 1 घटी

24 मिनट = 1 घटी

2 पल = 1 मिनट

2 विपल = 1 सेकंड

2 घटी = 1 घंटा

60 घटी = 24 घंटा

60 प्रति विकला = 1 विकला

60 विकला = 1 कला

60 कला = 1 अंश

30 अंश = 1 राशि

12 राशि = 1 भचक्र

तृतीय खंड

8 भव = 1 अंगुल

24 अंगुल = 1 हाथ

4 हाथ = 1 बाँस

2,000 बाँस = 1 कोस

चतुर्थ खंड

2 घटी = 1 मुहूर्त

7घटी = 1 प्रहर

8 प्रहर = 1 अहोरात्र

30 मुहूर्त = 1 अहोरात्र

30 अहोरात्र = 1 मास

12 मास = 1 वर्ष

1 वर्ष = 1 दिव्य दिन

360 वर्ष = 1 दिव्य वर्ष

काल की उक्त इकाइयों को समझने के पश्चात् पंचांग के प्रारंभ में संवत्सर आदि का उल्लेख अंकित रहता है तथा पंचांग में सबसे ऊपर अयन, गोल, ऋतुएँ, मास, संवत्, वर्ष आदि अंकित रहते हैं, जिनका सूक्ष्म में विवरण निम्नानुसार है—

संवत्सर : पंचांग में संवत्सर का नाम दिया रहता है। संकल्प, तर्पण आदि में जिसका उपयोग होता है। संवत्सर 60 होते हैं। वास्तव में वृहस्पति की गति के अनुसार गणित से संवत्सर निकाले जाते हैं। संवत्सर निकालने की विधि है कि संवत् में 9 जोड़ें, फिर 60 से भाग दें, जो शेष बचे उसमें 1 जोड़ देने से संवत् में जो संवत्सर चल रहा होगा वह निकल आएगा। जैसे वर्तमान में संवत् 2066 चल रहा है, अत: 2066+9 = 2075 इसे 60 से भाग देने पर (2075/60) 35 शेष बचा फिर 35+1 = 36 आया।

इस प्रकार संवत् 2066 में 36वाँ संवत्सर अर्थात् शुभकृत संवत्सर चल रहा है।

क्रमानुसार संवत्सरों के नाम

1. प्रभव
2. विभव
3. शुक्ल

4. प्रमोद
5. प्रजापति
6. अंगिरा
7. श्रीमुख
8. भाव
9. युवा
10. धाता
11. ईश्वर
12. बहुधान्य
13. प्रमाची
14. विक्रम
15. वृष
16. चित्रभानु
17. सुभान
18. तारण
19. पार्थिव
20. व्यय
21. सर्वजित्
22. सर्वधारी
23. विरोधी
24. विक्रति
25. खर
26. नंदन
27. विजय
28. जय
29. मन्मथ
30. दुर्मुख
31. हेमलंबी
32. विलंबी
33. विकारी
34. शार्वरी
35. प्लव
36. शुभकृत
37. शोभन
38. क्रोधी

39. विश्वावसु
40. पराभव
41. प्लवंग
42. कीलक
43. सौम्य
44. साधारण
45. विरोधकृत
46. परिधावी
47. प्रमादी
48. आनंद
49. राक्षस
50. नल
51. पिंगल
52. कालयुक्त
53. सिद्धार्थी
54. रौद्र
55. दुर्मति
56. दुंदुभि
57. रुधिरोद्गारी
58. रक्ताक्षी
59. क्रोधन
60. क्षय

अयन

अयन दो होते हैं— उत्तरायण (शुभ कर्म) एवं दक्षिणायन (निंदित कर्म)

उत्तरायण सूर्य की मकर संक्रांति से प्रारंभ होकर मिथुन संक्रांति की समाप्ति तक रहता है। इसमें दिन क्रम—क्रम से बढ़ता है। मकर संक्रांति 15 जनवरी से प्रारंभ होकर 15 जून तक अर्थात् मिथुन संक्रांति की समाप्ति तक उत्तरायण रहता है।

सूर्य कर्क संक्रांति से लेकर धनु संक्रांति के अंत तक दक्षिणायन सूर्य कहलाता है। इसमें रात्रि क्रम—क्रम से बढ़ती है। 16 जुलाई अर्थात् कर्क संक्रांति से लेकर 14 जनवरी अर्थात् धनु संक्रांति की समाप्ति तक सूर्य दक्षिणायन रहता है।

गोल

गोल दो हैं। आकाश के दो भाग इस प्रकार किए जाएँ कि ऊपर भाग के मध्य में आकाश का उत्तर ध्रुव और दूसरे भाग के मध्य में दक्षिण ध्रुव हो तो पहले को उत्तर गोल और दूसरे को दक्षिण गोल कहते हैं।

मेष से कन्या तक 6 राशियाँ उत्तर गोल की तथा तुला से मीन तक 6 राशियाँ दक्षिण गोल की हैं, अर्थात् सूर्य जब मेष राशि में होगा तो कहा जाएगा कि सूर्य उत्तर गोल में है।

ऋतुएँ

12 मास में 6 ऋतुएँ होती हैं, अर्थात् प्रत्येक ऋतु दो मास की होती है—

अयन : उत्तरायण

सूर्य राशि : 10—Nov

चंद्र मास : माघ—फाल्गुन

ऋतु : शिशिर

MONTHS : Jan—Feb

अयन : उत्तरायण

सूर्य राशि : 12—Jan

चंद्र मास : चैत्र—वैशाख

ऋतु : बसंत

MONTHS : Mar—Apr

अयन : उत्तरायण

सूर्य राशि : 02—Mar

चंद्र मास : ज्येष्ठ—आषाढ़

ऋतु : ग्रीष्म

MONTHS : May—June

अयन : दक्षिणायन

सूर्य राशि : 04—May

चंद्र मास : श्रावण—भाद्रपद

ऋतु : वर्षा

MONTHS : July—Aug

अयन : दक्षिणायन

सूर्य राशि : 06—Jul

चंद्र मास : आश्विन—कार्तिक

ऋतु : शरद

MONTHS : Sept—Oct

अयन : दक्षिणायन

सूर्य राशि : 08—Sep

चंद्र मास : मार्गशीर्ष—पौष

ऋतु : हेमंत

MONTHS : Nov—Dec

मास

मास 4 प्रकार के होते हैं—

1. चंद्र मास— शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक 1 चंद्र मास कहलाता है।

2. सौर मास— सूर्य की एक संक्रांति से दूसरी संक्रांति तक।

सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, उस समय दूसरी राशि की संक्रांति होती है। जैसे मेष राशि के बाद सूर्य वृष राशि में जिस दिन आया, उसी दिन वृष की संक्रांति कहलाएगी।

3. सावन मास— सूर्य के एक उदय से दूसरे उदय तक के समय को 1 सावन दिन और इस प्रकार 30 सावन दिन का 1 सावन मास कहते हैं। सावन दिन का मान समान नहीं होता है, इस कारण मध्यम सावन दिन का मान लिया जाता है।

4. नाक्षत्र मास— अश्विनी आदि 27 नक्षत्रों में जब चंद्र एक बार पूरा भ्रमण कर लेता है तब नक्षत्र मास होता है।

चंद्र मास 2 प्रकार के होते हैं—

1. अमांत मास : शुक्ल प्रतिपदा से अमावस्या तक 1 मास होता है। यह दक्षिण भारत/महाराष्ट्र में चलता है।

2. पूर्णिमांत मास : कृष्ण प्रतिपदा से पूर्णिमा तक 1 मास, यह उत्तर भारत में चलता है।

अधिक मास : जिस चंद्र मास में सूर्य की संक्रांति नहीं होती उसे अधिक मास कहते हैं। अर्थात् जब दो पक्ष में संक्रांति नहीं होती है तो उसे अधिक मास कहते हैं।

32 मास 16 दिन 4 घड़ी व्यतीत होने पर अधिक मास पड़ता है, अर्थात् तीसरे वर्ष अधिक मास पड़ता है और उस वर्ष में 13 मास हो जाते हैं।

अधिक मास को **मल मास** या **पुरुषोत्तम मास** भी कहते हैं। चंद्र मास के गणित से वर्ष में 354 दिन 9 घंटे और सूर्य मास के वर्ष में 365 दिन 6 घंटे प्राय: होते हैं। इस कारण सूर्य और चंद्र के दिनों का अंतर (प्रत्येक वर्ष लगभग 11 दिनों का अंतर अर्थात् 3 वर्ष में लगभग 33 दिनों का अंतर) अधिकतम मास होने से बराबर होता है।

विशेष

अधिक मास फाल्गुन माह से कार्तिक माह के मध्य ही पड़ता है।

क्षय मास

जिस चंद्र मास के 2 पक्ष में 2 संक्रांति होती है, उसे क्षय मास कहते हैं। क्षय मास केवल **कार्तिक, मार्गशीर्ष** तथा **पौष मास** इन्हीं तीन महीनों में होता है, अन्य मासों में नहीं। जिस वर्ष क्षय मास होता है, उस वर्ष एक वर्ष के अंदर दो अधिमास होते हैं। क्षय मास जिस संवत् में होता है, **उसके 141 वर्ष या 19 वर्ष** बाद पुन: क्षय मास होना संभव होता है।

पक्ष— 15 चांद्र दिनों (तिथियों) का एक पक्ष होता है, परंतु तिथियों की क्षय वृद्धि के कारण यह कभी—कभी 13 अथवा 14 अथवा 16 दिनों का भी हो जाता है।

पक्ष दो हैं— शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष। प्रतिपदा से पूर्णमासी तक की अवधि को **शुक्लपक्ष** तथा प्रतिपदा से अमावस्या तक की अवधि को **कृष्णपक्ष** कहते हैं।

शुक्लपक्ष में चंद्रमा और सूर्य की दूरी क्रमश: बढ़ती है तथा पूर्णमासी को दोनों 180 अंश की दूरी पर होते हैं, अर्थात् शुक्लपक्ष में चंद्रमा की कलाएँ बढ़नी आरंभ होती हैं।

कृष्णपक्ष में चंद्रमा और सूर्य की दूरी क्रमश: घटती जाती है तथा अमावस्या को दोनों 0 अंश पर होते हैं अर्थात् कृष्णपक्ष में चंद्रमा की कलाएँ घटती जाती हैं।

पूर्णमासी को पूर्ण चंद्र दिखाई पड़ता है तथा अमावस्या को चंद्रमा अदृश्य रहता है। शुक्लपक्ष देवताओं का तथा कृष्णपक्ष पितरों का माना जाता है। शुक्लपक्ष को दिन तथा कृष्णपक्ष को रात्रि की संज्ञा भी दी जाती है। शुक्लपक्ष का चंद्र शुभ माना जाता है।

चंद्र मासों के नाम

चंद्र मासों के नाम नक्षत्र और पूर्णिमा तिथि के संयोग के आधार पर रखे गए हैं अर्थात् पूर्णिमा के बाद चंद्रमा जिस नक्षत्र में प्रवेश करता है उस नक्षत्र का नाम ही उस मास के नाम का आधार है। पूर्णिमा के बाद वाले जिन नक्षत्रों के नामों पर चांद्र मासों का नामकरण हुआ है, वे इस प्रकार हैं—

मास का नाम : 1. चैत्र

नक्षत्र का नाम : चित्रा

मास का नाम : 7. आश्विन

नक्षत्र का नाम : अश्विनी

मास का नाम : 2. वैशाख

नक्षत्र का नाम : विशाखा

मास का नाम : 8. कार्तिक

नक्षत्र का नाम : कृत्तिका

मास का नाम : 3. ज्येष्ठ

नक्षत्र का नाम : ज्येष्ठा

मास का नाम : 9. मार्गशीर्ष

नक्षत्र का नाम : मृगशिरा

मास का नाम : 4. आषाढ़

नक्षत्र का नाम : पूर्वाषाढ़

मास का नाम : 10. पौष

नक्षत्र का नाम : पुष्य

मास का नाम : 5. श्रावण

नक्षत्र का नाम : श्रवण

मास का नाम : 11. माघ

नक्षत्र का नाम : मघा

मास का नाम : 6. भाद्रपद

नक्षत्र का नाम : पूर्वाभाद्रपद

मास का नाम : 12. फाल्गुन

नक्षत्र का नाम : पूर्वा फाल्गुनी

चांद्र मास का आरंभ इसीलिए कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से होता है। जैसे चैत्र मास का आरंभ (फाल्गुन शुक्लपक्ष की पूर्णिमा के बाद) चित्रा नक्षत्र से होगा अर्थात् शुक्लपक्ष के बाद कृष्णपक्ष। अत: चांद्र मास का आरंभ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से होगा।

कभी—कभी मास से संबंधित नक्षत्र एक दिन आगे—पीछे भी हो सकता है परंतु ऐसे अवसर वर्ष में प्राय: तीन—चार बार ही आते हैं।

वर्ष ज्ञान : विक्रम संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होता है। पंचांगों में विभिन्न प्रकार के वर्ष का उल्लेख रहता है, जैसे शक संवत्, विक्रम संवत्, बंग संवत्, हिजरी संवत् आदि।

उक्त विभिन्न प्रकार के वर्ष आदि का संबंध निम्न प्रकार है—

शक संवत्+78 वर्ष = सन् ईसवी

विक्रम संवत्—57 वर्ष = सन् ईसवी

विक्रम संवत्—135 वर्ष = शक संवत्

सन् ईसवी—580 वर्ष = सन् हिजरी

सन् ईसवी—594 वर्ष = बँगला संवत्

हिजरी सन् : मुहर्रम की पहली तारीख से हिजरी सन् का आरंभ होता है। चाँद दिखने के दूसरे दिन महीने की पहली तारीख होती है और हिजरी सन् में अधिक मास या क्षय मास नहीं होता है तथा महीना कभी 29 दिनों का कभी 30 दिनों का चंद्र की तिथि की घटा—बढ़ी के अनुसार होता है। इसी कारण मुहर्रम कभी जाड़े में, कभी बरसात में और कभी गरमी में पड़ता है। हिजरी सन् में भी 12 माह होते हैं, जिनके नाम निम्नानुसार हैं—

1. मोहर्रम
2. सफर
3. रवि उल अव्वल
4. रवि उस्सानी
5. जमादि उल अव्वल
6. जमादि उस्सानी
7. रज्जब

8. सावान

9. रमजान

10. सव्वाल

11. जिल्काद

12. जिल्हेज

तिथि

यह पंचांग का प्रथम अंग है। तिथियाँ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनीजाती हैं।

हम जानते हैं कि सूर्य की गति से चंद्र की गति अधिक होती है। जब दोनों का अंतर बढ़ने लगता है और यह अंतर बढ़ते—बढ़ते 12 अंश हो जाता है तब एक तिथि पूर्ण हो जाती है अर्थात् जब चंद्र सूर्य की दूरी 12 अंश हो जाती है तब एक तिथि पूर्ण हो जाती है या चंद्रमा सूर्य से 12 अंश आगे हो जाता है, तब एक तिथि पूर्ण हो जाती है, अत:

0^0—12^0 = एक तिथि = प्रतिपदा

तिथियाँ शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तथा मास कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से आरंभ किया जाता है।

भचक्र में 360 अंश होते हैं, जिसे 12 से भाग करने पर कुल 30 तिथियाँ होती हैं। तिथि दिन या रात्रि में किसी समय भी बदल सकती है। पंचांग में तिथि—वार के आगे घटी—पल या घंटा—मिनट में उसका समाप्ति काल दिया रहता है।

जो तिथि एक सूर्योदय के बाद से प्रारंभ होती है और अगले सूर्योदय के पूर्व ही समाप्त हो जाती है उसे **क्षय तिथि** कहते हैं और जो तिथि दो सूर्योदय समयों में रहती है उसे वृद्धि तिथि कहते हैं। **शुभ कार्यों में वृद्धि और क्षय तिथियाँ त्याज्य होती हैं।**

तिथि अथवा वार 24 घंटे या 60 घटी के होते हैं। जब तिथि का मान 60 घटी से अधिक का होता है तो वृद्धि तिथि और जब 60 घटी से कम होता है तो क्षय तिथि होती है। जब पंचांग में एक तिथि निरंतर दो बार लिखी हो तो उसे वृद्धि तिथि समझें तथा सूर्योदय पर जो तिथि किसी भी दिन पंचांग में नहीं लिखी गई हो उसे क्षय तिथि समझना चाहिए।

इसका मुख्य कारण होता है कि दिन 24 घंटे का होता है, परंतु तिथि आदि चांद्र मास से होते हैं। एक चांद्र दिन 24 घंटा 54 मिनट का होता है, जबकि सौर दिन 24 घंटे का ही होता है। अत: सौर दिन और चांद्र दिनों में 54 मिनट अर्थात् लगभग 21/4 घटी का अंतर रहता है। इस प्रकार सूर्य तथा चंद्रमा के मानों में अंतर रहने के कारण तिथि नक्षत्र तथा योग आदि में घटना—बढ़ना होता रहता है।

तिथियों के नाम—हम जानते हैं कि तिथियों की कुल संख्या 30 मानी जाती है। इसमें 15 तिथियाँ शुक्लपक्ष की तथा 15 तिथियाँ कृष्णपक्ष की होती हैं। तिथियों के नाम क्रमानुसार इस प्रकार हैं—

तिथि : 1. प्रतिपदा

स्वामी : अग्नि

तिथि : 2. द्वितीया

स्वामी : ब्रह्मा

तिथि : 3. तृतीया

स्वामी : गौरी

तिथि : 4. चतुर्थी

स्वामी : गणेश

तिथि : 5. पंचमी

स्वामी : शेषनाग

तिथि : 6. षष्ठी

स्वामी : कार्तिकेय

तिथि : 7. सप्तमी

स्वामी : सूर्य

तिथि : 8. अष्टमी

स्वामी : शिव

तिथि : 9. नवमी

स्वामी : दुर्गा

तिथि : 10. दशमी

स्वामी : काल (यम)

तिथि : 11. एकादशी

स्वामी : विश्वेदेव

तिथि : 12. द्वादशी

स्वामी : विष्णु

तिथि : 13. त्रयोदशी

स्वामी : कामदेव

तिथि : 14. चतुर्दशी

स्वामी : शिव

तिथि : 15. अमावस्या

स्वामी : चंद्रमा

तिथि : 30. पूर्णिमा

स्वामी : पितर (कृष्णपक्ष कीअंतिम तिथि)

सभी तिथियों में द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी, पूर्णिमा तिथि (2, 3, 5, 7, 10, 11, 15) शुभ तिथि होती हैं।

तिथियों के अनुसार करने योग्य कर्म

1. प्रतिपदा— यात्रा, विवाह, प्रतिष्ठा, उपनयन, गृहारंभ, गृह—प्रवेश, शांति कार्य आदि नहीं करने चाहिए। लेकिन कुछ मुहूर्तों में शुक्ल या कृष्णपक्ष की प्रतिपदा में कुछ कार्य करने शुभ माने जाते हैं।

2. द्वितीया— आभूषण धारण, विवाह, प्रतिष्ठा, राज्य—कार्य, युद्ध, यात्रादि कार्य करना शुभ।

3. तृतीया— अन्नप्राशन, गृह—प्रवेश, संगीत, वाद्य, सीमंतोन्नयन, चूड़ा, गमन एवं द्वितीया तिथि के सभी कार्य करना शुभ।

4. चतुर्थी— दूषित कार्य, अग्नि कर्म, मारण कर्म, बंधन कृत्य, विद्युत् संबंधी कार्य, दाह—घात आदि करना शुभ।

5. पंचमी— शुभ कार्य कर सकते हैं, परंतु लेन—देन वर्जित है।

6. षष्ठी— शुभ कार्य, संग्राम, शिल्प, वस्त्राभूषण आदि करना शुभ है। यात्रा, पितृ कर्म, काष्ठ कर्म आदि वर्जित है।

7. सप्तमी— द्वितीया व तृतीया में किए जाने वाले सभी शुभ कार्य करना शुभ है।

8. अष्टमी— युद्ध, वास्तु कर्म, रत्न—परीक्षा, शस्त्र—धारण, राज्य—कार्य, लेखन आदि कार्य करना शुभ है।

9. नवमी— मद्य निर्माण, आखेट, जुआ, औषधि—कर्म आदि करना शुभ होते हैं।

10. दशमी— द्वितीया, तृतीया, पंचमी एवं सप्तमी संबंधी सभी शुभ कार्य।

11. एकादशी— व्रतोपवास, धर्म कार्य, उपनयन, गृहारंभ, देवकार्य, गमन

12. द्वादशी— धर्म—कार्य, शुभ कार्य, मांगलिक कार्य, पाणिग्रहण आदि कार्य परंतु यात्रा करना वर्जित है।

13. त्रयोदशी— दशमी तिथि के सभी शुभ कार्य।

14. चतुर्दशी— शस्त्र—धारण व युद्ध आदि कार्य करना शुभ और यात्रा करना निषेध है।

15. पूर्णमासी— यज्ञ कर्म, विवाह, शिल्प, वास्तु कार्य, देव कार्य, मंगल कार्य, भूषणादि कार्य करना शुभ है।

16. अमावस्या— पितृ कार्य, उग्र कार्य परंतु शुभ कार्य वर्जित है।

तिथियों की संज्ञाएँ

1. नंदा तिथि—1, 6, 11, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथि को नंदा तिथि कहते हैं।

2. भद्रा तिथि—2, 7, 12

3. जया तिथि—3, 8, 13

4. रिक्ता तिथि—4, 9, 14

5. पूर्णा तिथि—5, 10, 15 या 30

6. अधमा तिथियाँ—इन तिथियों में यात्रा एवं किए गए कार्य असफल होते हैं। ये तिथियाँ वार एवं तिथि के संयोग से बनती हैं।

वार तिथि

रवि व मंगल—1, 6, 11—नंदा

सोम व शुक्र—2, 7, 12—भद्रा

बुध—3, 8, 13—जया

गुरु—4, 9, 14—रिक्ता

शनि—5, 10, 15—पूर्णा

स्पष्ट है कि रविवार या मंगलवार को यदि नंदा तिथियाँ पड़ें तो यह तिथि अधमा/मृत्यु योग तिथियाँ कहलाती हैं। इनमें शुभ कार्य वर्जित है।

7. तिथि संज्ञा चक्रम

पक्ष फल

संज्ञाएँ

शुक्ल अधम

नंदा : 1

भद्रा : 2

जया : 3

रिक्ता : 4

पूर्णा : 5

शुक्ल मध्यम

नंदा : 6

भद्रा : 7

जया : 8

रिक्ता : 9

पूर्णा : 10

शुक्ल उत्तम

नंदा : 11

भद्रा : 12

जया : 13

रिक्ता : 14

पूर्णा : 15

कृष्ण उत्तम

नंदा : 1

भद्रा : 2

जया : 3

रिक्ता : 4

पूर्णा : 5

कृष्ण मध्यम

नंदा : 6

भद्रा : 7

जया : 8

रिक्ता : 9

पूर्णा : 10

कृष्ण अधम

नंदा : 11

भद्रा : 12

जया : 13

रिक्ता : 14

पूर्णा : 30

यदि किसी में अधोलिखित स्थिति हो तो उस तिथि का अशुभ दोष मिट जाता है।

तिथि संज्ञा : नंदा

तिथियाँ : 1, 4, 11

वार : शुक्र

तिथि संज्ञा : भद्रा

तिथियाँ : 2, 7, 12,

वार : बुध

तिथि संज्ञा : जया

तिथियाँ : 3, 8, 13

वार : मंगल

तिथि संज्ञा : रिक्ता

तिथियाँ : 4,9,14

वार : शनि

तिथि संज्ञा : पूर्णा

तिथियाँ : 5, 10, 15 या 30

वार : गुरु

स्पष्ट है कि किसी भी पक्ष में नंदा तिथि में शुक्रवार हो तो प्रतिपदा एवं एकादशी का अधम दोष दूर हो जाता है। इसी प्रकार अन्य तिथियों का भी अधम दोष दूर हो जाता है।

8. पक्ष रंध्र तिथियाँ—4, 6, 8, 9, 12, 14 तिथियाँ पक्ष रंध्र तिथियाँ कहलाती हैं। किसी भी प्रकार के शुभ कार्य के लिए रंध्र तिथियों के प्रारंभ की कुछ घंटियाँ त्याज्य होती हैं, जिसका विवरण इस प्रकार है—

तिथि : 4

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 8 घटी तक

तिथि : 6

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 9 घटी तक

तिथि : 8

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 14 घटी तक

तिथि : 9

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 25 घटी तक

तिथि : 12

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 10 घटी तक

: तिथि : 14

पक्ष रंध्र की त्याज्य घटियाँ : 5 घटी तक

9. मास शून्य तिथियाँ : मास शून्य तिथियों में किए गए समस्त कार्य असफल होते हैं, अत: इन्हें त्याज्य समझना चाहिए। किस मास में कौन सी तिथियाँ मास शून्य होती हैं, उनका विवरण निम्नवत् है—

मास : चैत्र

मास शून्य तिथियाँ : 8 व 9 दोनों पक्ष

मास : वैशाख

मास शून्य तिथियाँ : 12 दोनों पक्ष

मास : ज्येष्ठ

मास शून्य तिथियाँ : 13 शुक्लपक्ष, 14 कृष्णपक्ष

मास : आषाढ़

मास शून्य तिथियाँ : 7 शुक्लपक्ष, 6 कृष्णपक्ष

मास : श्रावण

मास शून्य तिथियाँ : 2 व 3 दोनों पक्ष

मास : भाद्रपद

मास शून्य तिथियाँ : 1 व 2 दोनों पक्ष

मास : आश्विन

मास शून्य तिथियाँ : 10 व 11 दोनों पक्ष

मास : कार्तिक

मास शून्य तिथियाँ : 14 शुक्लपक्ष व 5 कृष्णपक्ष

मास : मार्गशीर्ष

मास शून्य तिथियाँ : 7 व 8 दोनों पक्ष

मास : पौष

मास शून्य तिथियाँ : 4 व 5 दोनों पक्ष

मास : माघ

मास शून्य तिथियाँ : 6 शुक्लपक्ष व 5 कृष्णपक्ष

मास : फाल्गुन

मास शून्य तिथियाँ : 3, 4 शुक्लपक्ष

10. दग्ध—विषाक्त—हुताशन तिथियाँ

वार एवं तिथियों के संयोग से उक्त तिथियाँ बनती हैं। इन तिथियों में शुभ कार्यों को त्यागना ही ठीक रहता है।

वार : दग्ध—संज्ञक

रवि : 12

सोम : 11

भौम : 5

बुध : 3

गुरू : 6

शुक्र : 8

शनि : 9

वार : विषाक्त

रवि : 4

सोम : 6

भौम : 7

बुध : 2

गुरू : 8

शुक्र : 9

शनि : 7

वार : हुताशन

रवि : 12

सोम : 6

भौम : 7

बुध : 8

गुरू : 9

शुक्र : 10

शनि : 11

11. सिद्‌धा तिथियाँ : वार एवं तिथियों के संयोग से सिद्‌धा तिथियाँ बनती हैं। इन तिथियों में किए गए कार्य सिद्‌ध होते हैं। यात्रा के लिए सिद्‌धा तिथियाँ विशेष शुभ मानी जाती हैं।

वार : मंगलवार

तिथि : 3, 8, 13—जया

वार : बुधवार

तिथि : 2, 7, 12,—भद्रा

वार : गुरुवार

तिथि : 5, 10, 15—पूर्णा

वार : शुक्रवार

तिथि : 1, 6, 11—नंदा

वार : शनिवार

तिथि : 4, 9, 14—रिक्ता

अर्थात् यदि मंगलवार को जया तिथियाँ 3, 8, 13 तिथि हो तो यह तिथि सिद्धा तिथि—समस्त कार्य बनानेवाली होती है। इस प्रकार अन्य तिथियों को भी समझें।

12. अमृत तिथियाँ : अमृत तिथियाँ भी वार एवं तिथियों के संयोग से बनती हैं। ये तिथियाँ शुभ कार्य के लिए प्रशस्त मानी गई हैं। तथा यात्रा करने के लिए फलप्रद होती हैं।

वार : रवि व सोम

तिथि : 5, 10, 15

पूर्णा

वार : मंगल

तिथि : 2, 7, 12,

भद्रा

वार : गुरु

तिथि : 3, 8, 13

जया

वार : शुक्र

तिथि : 4, 9, 14

रिक्ता

वार : बुध व शनि

तिथि : 1, 6, 11

नंदा

यदि रविवार को 5, 10, 15 आदि तिथि हो तो अमृत तिथि होने के कारण उक्त तिथि शुभ कार्य के लिए प्रशस्त मानी गई है।

13. मन्वादि तिथियाँ एवं युगादि तिथियाँ : मन्वादि तिथियों में एक—एक मन्वंतर का प्रारंभ होता है, अत: ये मांगलिक कार्यों में वर्जित मानी गई हैं।

कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की नवमी को **सत्ययुग** बैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीय को **त्रेतायुग,** भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को **द्वापरयुग** तथा माघ मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या को **कलियुग** का प्रारंभ हुआ है। इसीलिए ये तिथियाँ युगादि तिथियाँ कहलाती हैं। इनमें भी मांगलिक कार्य वर्जित है। मन्वादि—युगादि चक्र इस प्रकार हैं—

चैत्र—शुक्ल 3, 15—मन्वादि

वैशाख—शुक्ल 3—युगादि

ज्येष्ठ—शुक्ल 15—मन्वादि

आषाढ़—शुक्ल 10, 15—मन्वादि

श्रावण—शुक्ल 8—मन्वादि

भाद्रपद—शुक्ल 3 मन्वादि कृष्ण—13—युगादि

आश्विन—शुक्ल 7 मन्वादि—.........

कार्तिक—शुक्ल 12, 15 मन्वादि शुक्ल—9—युगादि

मार्गशीर्ष—.........—.........

पौष—शुक्ल 11—मन्वादि—.........

माघ—शुक्ल 7 मन्वादि कृष्ण—30—युगादि

फाल्गुन—शुक्ल 15 मन्वादि—.........

अमावस्या के तीन भेद

1. सिनीवली : जिस अमावस्या को चंद्रकला दृश्य हो, अर्थात् जो प्रात: से रात्रि—पर्यंत रहे।

2. कुहू : जिस अमावस्या में चंद्र कला दृश्य नहीं हो, अर्थात् प्रतिपदा से विद्ध हो।

3. दर्श : जिस अमावस्या में चंद्र कला कृष्णपक्ष चतुर्दशी से विद्ध हो।

पूर्णिमा के दो भेद

1. अनुमति : चतुर्दशी से युक्त पूर्णिमा

2. राका : प्रतिपदा से युक्त पूर्णिमा।

वार

यह पंचांग का दूसरा अंग है। पंचांग में तिथि के पास वार लिखा रहता है। भारतीय ज्योतिष—शास्त्र में सात वार माने गए हैं, जिनका क्रम इस प्रकार है—सूर्यवार/रविवार/आदित्यवार, चंद्रवार/सोमवार, मंगलवार/भौमवार, बुधवार, गुरुवार/बृहस्पतिवार, शुक्रवार तथा शनिवार।

अब प्रश्न यह उठता है कि वारों का क्रम इस प्रकार क्यों है?

जैसा कि हम जानते हैं कि आकाशमंडल में शनि, गुरु, मंगल, रवि, शुक्र, बुध तथा चंद्रमा इन सात ग्रहों की कक्षाएँ एक—दूसरे से नीचे हैं।

हम जानते हैं कि एक दिन में 24 होराएँ होती हैं, अर्थात् प्रत्येक होरा एक घंटे के बराबर होती है। इस होरा को Hour (घंटा) भी कहते हैं।

विद्वानों ने प्रलय के बाद जब सूर्य उदय हुआ तो प्रथम होरा सूर्य की मानी और फिर उसके बाद शुक्र की मानी, जो उसके निकटवर्ती ग्रह है, तृतीय होरा बुध की, चतुर्थ होरा चंद्रमा की, पंचम होरा शनि की, षष्ठ होरा गुरु तथा सप्तम होरा मंगल की हुई तथा फिर आठवीं होरा सूर्य की। इस प्रकार होरा का यह क्रम चलता रहता है।

अर्थात्

1—होरा—सूर्य—15—सूर्य

8—होरा—सूर्य—22—सूर्य

23वीं होरा शुक्र की, 24वीं होरा बुध की हुई।

इस प्रकार रविवार को 24 घंटे बाद बुध की होरा समाप्त हुई तथा रविवार के दूसरे दिन को पहली होरा का स्वामी चंद्र हुआ, अत: रविवार के दूसरे दिन का वार चंद्रवार हुआ। इसी प्रकार क्रम से चलने पर 22वीं होरा चंद्र की, 23वीं होरा शनि की तथा 24वीं होरा गुरु की हुई, फिर अगले दिन मंगल की प्रथम होरा से दिन का प्रारंभ हुआ, जिसके कारण इस दिन का वार मंगलवार हुआ। इस प्रकार जिस वार की प्रथम होरा का स्वामी जो ग्रह हुआ, उस वार का नाम उसी ग्रह के आधार पर रखा गया।

सर्वकार्य सिद्धि होरा मुहूर्त : पंचांग से स्थानीय सूर्योदय ज्ञात कर तदुपरांत होरा चक्रम के क्रमानुसार प्रत्येक होरा (घंटा) पर ग्रह का प्रभाव जानकर शुभाशुभ होरा ज्ञात कर लेना चाहिए। तदुपरांत होरा फल चक्रम से फल ज्ञात कर लेना चाहिए। शत्रु होरा में शुभ कार्य नहीं करने चाहिए। अशुभ दिन में भी शुभ होरा सुअवसर प्रदान करती है।

सूर्य की होरा—राजसेवा व राजकीय कार्यों के लिए शुभ है।

चंद्र की होरा—सर्वकार्य सिद्धि के लिए शुभ है।

मंगल की होरा—युद्ध, कलह, विवाद, परिश्रम

बुध की होरा—ज्ञानार्जन, स्वास्थ्य, लेखन

गुरु की होरा—विवाह, शुभ कार्य के लिए

शुक्र की होरा—प्रवास, यात्रा के लिए

शनि की होरा—द्रव्य—संग्रह के लिए।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जन्म राशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा में शुभ कार्य नहीं करने चाहिए।

सौम्य संज्ञक वार : सोमवार, बुधवार, गुरुवार तथा शुक्रवार—ये चारों वार सौम्य संज्ञक वार हैं। इन वारों में शुभ कार्य करने चाहिए।

क्रूर संज्ञक वार : रविवार, मंगलवार तथा शनिवार ये तीनों वार क्रूर संज्ञक वार हैं। इनमें अशुभ या क्रूर कर्म करने चाहिए।

होरा चक्रम

तिथि, वार तथा नक्षत्र के संयोग से भिन्न प्रकार के योगों का निर्माण होता है। इनमें से कुछ योग तथा कुछ अशुभ योग बनते हैं। शुभ योगों में मुख्य अमृत सिद्धि योग: सर्वार्थ सिद्धि योग बनते हैं, जिनका विवरण

पंचांग में दिया रहता है।

अशुभ योगों में मृत्यु योग, क्रकच योग, यमघंट योग, दंष्ट्र योग आदि बनते हैं, जिनका विवरण पंचांग में दिया रहता है।

रवि : 1. सूर्य

सोम : चंद्र

मंगल : भौम

बुध : बुध

गुरु : गुरु

शुक्र : शुक्र

शनि : शनि

रवि : 2. शुक्र

सोम : शनि

मंगल : सूर्य

बुध : चंद्र

गुरु : भौम

शुक्र : बुध

शनि : गुरु

रवि : 3. बुध

सोम : गुरु

मंगल : शुक्र

बुध : शनि

गुरु : सूर्य

शुक्र : चंद्र

शनि : भौम

रवि : 4. चंद्र

सोम : भौम

मंगल : बुध

बुध : गुरु

गुरु : शुक्र

शुक्र : शनि

शनि : सूर्य

रवि : 5. शनि

सोम : सूर्य

मंगल : चंद्र

बुध : भौम

गुरु : बुध

शुक्र : गुरु

शनि : शुक्र

रवि : 6. गुरु

सोम : शुक्र

मंगल : शनि

बुध : सूर्य

गुरु : चंद्र

शुक्र : भौम

शनि : बुध

रवि : 7. भौम

सोम : बुध

मंगल : गुरु

बुध : शुक्र

गुरु : शनि

शुक्र : सूर्य

शनि : चंद्र

रवि : 8. सूर्य

सोम : चंद्र

मंगल : भौम

बुध : बुध

गुरु : गुरु

शुक्र : शुक्र

शनि : शनि

रवि : 9. शुक्र

सोम : शनि

मंगल : सूर्य

बुध : चंद्र

गुरु : भौम

शुक्र : बुध

शनि : गुरु

रवि : 10. बुध

सोम : गुरु

मंगल : शुक्र

बुध : शनि

गुरु : सूर्य

शुक्र : चंद्र

शनि : भौम

रवि : 11. चंद्र

सोम : भौम

मंगल : बुध

बुध : गुरु

गुरु : शुक्र

शुक्र : शनि

शनि : सूर्य

रवि : 12. शनि

सोम : सूर्य

मंगल : चंद्र

बुध : भौम

गुरु : बुध

शुक्र : गुरु

शनि : शुक्र

रवि : 13. गुरु

सोम : शुक्र

मंगल : शनि

बुध : सूर्य

गुरु : चंद्र

शुक्र : भौम

शनि : बुध

रवि : 14. भौम

सोम : बुध

मंगल : गुरु

बुध : शुक्र

गुरु : शनि

शुक्र : सूर्य

शनि : चंद्र

रवि : 15. सूर्य

सोम : चंद्र

मंगल : भौम

बुध : बुध

गुरु : गुरु

शुक्र : शुक्र

शनि : शनि

रवि : 16. शुक्र

सोम : शनि

मंगल : सूर्य

बुध : चंद्र

गुरु : भौम

शुक्र : बुध

शनि : गुरु

रवि : 17. बुध

सोम : गुरु

मंगल : शुक्र

बुध : शनि

गुरु : सूर्य

शुक्र : चंद्र

शनि : भौम

रवि : 18. चंद्र

सोम : भौम

मंगल : बुध

बुध : गुरु

गुरु : शुक्र

शुक्र : शनि

शनि : सूर्य

रवि : 19. शनि

सोम : सूर्य

मंगल : चंद्र

बुध : भौम

गुरु : बुध

शुक्र : गुरु

शनि : शुक्र

रवि : 20. गुरु

सोम : शुक्र

मंगल : शनि

बुध : सूर्य

गुरु : चंद्र

शुक्र : भौम

शनि : बुध

रवि : 21. भौम

सोम : बुध

मंगल : गुरु

बुध : शुक्र

गुरु : शनि

शुक्र : सूर्य

शनि : चंद्र

रवि : 22. सूर्य

सोम : चंद्र

मंगल : भौम

बुध : बुध

गुरु : गुरु

शुक्र : शुक्र

शनि : शनि

रवि : 23. शुक्र

सोम : शनि

मंगल : सूर्य

बुध : चंद्र

गुरु : भौम

शुक्र : बुध

शनि : गुरु

रवि : 24. बुध

सोम : गुरु

मंगल : शुक्र

बुध : शनि

गुरु : सूर्य

शुक्र : चंद्र

शनि : भौम

होरा फल चक्रम

राशि : 1

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु

अशुभ होरा : बुध

सामान्य होरा : शुक्र, शनि

राशि : 2

शुभ होरा : बुध, शुक्र, शनि

अशुभ होरा : सूर्य, चंद्र

सामान्य होरा : भौम, गुरु

राशि : 3

शुभ होरा : सूर्य, बुध, शुक्र

अशुभ होरा : चंद्र

सामान्य होरा : भौम, गुरु, शनि

राशि : 4

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, बुध

अशुभ होरा : भौम, गुरु, शुक्र, शनि

सामान्य होरा : ———

राशि : 5

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु

अशुभ होरा : शुक्र, शनि

सामान्य होरा : बुध

राशि : 6

शुभ होरा : सूर्य, बुध, शुक्र

अशुभ होरा : चंद्र

सामान्य होरा : भौम, गुरु, शनि

राशि : 7

शुभ होरा : बुध, शुक्र, शनि

अशुभ होरा : सूर्य, चंद्र

सामान्य होरा : भौम, गुरु

राशि : 8

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु

अशुभ होरा : बुध

सामान्य होरा : शुक्र, शनि

राशि : 9

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु

अशुभ होरा : बुध, शुक्र

सामान्य होरा : शनि

राशि : 10

शुभ होरा : बुध, शुक्र, शनि

अशुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम

सामान्य होरा : गुरु

राशि : 11

शुभ होरा : बुध, शुक्र, शनि

अशुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम

सामान्य होरा : गुरु

राशि : 12

शुभ होरा : सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु

अशुभ होरा : बुध, शुक्र

सामान्य होरा : शनि

रविवार— स्थिर—गुरुवार—लघु
सोमवार— चर—शुक्रवार—मृदु
भौमवार— उग्र—शनिवार—तीक्ष्ण
बुधवार— सम

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक 'वार' रहता है अर्थात् नए वार का प्रवेश सूर्योदय से होता है। अंग्रेजी पद्धति में 'तारीख' तथा वार की प्रवृत्ति रात्रि के 12 बजे के बाद से मानी जाती है।

नक्षत्र संज्ञा

'नक्षत्र' शब्द संस्कृत भाषा का है, जिसका अर्थ है—न हिलनेवाला अथवा न चलनेवाला अर्थात् न क्षरति, न सरति इति नक्षत्र:।

आकाशमंडल में अनेक ताराओं के समूह द्वारा जो विभिन्न प्रकार की आकृतियाँ बनती हैं। उन आकृतियों अर्थात् ताराओं के समूह को नक्षत्र कहा जाता है। जिस प्रकार पृथ्वी पर स्थान की दूरी किलोमीटर से नापी जाती है, उसी प्रकार आकाशमंडल की दूरी को नक्षत्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है। इस भाँति नक्षत्रों को आकाशमंडल के दूरी—सूचक स्तंभ भी कह सकते हैं।

अंग्रेजी भाषा में नक्षत्र को Constellation, अरबी भाषा में मनाजिल तथा चीनी भाषा में Sieou कहते हैं।

संपूर्ण आकाशमंडल 27 नक्षत्रों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाग का एक नाम उसमें स्थित तारा समूह की आकृति के आधार पर रख दिया गया है। राशि पथ (Zodiac) अंडाकार वृत्त—सा है। इसमें वृत्त के 360 अंश हैं, जिसको 27 भागों में यदि बाँट दें तो प्रत्येक भाग 13 20' का होगा। इस प्रकार 13 20' के भाग को नक्षत्र कहते हैं, अर्थात् एक नक्षत्र का मान 13 20' हुआ। हम जानते हैं कि प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, अत: अब 13 20' को यदि चार भागों में बाँटा जाए तो प्रत्येक चरण का मान 3 20' आता है।

इस प्रकार प्रत्येक नक्षत्र का मान 13 20' हुआ तथा प्रत्येक चरण का मान 3 20' हुआ।

अब हम नक्षत्रों को दूरी के संदर्भ में समझते हैं। हम जानते हैं कि आकाश मंडल में दूरी को नक्षत्रों द्वारा ज्ञात किया जाता है तथा प्रत्येक नक्षत्र का मान 13 20' है। अत: जब चंद्रमा सूर्य से 13 20' की दूरी पर हो

तो एक नक्षत्र होता है। प्रत्येक नक्षत्र 13 20' का है अर्थात् 60 घटी का होता है।

नक्षत्रों की कुल संख्या 27 होती है, परंतु अभिजित् नामक एक 28वाँ नक्षत्र भी मान्य है। यह उत्तराषाढ़ा नक्षत्र की अंतिम 15 घटी तथा श्रवण नक्षत्र के प्रारंभ की 4 घटी—इस प्रकार कुल 19 घटियों के मानवाला अभिजित् नक्षत्र माना गया है। अभिजित् नक्षत्र सभी शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त कहा गया है। अभिजित् नक्षत्र के स्वामी ब्रह्माजी हैं।

इस प्रकार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र 45 घटी का तथा श्रवण नक्षत्र 56 घटी का रह जाता है।

नक्षत्र चक्र

नाम नक्षत्र : 1. अश्विनी

स्वामी नक्षत्र : अश्विनी कुमार

स्वामी ग्रह : केतु

रूप : घोड़ा मुख

वृक्ष : कुचिला

गुण : तमो

चरणाक्षर : चू, चे,चो, ला

मास नाम : आश्विन 7

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : क्षिप

नाम नक्षत्र : 2. भरणी

स्वामी नक्षत्र : काल

स्वामी ग्रह : शुक्र

रूप : भव

वृक्ष : आँवला

गुण : रजो

चरणाक्षर : ली,लू,ले,लो

मास नाम :

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : उग्र

नाम नक्षत्र : 3. कृत्तिका

स्वामी नक्षत्र : अग्नि

स्वामी ग्रह : सूर्य

रूप : धुरी

वृक्ष : गूलर

गुण : रजो

चरणाक्षर : अ,इ,उ,ए

मास नाम : कार्तिक 8

तारों की संख्या : 6

संज्ञा : मिश्र

नाम नक्षत्र : 4. रोहिणी

स्वामी नक्षत्र : ब्रह्मा

स्वामी ग्रह : चंद्र

रूप : गाड़ी

वृक्ष : जामुन

गुण : रजो

चरणाक्षर : ओ, वा,बी,बू

मास नाम :

तारों की संख्या : 5

संज्ञा : ध्रुव

नाम नक्षत्र : 5. मृगशिरा

स्वामी नक्षत्र : चंद्रमा

स्वामी ग्रह : भौम

रूप : हरिण मुख

वृक्ष : खैर

गुण : तमो

चरणाक्षर : बे, बो,का,की

मास नाम : मार्गशीर्ष 9

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : मृदु

नाम नक्षत्र : 6. आर्द्रा

स्वामी नक्षत्र : रुद्र

स्वामी ग्रह : राहु

रूप : मणि

वृक्ष : शीशम

गुण : तमो

चरणाक्षर : कू, घ, ङ,छ

मास नाम :

तारों की संख्या : 1

संज्ञा : तीक्ष्ण

नाम नक्षत्र : 7. पुनर्वसु

स्वामी नक्षत्र : अदिति

स्वामी ग्रह : गुरु

रूप : मकान

वृक्ष : बाँस

गुण : सतो

चरणाक्षर : के, को,ह,ही

मास नाम :

तारों की संख्या : 4

संज्ञा : चर

नाम नक्षत्र : 8. पुष्य

स्वामी नक्षत्र : बृहस्पति

स्वामी ग्रह : शनि

रूप : बाण

वृक्ष : पीपल

गुण : तमो

चरणाक्षर : हू, हे,हो,डा

मास नाम : पौष 10

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : लघु

नाम नक्षत्र : 9. आश्लेषा

स्वामी नक्षत्र : सर्प

स्वामी ग्रह : बुध

रूप : चक्र

वृक्ष : नाग केसर

गुण : सतो

चरणाक्षर : डी, डू,डे,डो

मास नाम :

तारों की संख्या : 5

संज्ञा : तीक्ष्ण

नाम नक्षत्र : 10. मघा

स्वामी नक्षत्र : पितर

स्वामी ग्रह : केतु

रूप : घर

वृक्ष : बरगद

गुण : तमो

चरणाक्षर : मा,मी,मे,मे

मास नाम : माघ 11

तारों की संख्या : 5

संज्ञा : उग्र

नाम नक्षत्र : 11. पू. फाल्गुनी

स्वामी नक्षत्र : भग

स्वामी ग्रह : शुक्र

रूप : मचान

वृक्ष : पलाश

गुण : रजो

चरणाक्षर : मे,टा,टी,टू

मास नाम : फाल्गुन 12

तारों की संख्या : 2

संज्ञा : उग्र

नाम नक्षत्र : 12. उ. फाल्गुनी

स्वामी नक्षत्र : आर्य्यमा

स्वामी ग्रह : सूर्य

रूप : शय्या

वृक्ष : रुद्राक्ष

गुण : रजो

चरणाक्षर : टे,टो,पा,पी

मास नाम :

तारों की संख्या : 2

संज्ञा : ध्रुव

नाम नक्षत्र : 13. हस्ति

स्वामी नक्षत्र : सूर्य

स्वामी ग्रह : चंद्र

रूप : हाथ

वृक्ष : रीठा

गुण : रजो

चरणाक्षर : पू,ष,ण,ठ

मास नाम :

तारों की संख्या : 5

संज्ञा : लघु

नाम नक्षत्र : 14. चित्रा

स्वामी नक्षत्र : विश्वकर्मा

स्वामी ग्रह : भौम

रूप : मोती

वृक्ष : बेल

गुण : तमो

चरणाक्षर : पे,पो,रा,री

मास नाम : चैत्र 1

तारों की संख्या : 1

संज्ञा : मृदु

नाम नक्षत्र : 15. स्वाति

स्वामी नक्षत्र : वायु

स्वामी ग्रह : राहु

रूप : मूँगा

वृक्ष : अर्जुन

गुण : तमो

चरणाक्षर : रु,रे,री,ता

मास नाम :

तारों की संख्या : 1

संज्ञा : चर

नाम नक्षत्र : 16. विशाखा

स्वामी नक्षत्र : शक्राग्नि

स्वामी ग्रह : गुरु

रूप : तोरण

वृक्ष : विकंत

गुण : सतो

चरणाक्षर : ती,तू,ते,तो

मास नाम : वैशाख 2

तारों की संख्या : 4

संज्ञा : मिश्र

नाम नक्षत्र : 17. अनुराधा

स्वामी नक्षत्र : मित्र

स्वामी ग्रह : शनि

रूप : भातबलि

वृक्ष : मौलश्री

गुण : तमो

चरणाक्षर : ना,नी,नू,ने

मास नाम :

तारों की संख्या : 4

संज्ञा : मृदु

नाम नक्षत्र : 18. ज्येष्ठा

स्वामी नक्षत्र : इंद्र

स्वामी ग्रह : बुध

रूप : कुंडल

वृक्ष : चीड़

गुण : सतो

चरणाक्षर : नो,य,यी,यू

मास नाम : ज्येष्ठ 3

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : तीक्ष्ण

नाम नक्षत्र : 19. मूल

स्वामी नक्षत्र : राक्षस

स्वामी ग्रह : केतू

रूप : सिंह पुच्छ

वृक्ष : साल

गुण : तमो

चरणाक्षर : ये,यो,भा,भी

मास नाम :

तारों की संख्या : 11

संज्ञा : तीक्ष्ण

नाम नक्षत्र : 20. पूर्वाषाढ़

स्वामी नक्षत्र : जल

स्वामी ग्रह : शुक्र

रूप : हाथी दाँत

वृक्ष : अशोक

गुण : रजो

चरणाक्षर : भू,धा,फा,ढा

मास नाम : आषाढ़ 4

तारों की संख्या : 2

संज्ञा : उग्र

नाम नक्षत्र : 21. उत्तराषाढ़

स्वामी नक्षत्र : विश्वेदेव

स्वामी ग्रह : सूर्य

रूप : मचान

वृक्ष : कटहल

गुण : रजो

चरणाक्षर : भे, भो,जा,जी

मास नाम :

तारों की संख्या : 2

संज्ञा : ध्रुव

नाम नक्षत्र : 22. श्रवण

स्वामी नक्षत्र : विष्णु

स्वामी ग्रह : चंद्र

रूप : वामन

वृक्ष : आक

गुण : रजो

चरणाक्षर : खी,खू,खे,खो

मास नाम : श्रावण 5

तारों की संख्या : 3

संज्ञा : चर

नाम नक्षत्र : 23. धनिष्ठा

स्वामी नक्षत्र : वसु

स्वामी ग्रह : भौम

रूप : मृदंग

वृक्ष : शमी

गुण : तमो

चरणाक्षर : गा,गी,गू,गे

मास नाम :

तारों की संख्या : 4

संज्ञा : चर

नाम नक्षत्र : 24. शतभिष

स्वामी नक्षत्र : वरुण

स्वामी ग्रह : राहु

रूप : वृत्त

वृक्ष : कदंब

गुण : तमो

चरणाक्षर : गो,सा,सी,सू

मास नाम :

तारों की संख्या : 100

संज्ञा : चर

नाम नक्षत्र : 25. पू.भाद्रपद

स्वामी नक्षत्र : अजैकपाद

स्वामी ग्रह : गुरु

रूप : मंच

वृक्ष : आम

गुण : सतो

चरणाक्षर : से,सो,दा,दी

मास नाम : भाद्रपद 6

तारों की संख्या : 2

संज्ञा : उग्र

नाम नक्षत्र : 26. उ.भाद्रपद

स्वामी नक्षत्र : अहिर्बुधन्य

स्वामी ग्रह : शनि

रूप : थमल

वृक्ष : नीम

गुण : तमो

चरणाक्षर : दू,थ,झ,ज

मास नाम :

तारों की संख्या : 12

संज्ञा : ध्रुव

नाम नक्षत्र : 27. रेवती

स्वामी नक्षत्र : पूषा

स्वामी ग्रह : बुध

रूप : मृदंग

वृक्ष : महुआ

गुण : सतो

चरणाक्षर : दे,दो,चा,ची

मास नाम :

तारों की संख्या : 32

संज्ञा : मृदु

अभिजित् नक्षत्र—स्वामी नक्षत्र—ब्रह्मा, लघु संज्ञक है।
रूप—त्रिकोण
चरणाक्षर—जू,जे,जो,खा
तारों की संख्या—3
अभिजित् नक्षत्र उत्तराषाढ़ा एवं श्रवण नक्षत्र के बीच 19 घटी का होता है।

नाक्षत्र वर्ष : बारह नक्षत्र मास का एक नाक्षत्र वर्ष होता है। चंद्रमा 27 नक्षत्रों में एक बार पूरा घूम लेता है तो एक नाक्षत्र मास होता है। इसमें इसको लगभग 27 दिन 7 घंटे, 43 मिनट, 8 सेकंड लगते हैं। इस प्रकार एक नाक्षत्र वर्ष में लगभग 324 दिन होते हैं।

नक्षत्रों में कौन ग्रह कितने दिन रहता है

चंद्र—1 दिन = सूर्य—14 दिन = राहु—240 दिन
बुध—8 या 9 दिन = भौम—20 दिन = शनि—400 दिन
शुक्र—11 दिन = गुरु—160 दिन

राशि और नक्षत्र

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : अश्विनी—4

मान : 0^{o}130—20’

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : भरणी—4

मान : 13^{o}—20—26^{o}40’

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : कृत्तिका—1

मान : 26^{o}—40&30—00

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : कृत्तिका—1

मान : 30^{o}00—40^{o}00

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : रोहिणी—4

मान : 40^{o}00—53^{o}20’

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : मृगशिरा—2

मान : 53^{o}20’—60^{o}00’

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : मृगशिरा—2

मान : 60^{o}00’—66^{o}40’

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : आर्द्रा—4

मान : 66^{o}40’—80^{o}00’

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : पुनर्वसु—5

मान : 80°00'—90°00'

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : पुनर्वसु—1

मान : 90°00'—93°20'

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : पुष्य—4

मान : 93°20'—106°40'

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : आश्लेषा—4

मान : 106°40'—120°00'

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : मघा—4

मान : 120°00'—133°20'

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : पू. फाल्गुनी—4

मान : 133°20'—146°40'

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : उ. फाल्गुनी—1

मान : 146°40'—150°00'

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : उ. फाल्गुनी—3

मान : 150°00—160°00'

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : हस्त—4

मान : 160°00—173°20’

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : चित्रा—2

मान : 173°20’—180°00’

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : चित्रा—2

मान : 180°00’—186°40’

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : स्वाति—4

मान : 186°40’—200°00’

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : विशाखा—3

मान : 200°00’—210°00’

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : विशाखा—1

मान : 210°00’—213°20’

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : अनुराधा—4

मान : 213°20’—226°40’

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : ज्येष्ठा—4

मान : 226°40’—240°00’

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : मूल—4

मान : $240^{o}00'$—$253^{o}20'$

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : पूर्वाषाढ़—4

मान : $253^{o}20'$—$266^{o}40'$

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : उत्तराषाढ़—1

मान : $266^{o}40'$—$270^{o}00'$

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : उत्तराषाढ़—3

मान : $270^{o}00'$—$280^{o}00'$

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : श्रवण—4

मान : $280^{o}00'$—$293^{o}20'$

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : धनिष्ठा—2

मान : $293^{o}20'$—$300^{o}00'$

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : धनिष्ठा—2

मान : $300^{o}00'$—$306^{o}40'$

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : शतभिष—4

मान : $306^{o}40'$—$320^{o}00'$

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद—3

मान : $320^o00'—330^o00'$

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद—1

मान : $330^o00'—333^o20'$

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : उत्तरा भाद्रपद—4

मान : $333^o20'—346^o40'$

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : रेवती—4

मान : $346^o40'—360^o00'$

गंडांत योग : अश्विनी, मघा तथा मूल—इन नक्षत्रों के प्रारंभ की 2 घड़ी तथा आश्लेषा, ज्येष्ठा और रेवती—इन नक्षत्रों के अंत की 2 घड़ी—इस प्रकार 4 घड़ी को 'गंडांत योग' होता है। इसमें सभी प्रकार के शुभ कार्य वर्जित हैं।

उक्त से स्पष्ट है कि तीन ऐसे स्थान राशि पथ में आते हैं, जहाँ राशि और नक्षत्र दोनों साथ ही समाप्त हो जाते हैं—**पहला** स्थान है **कर्क** राशि का अंतिम भाग, जहाँ **कर्क राशि और आश्लेषा नक्षत्र समाप्त होते हैं।**

दूसरा स्थान है **वृश्चिक राशि** का अंत, जहाँ **ज्येष्ठा नक्षत्र और वृश्चिक राशि** समाप्त होते हैं। तीसरा स्थान है **मीन राशि** का अंत, जहाँ **रेवती नक्षत्र और मीन राशि** समाप्त होते हैं।

इस प्रकार जहाँ राशि और नक्षत्र दोनों की समाप्ति एक साथ होती है, उसे **गंड** कहते हैं। ये स्थान जीवन और स्वास्थ्य दोनों के लिए हानिप्रद माने गए हैं।

गंड मूल नक्षत्र

अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल एवं रेवती नामक छह नक्षत्र **गंड मूल नक्षत्र** कहलाते हैं। यदि जन्म के समय चंद्रमा उक्त छह नक्षत्रों में से किसी नक्षत्र में हो तो उसका फल निम्नानुसार होगा—

नक्षत्र : अश्विनी

प्रथम चरण : पिता को कष्ट

द्वितीय चरण : ऐश्वर्यवान्

तृतीय चरण : उच्च पद प्राप्ति

चतुर्थ चरण : राज्य—सम्मान

नक्षत्र : आश्लेषा

प्रथम चरण : शांति का शुभ

द्वितीय चरण : धन—हानि

तृतीय चरण : माता को कष्ट

चतुर्थ चरण : पिता को कष्ट

नक्षत्र : मघा

प्रथम चरण : माता को कष्ट

द्वितीय चरण : पिता को कष्ट

तृतीय चरण : सुख—समृद्धि

चतुर्थ चरण : शुभ

नक्षत्र : ज्येष्ठा

प्रथम चरण : भाई को कष्ट

द्वितीय चरण : अनुज को कष्ट

तृतीय चरण : माता को कष्ट

चतुर्थ चरण : स्वयं को कष्ट

नक्षत्र : मूल

प्रथम चरण : पिता को कष्ट

द्वितीय चरण : माता को कष्ट

तृतीय चरण : धन—हानि

चतुर्थ चरण : शांति से शुभ

नक्षत्र : रेवती

प्रथम चरण : राज्य—लाभ

द्वितीय चरण : उच्च पद प्राप्ति

तृतीय चरण : धन—लाभ

चतुर्थ चरण : कष्टकारी

उक्त गंड मूल नक्षत्र में जन्म होने पर 27 दिनों के पश्चात् जब वहीं नक्षत्र आता है, तब उसकी शांति कराई जाती है।

1. शुभ नक्षत्र (15):अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, पुनर्वसु, उ. फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, उ. भाद्रपद, रेवती। **इसमें सर्वकार्य सिद्ध अर्थात् शुभ होते हैं।**

2. मध्यम नक्षत्र (8):आर्द्रा, पू. फाल्गुनी, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, शतभिष, पूर्वाभाद्रपद
इसमें मध्यम/साधारण कार्य करना चाहिए।

3. अशुभ नक्षत्र (4):भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, मघा—इन चार नक्षत्रों में शुभ कार्य नहीं करना चाहिए।
इन नक्षत्रों में उग्र एवं दुष्ट कार्य करना हितकर्है।

नक्षत्र की आँखें : कुछ नक्षत्र कम देखते हैं और कुछ नक्षत्र ठीक ज्योति वाले होते हैं। नक्षत्रों का इस प्रकार का वर्गीकरण वस्तुओं की चोरी के प्रश्न में उपयोगी होता है।

सूत्र यह है कि जिस दिन चोरी हुई है उस दिन कौन सा नक्षत्र है। यदि उस दिन सुलोचन नक्षत्र अर्थात् पूरा ठीक देखनेवाले नक्षत्रों में से कोई नक्षत्र हो तो चोरी गई हुई वस्तु नहीं मिलती। यदि अन्य किसी प्रकार का नक्षत्र उस दिन हो तो चुराई गई वस्तु प्रयत्न से मिल जाती है। सुलोचन नक्षत्र में संभवतया चोरी वस्तु इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि पूर्ण प्रकाश में चौर्य क्रिया अधिक गति और सफलता से हो जाती है।

1. अंध नक्षत्र:रोहिणी, पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा, रेवती।

उक्त सात नक्षत्र अंध नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में खोई वस्तु शीघ्र मिल जाती है।

2. मंद लोचन नक्षत्र:अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, शतभिष, आश्लेषा।

उक्त सात नक्षत्र मंद लोचन नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में खोई वस्तु प्रयास करने पर मिल जाती है

3. मध्य लोचन नक्षत्र:भरणी, आर्द्रा, मघा, चित्रा, ज्येष्ठा, पूर्वा भाद्रपद— उक्त छह नक्षत्र मध्य लोचन नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में खोई वस्तु का पता नहीं चलता है।

4. सुलोचन नक्षत्र:कृत्तिका, पुनर्वसु, पूर्वाफाल्गुनी, स्वाती, मूल, श्रवण और उत्तरा भाद्रपद उक्त सात नक्षत्र सुलोचन नक्षत्र कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में खोई या चोरी गई वस्तु प्रयास करने पर भी प्राप्त नहीं हो पाती है।

नक्षत्रों का वर्ण (Caste)

1. ब्राह्मण:कृत्तिका, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वा भाद्रपद

2. क्षत्रिय:पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ और उत्तरा भाद्रपद

3. वैश्य:अश्विनी, मघा, अनुराधा और रेवती

4. उग्र जातियाँ:मृगशिरा, चित्रा, ज्येष्ठा और धनिष्ठा

5. चांडाल:भरणी, आश्लेषा, विशाखा और श्रवण

गुण विचार

1. सतोगुण (6):पुनर्वसु, आश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वा भाद्रपद और रेवती

2. रजोगुण (9):भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण

3. तमोगुण (12):अश्विनी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुष्य, मघा, चित्रा, स्वाती, अनुराधा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा और उत्तर भाद्रपद

पुष्य नक्षत्र

पुष्य नक्षत्र कर्क राशि में 3°20' से 16°40' तक विचरण करता है, इसका स्वामी नक्षत्र बृहस्पति तथा स्वामी ग्रह शनि है तथा वृक्षों में यह पीपल को दरशाता है। गुण में यह तमोगुणी है तथा पौष माह (10वाँ माह) का भी प्रतिनिधित्वकरता है।

जिस प्रकार चतुष्पादों में सबसे बलवान् सिंह होता है, उसी प्रकार समस्त नक्षत्रों में बलवान् नक्षत्र पुष्य होता है। यह सभी प्रकार के दोषों को दूर करता है। किसी भी प्रकार के दोष एवं अशुभ का परिहार पुष्य नक्षत्र से हो जाता है। गोचर में 4, 8, 12वाँ चंद्र अनिष्टकारी होने पर भी पुष्य नक्षत्र में होने पर कार्य सिद्ध कराता है।

रविवार को यदि पुष्य नक्षत्र हो तो मंत्र—सिद्धि व औषधि प्रयोग के लिए सर्वोत्तम सोमवार, भौमवार, बुधवार और शनिवार में पुष्य नक्षत्र श्रेष्ठ; गुरुवार को पुष्य नक्षत्र व्यापारिक कार्यों के लिए उत्तम तथा शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र उत्पात—कारक व बाधक होता है।

जब गुरुवार को पुष्य नक्षत्र पड़ता है तब गुरु—पुष्य योग तथा जब रविवार को पुष्य नक्षत्र होता है तब रवि—पुष्य योग संपूर्ण कार्यों के लिए सिद्धि करता है, केवल विवाह को छोड़कर। पुष्य नक्षत्र केवल विवाह में तथा शुक्रवार को पुष्य—उत्पात योग होने के कारण सभी कार्यों के लिए वर्जित है।

जन्म नक्षत्र : जन्म के समय चंद्र जिस नक्षत्र पर होता है, वह नक्षत्र जन्म नक्षत्र होता है। जन्म नक्षत्र के आधार पर जातक की दशाओं (विंशोत्तरी दशा) का निर्धारण होता है तथा उसी आधार पर वर्तमान जीवन एवं भविष्य का फल प्रतिपादित किया जाता है।

जन्म नक्षत्र के आधार पर ही जातक का स्वभाव, आकृति, मन, मस्तिष्क एवं भावनाओं पर विचार किया जाता है। जन्म नक्षत्र अन्नप्राशन, राज्याभिषेक, उपनयन, विवाह, यात्रा आदि में निषिद्ध है। जन्म नक्षत्र से 25वाँ और 27वाँ नक्षत्र शुभ कार्यों में वर्जित है।

पंचक संज्ञक नक्षत्र : धनिष्ठा का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र पंचक संज्ञक होते हैं। इनमें समस्त शुभ कार्य, यात्रा, गृह—प्रवेश, गृहारंभ आदि वर्जित हैं।

क्रय—विक्रय संज्ञक नक्षत्र : वस्तुओं के क्रय एवं विक्रय के लिए भी नक्षत्रों के दो विभाग हैं। खरीदनेवाले नक्षत्रों में बेचने का कार्य और बेचनेवाले नक्षत्रों में खरीदने का कार्य अच्छा नहीं होता।

अश्विनी, चित्रा, स्वाती, श्रवण, शतभिषा और रेवती इन 6 नक्षत्रों में वस्तुओं का क्रय करना शुभ है। भरणी, कृत्तिका, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वाभाद्रपद इन 7 नक्षत्रों में वस्तुओं को विक्रय करना शुभ होता है।

मास शून्य नक्षत्र : मासों के सामने अंकित नक्षत्र होने पर उनकी संज्ञा मास—शून्य होती है। इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है।

मास : 1. चैत्र

मास शून्य नक्षत्र : अश्विनी, रोहिणी

मास : 2. वैशाख

मास शून्य नक्षत्र : चित्रा, स्वाती

मास : 3. ज्येष्ठ

मास शून्य नक्षत्र : पुष्य, उत्तराषाढ़

मास : 4. आषाढ़

मास शून्य नक्षत्र : पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा

मास : 5. श्रावण

मास शून्य नक्षत्र : उत्तराषाढ़, श्रवण

मास : 6. भाद्रपद

मास शून्य नक्षत्र : रेवती, शतभिषा

मास : 7. आश्विन

मास शून्य नक्षत्र : पूर्वाभाद्रपद

मास : 8. कार्तिक

मास शून्य नक्षत्र : कृत्तिका, मघा

मास : 9. मार्गशीर्ष

मास शून्य नक्षत्र : चित्रा, विशाखा

मास : 10. पौष

मास शून्य नक्षत्र : अश्विनी, आर्द्रा, हस्त

मास : 11. माघ

मास शून्य नक्षत्र : श्रवण, मूल

मास : 12. फाल्गुन

मास शून्य नक्षत्र : भरणी, ज्येष्ठा

दग्ध संज्ञक नक्षत्र : इनमें शुभ कार्य करना वर्जित है। ये क्रमशः सूर्यादि ग्रहों के जन्म नक्षत्र भी हैं। रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, भौमवार को उत्तराषाढ़, बुधवार को धनिष्ठा, गुरुवार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा, शनिवार को रेवती नक्षत्र होने पर दग्ध नक्षत्र कहलाते हैं।

धु्रव संज्ञक नक्षत्र : रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़, उत्तराभाद्रपद नामक चार नक्षत्र धु्रव नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें स्थिर कार्य जैसे गृह—निर्माण, बीज बोना, शांति कर्म आदि सिद्ध होते हैं।

चर संज्ञक नक्षत्र : पुनर्वसु, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिष नामक पाँच नक्षत्र चर नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें चर कार्य जैसे यात्रा करना, सवारी करना, दुकान खोलना, कार्य आरंभ करना आदि शुभ होते हैं।

उग्र संज्ञक नक्षत्र : भरणी, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ और पूर्वाभाद्रपद नामक पाँच नक्षत्र उग्र नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उग्र कार्य करने पर शुभ होते हैं।

मिश्र संज्ञक नक्षत्र : कृत्तिका और विशाखा नक्षत्र मिश्र संज्ञक नक्षत्र होते हैं। इनमें साधारण कार्य करने पर सिद्‌ध होते हैं।

मृदु संज्ञक नक्षत्र : मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा और रेवती नक्षत्र मृदु संज्ञक नक्षत्र होते हैं। इनमें अलंकार सज्जा, वस्त्र—धारण, ललित कार्य, गायन, आभूषण धारण करना आदि कार्य सिद्‌ध होते हैं।

तीक्ष्ण या दारुण संज्ञक नक्षत्र : आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र तीक्ष्ण या दारुण संज्ञक होते हैं। इनमें युद्‌ध, मुकदमा, अभिचार व उग्र कार्य करना शुभ होता है।

त्रिपुष्कर नक्षत्र : सामान्यत: जिन नक्षत्रों के तीन चरण एक राशि में पड़ते हैं जैसे कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्रपद—ये 6 नक्षत्र त्रिपुष्कर नक्षत्र कहलाते हैं।

त्रिपुष्कर योग वार, तिथि एवं उक्त विषम चरणवाले नक्षत्र के योग से बनता है। यह योग भदा तिथियाँ, शनि—मंगल और रविवार के दिन यदि उक्त 6 त्रिपुष्कर नक्षत्रों की स्थिति में आती है तो त्रिपुष्कर योग का निर्माण होता है। यह त्रिपुष्कर योग मृत्यु—विनाश और वृद्‌धि में तीन गुना फल देता है—अर्थात् इस योग में कोई वस्तु नष्ट होने पर तीन वस्तुएँ नष्ट हो, एक की मृत्यु होने पर तीन मृत्यु हो और लाभ होने पर तीन वस्तुओं का लाभ हो।

द्विपुष्कर नक्षत्र : सामान्यत: जिन नक्षत्रों के दो चरण एक राशि में पड़ते हैं जैसे मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा—ये 3 नक्षत्र द्विपुष्कर नक्षत्र कहलाते हैं।

द्विपुष्कर योग भी वार, तिथि एवं उक्त 2 चरणवाले नक्षत्रों के योग से बनता है। यह योग भद्रा तिथियाँ, शनि, मंगल और रविवार के दिन यदि उक्त 3 द्विपुष्कर नक्षत्रों की स्थिति में आती है तो द्विपुष्कर योग का निर्माण होता है। यह द्विपुष्कर योग मृत्यु, विनाश और वृद्‌धि में दो गुना फल देता है।

सूर्य के विभिन्न राशियों एवं नक्षत्रों में संचरण

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : अश्विनी

स्वामी : केतु

मान : 13°20'

प्र. ति. : 13 अप्रैल

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : भरणी

स्वामी : शुक्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 27 अप्रैल

राशि : 1. मेष

नक्षत्र : कृतिका

स्वामी : सूर्य

मान : 3°20'

प्र. ति. : 11 मई

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : कृत्तिका

स्वामी : सूर्य

मान : 10°

प्र. ति. : 14 मई

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : रोहिणी

स्वामी : चंद्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 25 मई

राशि : 2. वृष

नक्षत्र : मृगशिरा

स्वामी : भौम

मान : 6°40'

प्र. ति. : 8 जून

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : मृगशिरा

स्वामी : भौम

मान : 6°40'

प्र. ति. : 14 जून

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : आर्द्रा

स्वामी : राहु

मान : 13°20'

प्र. ति. : 22 जून

राशि : 3. मिथुन

नक्षत्र : पुनर्वसु

स्वामी : गुरु

मान : 10°

प्र. ति. : 6 जुलाई

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : पुनर्वसु

स्वामी : गुरु

मान : 3°20'

प्र. ति. : 16 जुलाई

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : पुष्य

स्वामी : शनि

मान : 13°20'

प्र. ति. : 20 जुलाई

राशि : 4. कर्क

नक्षत्र : आश्लेषा

स्वामी : बुध

मान : 13°20'

प्र. ति. : 13 अगस्त

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : मघा

स्वामी : केतु

मान : 13°20'

प्र. ति. : 16 अगस्त

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : पू. फाल्गुनी

स्वामी : शुक्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 30 अगस्त

राशि : 5. सिंह

नक्षत्र : उ. फाल्गुनी

स्वामी : सूर्य

मान : 3°20'

प्र. ति. : 13 सितंबर

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : उ. फाल्गुनी

स्वामी : सूर्य

मान : 10°

प्र. ति. : 16 सितंबर

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : हस्त

स्वामी : चंद्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 27 सितंबर

राशि : 6. कन्या

नक्षत्र : चित्रा

स्वामी : भौम

मान : 6°40'

प्र. ति. : 10 अक्तूबर

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : चित्रा

स्वामी : भौम

मान : $6^\circ 40'$

प्र. ति. : 17 अक्तूबर

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : स्वाती

स्वामी : राहू

मान : $13^\circ 20'$

प्र. ति. : 24 अक्तूबर

राशि : 7. तुला

नक्षत्र : विशाखा

स्वामी : गुरु

मान : 10°

प्र. ति. : 6 नवंबर

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : विशाखा

स्वामी : गुरु

मान : $3^\circ 20'$

प्र. ति. : 16 नवंबर

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : अनुराधा

स्वामी : शनि

मान : 13°20'

प्र. ति. : 20 नवंबर

राशि : 8. वृश्चिक

नक्षत्र : ज्येष्ठा

स्वामी : बुध

मान : 13°20'

प्र. ति. : 3 दिसंबर

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : मूल

स्वामी : केतु

मान : 13°20'

प्र. ति. : 15 दिसंबर

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : पूर्वाषाढ़

स्वामी : शुक्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 29 दिसंबर

राशि : 9. धनु

नक्षत्र : उत्तराषाढ़

स्वामी : सूर्य

मान : 3°20'

प्र. ति. : 11 जनवरी

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : उत्तराषाढ़

स्वामी : सूर्य

मान : 10°

प्र. ति. : 14 जनवरी

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : श्रवण

स्वामी : चंद्र

मान : 13°20'

प्र. ति. : 24 जनवरी

राशि : 10. मकर

नक्षत्र : धनिष्ठा

स्वामी : भौम

मान : 6°40'

प्र. ति. : 6 फरवरी

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : धनिष्ठा

स्वामी : भौम

मान : 6°40'

प्र. ति. : 12 फरवरी

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : शतभिषा

स्वामी : राहु

मान : 13°20'

प्र. ति. : 19 फरवरी

राशि : 11. कुंभ

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद

स्वामी : गुरु

मान : 10°

प्र. ति. : 4 मार्च

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद

स्वामी : गुरु

मान : 3°20'

प्र. ति. : 14 मार्च

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : उत्तरा भाद्रपद

स्वामी : शनि

मान : 13°20'

प्र. ति. : 18 मार्च

राशि : 12. मीन

नक्षत्र : रेवती

स्वामी : बुध

मान : 13°20'

प्र. ति. : 31 मार्च

इस प्रकार सूर्य की विभिन्न राशियों में संक्रांति की तिथि लगभग प्रति वर्ष समान रहती है; परंतु कभी—कभी एक तिथि से संक्रांति आगे या पीछे हो जाती है।

सूर्य मेष राशि में 10 अंश का उच्च का होता है। सूर्य मेष राशि में 13 अप्रैल से 13 मई तक संचरण करता है, परंतु मेष राशि में 10 अंश का 23 अप्रैल को होता है। इसी प्रकार तुला राशि में 10 अंश का स्वाती नक्षत्र में 21 अक्तूबर को होता है तथा सूर्य स्वराशि सिंह में 16 अगस्त से 15 सितंबर तक संचरण करता है।

विंशोत्तरी दशा पद्धति और नक्षत्र विचार

भारतीय ज्योतिष पद्धति नक्षत्र (Sidereal) पद्धति हैं। इसमें ज्योतिष की मूलभूत बातों का निर्णय नक्षत्रों पर से किया गया है। फलित ज्योतिष में मुख्यत: कोई भी कार्य या घटना कब होगी, इसका उत्तर दिया जाता है। इस 'कब' का उत्तर भारतीय ज्योतिष में मुख्यतया दशा पद्धति पर आधारित होता है।

वैसे तो दशा पद्धतियाँ बहुत सी हैं तथा सभी दशा पद्धतियों का आधार नक्षत्र हैं। उत्तर भारत में मुख्यतया विंशोत्तरी दशा पद्धति ही प्रचलित हैं तथा इन दशा पद्धतियों का आधार नक्षत्र हैं। इस दशा को विंशोत्तरी इसलिए कहते हैं कि यहाँ 9 ग्रहों के कुल 120 वर्ष होते हैं तथा विंशोत्तरी का अर्थ ही 120 है।

हम जानते हैं कि किसी जातक के जन्म के समय चंद्रमा जिस नक्षत्र पर होता है उस समय उस नक्षत्र के ग्रह स्वामी की दशा अवशेष दशा के रूप में जातक को भोग के लिए वर्तमान जीवन में प्राप्त होती है और उस नक्षत्र स्वामी की दशा जब समाप्त हो जाती है तो फिर क्रमानुसार दूसरे ग्रह की दशा प्रारंभ होती है और जातक के जन्मांग में स्थित ग्रहों के बल, शुभता एवं अशुभता के अनुपात में जातक के जीवन में घटनेवाली घटनाओं का समय अर्थात् 'कब' का उत्तर प्राप्त होता है।

अत: निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि किसी जातक के जीवन में

होनेवाली घटनाओं के समय को निश्चित करने में नक्षत्रों की अहम भूमिका होती है।

षोडश संस्कार और नक्षत्र

जिस कार्य में मन, रुचि और आचार—विचार को परिष्कृत एवं उन्नत किया जाता है उसे संस्कार कहते हैं —अर्थात् जिस कर्म से शरीर, मन एवं आत्मा तीनों स्तरों से विकार हट जाते हों तथा तीनों स्तरों में स्वच्छता आ जाती है, उसको संस्कार कहते हैं।

हिंदू धर्म में शरीर, मन एवं आत्मा तथा चर—अचर पदार्थों को शुद्ध और उन्नत करने के लिए जातक के जन्म के पूर्व से लेकर मृत्यु तक मुख्यत: सोलह विशिष्ट संस्कार संपन्न किए जाते हैं, जिन्हें षोडश संस्कार कहते हैं।

गर्भाधान, पुंसवन, सीमंतोन्नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, चूडाकर्म, यज्ञोपवीत, विद्यारंभ, वेदारंभ, समावर्तन, उपनयन, विवाह एवं अंत्येष्टि आदि क्रम से षोडश संस्कार हैं।

यहाँ पर मुख्य बात यह है कि उक्त सभी षोडश संस्कार नक्षत्रों पर ही आधारित हैं, जैसे प्रथम संस्कार गर्भाधान है। गर्भाधान संस्कार ऋ तुकाल की प्रथम चार रात्रि को त्यागकर किया जाता है तथा रोहिणी, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मृगशिरा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिष, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ एवं उत्तराभाद्रपद आदि नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ है। अश्विनी, पुनर्वसु पुष्य एवं चित्रा नक्षत्र गर्भाधान के लिए मध्यम हैं। इसके अतिरिक्त शेष नक्षत्र अधम हैं, जिनमें गर्भाधान नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार विवाह संस्कार तो पूरी तरह से अर्थात् वर एवं कन्या के जन्मांग के मेलापक से लेकर वाग्दान, वर तिलक, वधू प्रवेश, प्रथम समागम तक प्रत्येक चरण का विचार नक्षत्रों के आधार पर ही किया जाता है।

मेलापक के अंतर्गत वर—कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर गुण—दोषों का विचार अष्टकूट के माध्यम से किया जाता है। अष्टकूट निम्न हैं—वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रह, मैत्री, भकुट एवं नाड़ी—ये आठ गुण आदि क्रम से उत्तरोत्तर बली हैं। इन आठों प्रकार के गुणों का निर्णय वर—कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर किया जाता है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि जातक द्वारा संपन्न किए गए प्रत्येक संस्कार में नक्षत्रों का महत्त्व अहम है। बिना नक्षत्रों की मदद के हम कोई भी संस्कार भलीभाँति संपादित नहीं कर सकते हैं।

योग निर्माण एवं नक्षत्र

हम अपने दैनिक जीवन में विभिन्न प्रकार के कार्य अपनी दिनचर्या में संपादित करते हैं, जैसे राजकीय कार्य, व्यापारिक कार्य, किसी से भेंट करना, टेंडर डालना, नवीन कार्य करना आदि जिनके लिए अभीष्ट शुभ मुहूर्त हम चाहते तो हैं परंतु यथाशीघ्र इन कार्यों के लिए समय नहीं मिलता है; परंतु तिथि, वार एवं नक्षत्रों के संयोग से प्रतिदिन कुछ अच्छे अर्थात् शुभ योग और कुछ अशुभ योग भी बनते हैं, जिन्हें देखकर हम अभीष्ट कार्य संपादित कर सकते हैं।

शुभ योगों से अमृत सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग, सिद्धि योग नक्षत्र, सिद्धि योग तिथि एवं रत्नांकुर योग बनते हैं।

1. अमृत सिद्धि योग : रविवार को हस्त नक्षत्र, सोमवार को मृगशिरा नक्षत्र, मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र, बुधवार को अनुराधा नक्षत्र, गुरुवार को पुष्य नक्षत्र, शुक्रवार को रेवती नक्षत्र एवं शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो अमृत सिद्धि योग बनता है; परंतु यदि रविवार को पंचमी, सोमवार को षष्ठी, मंगलवार को सप्तमी, बुधवार को अष्टमी, गुरुवार को नवमी, शुक्रवार को दशमी, शनिवार को एकादशी हो तो उस तिथि काल का अमृत सिद्धि योग दूषित होगा।

सर्वार्थ सिद्धि योग

दिन : रविवार

नक्षत्र : अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, मूल

दुष्ट तिथि : 1,3 व 7 शु. व कृ. पक्ष

दिन : सोमवार

नक्षत्र : रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण

दुष्ट तिथि : 2 व 11

दिन : मंगलवार

नक्षत्र : अश्विनी, कृत्तिका, आश्लेषा, उ. भाद्रपद

दुष्ट तिथि : ————

दिन : बुधवार

नक्षत्र : कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा

दुष्ट तिथि : 7,9 व 11

दिन : गुरुवार

नक्षत्र : अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती

दुष्ट तिथि : ————

दिन : शुक्रवार

नक्षत्र : अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती

दुष्ट तिथि : ————

दिन : शनिवार

नक्षत्र : रोहिणी, स्वाती, श्रवण

दुष्ट तिथि : 11 व 13

रविवार को अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त तथा मूल—इन सातों नक्षत्रों में से कोई एक नक्षत्र आ जाय तो उसके योग काल तक सर्वार्थ सिद्धि योग का शुभ मुहूर्त होगा; लेकिन यदि उस बीच में शुक्ल या कृष्णपक्ष की एक, तीन या सात तिथियों में से कोई तिथि आ जाए तो उस तिथि काल का सर्वार्थ सिद्धि योग दूषित होगा, अत: इस दूषित काल में कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए।

यहाँ पर एक मुख्य बात पर ध्यान रखना चाहिए कि अमृत योग और सिद्धि योग दोनों किसी दिन साथ ही पड़ जाएँ तो वह दिन अशुभ हो जाता है, जैसे मधु और घृत समान मात्रा में मिलने पर विष हो जाता है वैसे ही किसी दिन यदि दोनों योग एक साथ घटित हों तो वह दिन अशुभ हो जाएँगे।

ध्यान रहे कि गुरु : पुष्य के संयोग से बना अमृत सिद्धि योग विवाह में, शनि—रोहिणी के संयोग से बना अमृत सिद्धि योग प्रयाण में तथा मंगल—अश्विनी के संयोग से बना अमृत सिद्धि योग गृह—प्रवेश में पूर्णतया वर्जित है।

अशुभ योगों में मृत्यु योग, अधम योग, उत्पात योग, काल योग, यमघंटा योग, यमदंष्ट्रा योग, मुसल वज्र योग, राक्षस योग, कोण योग आदि बनते हैं।

उपर्युक्त समस्त अशुभ योग वार एवं नक्षत्र के संयोग से बनते हैं, अर्थात् यदि विशिष्ट वार को विशिष्ट नक्षत्र पड़ जाए तो उस वार में किया गया कर्म निष्फल होता है—जैसे यदि रविवार को अनुराधा नक्षत्र होने से मृत्यु योग का निर्माण होता है, विशाखा नक्षत्र होने से उत्पात योग, भरणी नक्षत्र होने से काल योग, ज्येष्ठा नक्षत्र होने से कोण योग बनता है। अत: रविवार को यदि उक्त नक्षत्र हो तो किसी शुभ कार्य को आरंभ नहीं करना चाहिए।

योग : मृत्यु योग

रवि : अनुराधा

सोम : उत्तराषाढ़

भौम : ———

बुध : अश्विनी

गुरु : मृगशिरा

शुक्र : आश्लेषा

शनि : हस्त

योग : उत्पात योग

रवि : विशाखा

सोम : पूर्वाषाढ़

भौम : धनिष्ठा

बुध : रेवती

गुरु : रोहिणी

शुक्र : पुष्य

शनि : उ.फाल्गुनी

योग : काल योग

रवि : भरणी

सोम : आर्द्रा

भौम : मघा

बुध : चित्रा

गुरु : ज्येष्ठा

शुक्र : अभिजित : शनि : पू.भाद्रपद

योग : यमघंट

रवि : मघा

सोम : विशाखा

भौम : आर्द्रा

बुध : मूल

गुरु : कृत्तिका

शुक्र : रोहिणी

शनि : हस्त

योग : राक्षस

रवि : ———

सोम : अश्विनी

भौम : मृगशिरा

बुध : आश्लेषा

गुरु : हस्त

शुक्र : अनुराधा

शनि : उत्तराषाढ़

योग : कोण

रवि : ज्येष्ठा

सोम : अभिजित : भौम : पू.भाद्रपद

बुध : भरणी

गुरु : आर्द्रा

शुक्र : मघा

शनि : चित्रा

ग्रहों की उच्चता आदि एवं नक्षत्र

हम जानते हैं कि भारतीय ज्योतिष में छाया ग्रहों के अतिरिक्त सात ग्रह हैं। ये सात ग्रह जब अपनी—अपनी उच्च राशि में स्थित होते हैं तो बहुत बलवान् समझे जाते हैं और इसी बल के कारण अच्छा फल देने में समर्थ होते हैं। जब ये ग्रह अपनी नीच राशि में स्थित होते हैं तब बलहीन समझे जाते हैं और इसी कारण बुरा फल देते हैं।

जैसा कि हम जानते हैं कि एक राशि में तीन नक्षत्र स्थित होते हैं, अत: ये ग्रह पूरी राशि में मानें तो उच्च के जाते हैं; परंतु इन ग्रहों की उच्चता राशि में स्थित किसी विशेष नक्षत्र में स्थित होने के कारण मानी जाती हैं। वराहमिहिर कृत 'वृहज्जातक' के अध्याय प्रथम के 13वें श्लोक में यह बताया गया है कि सूर्य आदि सातों ग्रह किस अंश पर उच्च के होते हैं और अपनी उच्चता के अंश से 180 अंशों पर नीच के समझे जाते हैं।

सूर्य आदि सातों ग्रह किस राशि के कितने अंशों पर तथा किस नक्षत्र में उच्च एवं नीच के समझे जाएँगे, यह निम्न चार्ट से स्पष्ट है। जैसे सूर्य मेष राशि के 10 अंश पर उच्च का माना जाएगा—अर्थात् 10° पर अश्विनी नक्षत्र होगा, जिसका स्वामी केतु है। अत: सूर्य केतु के नक्षत्र अश्विनी में 10° पर मेष राशि में उच्च का तथा राहु के नक्षत्र स्वाती में 10° पर तुला राशि में नीच का समझा जाएगा । इसी प्रकार अन्य ग्रहों के विषय में समझा जाए।

इस प्रकार हमने देखा कि सूर्य आदि सातों ग्रहों की उच्चता आदि का संबंध भी नक्षत्रों से ही है, अर्थात् किसी विशेष नक्षत्र में स्थित होने से ही ग्रह उच्च या नीच के समझे जाते हैं।

ग्रहों की उच्चता

ग्रह : उच्च राशि

सूर्य : मेष

चंद्र : वृष

भौम : मकर

बुध : कन्या

गुरु : कर्क

शुक्र : मीन

शनि : तुला

ग्रह : अंश

सूर्य : 10

चंद्र : 3

भौम : 28

बुध : 15

गुरु : 5

शुक्र : 27

शनि : 20

ग्रह : नक्षत्र

सूर्य : अश्विनी

चंद्र : कृत्तिका

भौम : धनिष्ठा

बुध : हस्त

गुरु : पुष्य

शुक्र : रेवती

शनि : विशाखा

ग्रह : न. स्वामी

सूर्य : केतु

चंद्र : सूर्य

भौम : मंगल

बुध : चंद्र

गुरु : शनि

शुक्र : बुध

शनि : गुरु

ग्रहों की निम्नता

ग्रह : नीच राशि

सूर्य : तुला

चंद्र : वृश्चिक

भौम : कर्क

बुध : मीन

गुरु : मकर

शुक्र : कन्या

शनि : मेष

ग्रह : अंश

सूर्य : 10

चंद्र : 3

भौम : 28

बुध : 15

गुरु : 5

शुक्र : 27

शनि : 20

नक्षत्र—स्वाती—विशाखा—आश्लेषा— उ.भाद्र —पद—उत्तराषाढ़—चित्रा—कृत्तिका

न. स्वामी—राहु—गुरु—बुध—शनि—सूर्य—भौम—सूर्य

जातक का स्वभाव एवं नक्षत्र

जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी जातक का स्वभाव मुख्य रूप से लग्न, चंद्र राशि एवं सूर्य राशि से जाना जाता है, अर्थात् जन्म के समय जातक की लग्न राशि, चंद्र एवं सूर्य राशि के अनुसार ही जाना जाता है। जैसे किसी जातक की लग्न मेष राशि की, चंद्र वृष राशि में एवं सूर्य मीन राशि में हो तो जातक के स्वभाव में मेष राशि, वृष राशि एवं मीन राशि का मिला जुला—असर होगा अर्थात् तीनों राशियों के गुण—दोष के आधार पर जातक के स्वभाव का आकलन करेंगे।

इसके अतिरिक्त हम यह भी जानते हैं कि राशि कुल 12 हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि कुल लग्न 12 हुईं। इसी प्रकार चंद्र लग्न एवं सूर्य लग्न भी 12 हुईं, परंतु लोक में प्रत्येक जातक दूसरे जातक से भिन्न है और इस आधार पर उक्त 12 राशियों से सभी जातकों के भिन्न—भिन्न स्वभाव का आकलन नहीं किया जा सकता है।

अब हम एक राशि में स्थित लग्न के जातकों के स्वभाव का अगर आंकलन करें तो हम देखते हैं कि एक ही लग्न में स्थित जातकों के स्वभाव में भिन्नता होती है। इस प्रकार एक ही चंद्र एवं सूर्य राशिवाले जातकों के स्वभाव में भिन्नता पाई जाती है।

एक ही लग्न में स्थित जातकों की भिन्नता को अगर हम समझें तो देखते हैं कि एक राशि में तीन नक्षत्र स्थित होते हैं तथा तीन नक्षत्रों में भी 9 चरण होते हैं और विभिन्न नक्षत्रों में स्थित लग्न, चंद्र या सूर्य से जातक के स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है, जैसे कि अगर हम देखें कि किन्हीं तीन जातकों की लग्न मेष हैं, परंतु प्रथम जातक की लग्न अश्विनी नक्षत्र में स्थित है, दूसरे जातक की लग्न भरणी नक्षत्र में स्थित है एवं तीसरे जातक की लग्न कृत्तिका नक्षत्र में स्थित है।

इस प्रकार एक ही राशि में होते हुए भी विभिन्न नक्षत्रों में स्थित होने के कारण तीनों जातकों के स्वभाव में भिन्नता का हम आकलन कर सकते हैं। इसी प्रकार चंद्र राशि एवं सूर्य राशि में भी नक्षत्रों के विभागों के आधार पर जातक के स्वभाव का आकलन कर सकते हैं।

इस प्रकार हम यह समझ सकते हैं कि जातक के स्वभाव का आकलन करने के लिए नक्षत्रों की महत्ता कितनी महत्त्वपूर्ण है। अत: राशि के साथ—साथ लग्न, चंद्र एवं सूर्य किस नक्षत्र में स्थित हैं, को अवश्य ध्यान देना चाहिए एवं नक्षत्रों के आधार पर ही जातक के स्वभाव का आकलन करना चाहिए।

योग

यह पंचांग का चौथा अंग है। चंद्र और सूर्य की गति में जब 13° 20 अर्थात् **800** कला का अंतर आ जाता है तब एक योग बनता है अर्थात् जब सूर्य और चंद्र दोनों अश्विनी नक्षत्र से **800** कलाएँ चल देते हैं तब एक योग होता है। योग का अर्थ है 'जोड़'। योग भी नक्षत्रों की तरह कोई तारा पिंड नहीं है, अपितु यह तो सूर्य चंद्र के अंतर अथवा जोड़ की माप है। योग दो प्रकार के माने गए हैं—

1. विष्कंभादि योग : इन योगों की कुल संख्या 27 है, जिनके नाम एवं इनके स्वामी इस प्रकार हैं—

निम्न 27 योगों में विष्कंभ, अतिगंड, शूल, गंड, व्याघात, बज्र, व्यतिपात, परिघ और वैधृति नाम 9 योग दुर्योग कहे गए हैं, शेष 18 योग सुयोग कहे गए हैं।

समस्त शुभ कार्यों में व्यतिपात और वैधृति नामक योग वर्जित हैं। परिघ योग का पूर्वार्थ, विष्कंभ और बज्र योग की 3 घटी, व्याघात की 9 घटी, शूल की 5 घटी, गंड और अतिगंड योग की प्रारंभ में 6 घटी शुभ कार्यों में त्याज्य है। लग्न शुद्ध होने पर दुर्योगों के दोष नष्ट हो जाते हैं।

योग का नाम : 1. विष्कंभ

स्वामी : यम

योग का नाम : 2. प्रीति

स्वामी : विष्णु

योग का नाम : 3. आयुष्मान्

स्वामी : चंद्र

योग का नाम : 4. सौभाग्य

स्वामी : ब्रह्म

योग का नाम : 5. शोभन

स्वामी : वृहस्पति

योग का नाम : 6. अतिगंड

स्वामी : चंद्रमा

योग का नाम : 7. सुकर्मा

स्वामी : इंद्र

योग का नाम : 8. धृति

स्वामी : जल

योग का नाम : 9. शूल

स्वामी : सर्प

योग का नाम : 10. गंड

स्वामी : अग्नि

योग का नाम : 11. वृद्धि

स्वामी : सूर्य

योग का नाम : 12. ध्रुव

स्वामी : भूमि

योग का नाम : 13. व्याघात

स्वामी : वायु

योग का नाम : 14. हर्षण

स्वामी : भग

योग का नाम : 15. वज्र

स्वामी : करुण

योग का नाम : 16. सिद्धि

स्वामी : गणेश

योग का नाम : 17. व्यतिपात

स्वामी : रुद्र

योग का नाम : 18. वरीयान

स्वामी : कुबेर

योग का नाम : 19. परिघ

स्वामी : विश्वकर्मा

योग का नाम : 20. शिव

स्वामी : मित्र

योग का नाम : 21. सिद्ध

स्वामी : कार्तिकेय

योग का नाम : 22. साध्य

स्वामी : सावित्री

योग का नाम : 23. शुभ

स्वामी : लक्ष्मी

योग का नाम : 24. शुक्ल

स्वामी : पार्वती

योग का नाम : 25. ब्रह्म

स्वामी : अश्विनीकुमार

योग का नाम : 26. ऐंद्र

स्वामी : पितर

योग का नाम : 27. वैधृति

स्वामी : दिति

सामान्यत: उक्त योगों में खराब योगों में प्रथम चरण अर्थात् **3° 20** तक अनिष्ट माने गए हैं, परंतु परिघ योग के दो चरण तथा वैधृति और व्यतिपात के चारों चरण अनिष्टकर एवं त्याज्य माने जाते हैं।

2. आनंदादि योग : यह योग नक्षत्र और वार के संयोग से बनते हैं। इनकी कुल संख्या 28 है। इन योगों को जानने की विधि यह है कि रविवार को अश्विनी नक्षत्र से, सोमवार को मृगशिरा से, मंगलवार को आश्लेषा से, बुधवार को हस्त से, गुरुवार को अनुराधा से, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ से तथा शनिवार को शतभिषा नक्षत्र से गिनना चाहिए।

जैसे यदि रविवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो आनंद योग होगा और भरणी हो तो कालदंड योग होगा। इसी प्रकार अन्य योगों को समझ सकते हैं।

आनंदादि योग चक्रम्

योग	रविवार	सोमवार	भौमवार	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	फल
आनंद	अ.	मृ.	श्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	सिद्धि
कालदंड	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	मृत्यु
धूम्र	कृ.	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूल	श्र.	उभा.	दु:ख
धाता	रो.	पु.	उफा.	वि.	पूषा	ध.	रे.	भाग्य
सौम्य	मृ.	श्ले.	ह.	अनु.	उषा	शत.	अ.	सुख
ध्वांक्ष	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	क्षति
केतु	पुन.	पूफा.	स्वा.	मूल.	श्र.	उभा.	कृ.	दुर्भाग्य
श्रीवस्त	पु.	उफा.	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	सुख
वज्र	श्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	अ.	मृ.	क्षय
मुद्गर	म.	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा	भ.	आ.	हानि
छत्र	पूफा.	स्वाती	मूल.	श्रवण	उभा	कृ.	पुन.	सम्मान
मित्र	उफा.	विशाखा	पूषा.	धनिष्ठा	रे.	रो.	पुष्य.	शुभ
मानस	हस्त	अनु.	उषा.	शत.	अ.	मृ.	श्ले.	भाग्य
पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभ
लुंब	स्वाती	मूल	श्रवण	उभा.	कृ.	पुन.	पूफा.	हानि
उत्पात	विशाखा	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती	रो.	पुष्य	उफा.	मरण
मृत्यु	अनुराधा	उषा.	शत.	अ.	मृ.	श्ले.	हस्त.	मरण

काण	ज्येष्ठा	अभि.	पूभा.	भरणी	आ.	म.	चि.	दु:ख
सिद्धि	मूल	श्रवण	उभ.	कृ.	पुन.	पूफा	स्वा.	सिद्धि
शुभ	पूषा.	धनिष्ठा	रेवती.	रो.	पुष्य	उफा	वि.	सुख
अमृत	उषा.	शत.	अ.	मृ.	श्ले.	हस्त	अनु.	सम्मान
मूसल	अभि.	पूभा.	भरणी	आ.	म.	चित्रा	ज्ये.	क्षति
गद	श्रवण	उभा.	कृत्तिका	पुन.	पूफा	स्वाती	मूल	रोग
मातंग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य.	उफा	विशाखा	पूषा.	वृद्धि
रक्ष	शत.	अ.	मृ.	श्ले.	हस्त	अनु.	उषा.	कष्ट
चर	पूभा.	भरणी	आ.	म.	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	सिद्धि
सुस्थिर	उभा.	कृत्तिका	पुन.	पू. फा.	स्वाती	मूल.	श्रवण	गृहारंभ
प्रवर्धमान	रेवती	रोहिणी	पु.	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनि.	विवाह

आवश्यक कार्यों में ध्वज, वज्र व मुदर की प्रथम 5 घटी, पघ व लुब्ध की प्रथम 4 घटी, गद की प्रथम 7 घटी, ध्रूम की प्रथम 1 घटी एवं करण की प्रथम 2 घटी वर्जित है। रक्ष, उत्पाद, मृत्यु एवं काल योग शुभ कार्यों में पूर्णत: वर्जित है।

करण निरूपण

यह पंचांग का पाँचवाँ एवं अंतिम अंग है। तिथि के आधे भाग को करण कहते हैं। तिथि के पहले आधे भाग को प्रथम करण और दूसरे आधे भाग को दूसरा करण कहते हैं। इस प्रकार एक तिथि में दो करण होते हैं।

सूर्य और चंद्र के मध्य 6 अंश का अंतर आने पर एक करण होता है। चांद्र मास में 30 तिथि और 60 करण होते हैं।

करण कुल 11 हैं, इनमें से 7 चर और 4 स्थिर करण हैं।

चर करण : बव, बालव, कौलव, तैत्तिल, गर, वणिज और विष्टि।

स्थिर करण : शकुनि, चतुष्पद, नाग और किंस्तुघ्न।

बव, बालव, कौलव, तैत्तिल, गर और वणिज नामक 6 करण शुभ हैं।

कृष्णपक्ष चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनि, अमावस्या के पूर्वार्द्ध में चतुष्पद, उत्तरार्द्ध में नाग और शुक्ल प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंस्तुघ्न आदि 4 करण इन्हीं तीन तिथियों में स्थिर रहते हैं। शुक्लपक्ष प्रतिपदा के उत्तरार्द्ध से बव, बालव, कौलव, तैत्तिल, गर, वणिज और विष्टि आदि 7 करण शेष तिथियों में पुन:—पुन: आठ आवृत्ति से भ्रमण करते हैं।

करण चक्रम्

तिथि : 1

पूर्वार्ध : किंस्तुघ्न

उत्तरार्ध : बव

तिथि : 1

पूर्वाध : बालव

उत्तरार्ध : कौलव

तिथि : 2

पूर्वार्ध : बालव

उत्तरार्ध : कौलव

तिथि : 2

पूर्वाध : तैत्तिल

उत्तरार्ध : गर

तिथि : 3

पूर्वार्ध : तैत्तिल

उत्तरार्ध : गर

तिथि : 3

पूर्वाध : वणिज

उत्तरार्ध : विष्टि

तिथि : 4

पूर्वार्ध : वणिज

उत्तरार्ध : विष्टि

तिथि : 4

पूर्वाध : बव

उत्तरार्ध : बालव

तिथि : 5

पूर्वार्ध : बव

उत्तरार्ध : बालव

तिथि : 5

पूर्वाध : कौलव

उत्तरार्ध : तैत्तिल

तिथि : 6

पूर्वार्ध : कौलव

उत्तरार्ध : तैत्तिल

तिथि : 6

पूर्वाध : गर

उत्तरार्ध : वणिज

तिथि : 7

पूर्वार्ध : गर

उत्तरार्ध : वणिज

तिथि : 7

पूर्वाध : विष्टि

उत्तरार्ध : बव

तिथि : 8

पूर्वार्ध : विष्टि

उत्तरार्ध : बव

तिथि : 8

पूर्वाध : बालव

उत्तरार्ध : कौलव

तिथि : 9

पूर्वार्ध : बालव

उत्तरार्ध : कौलव

तिथि : 9

पूर्वाध : तैत्तिल

उत्तरार्ध : गर

तिथि : 10

पूर्वार्ध : तैत्तिल

उत्तरार्ध : गर

तिथि : 10

पूर्वाध : वणिज

उत्तरार्ध : विष्टि

तिथि : 11

पूर्वार्ध : वणिज

उत्तरार्ध : विष्टि

तिथि : 11

पूर्वाध : बव

उत्तरार्ध : बालव

तिथि : 12

पूर्वार्ध : बव

उत्तरार्ध : बालव

तिथि : 12

पूर्वाध : कौलव

उत्तरार्ध : तैत्तिल

तिथि : 13

पूर्वार्ध : कौलव

उत्तरार्ध : तैत्तिल

तिथि : 13

पूर्वाध : गर

उत्तरार्ध : वणिज

तिथि : 14

पूर्वार्ध : गर

उत्तरार्ध : वणिज

तिथि : 14

पूर्वाध : विष्टि

उत्तरार्ध : शकुनि

तिथि : 15

पूर्वार्ध : विष्टि

उत्तरार्ध : बव

तिथि : 30

पूर्वाध : चतुष्पद

उत्तरार्ध : नाग

करण एवं उनके स्वामियों के नाम निम्न प्रकार हैं—

करण : कार्य चक्रम् द्वारा हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि किस करण में कौन सा कार्य करना चाहिए।

करण—कार्य चक्रम्

1. **बव:**व्रतोत्सव, देवालय स्थापना व अर्चनादि शुभ कार्य
2. **बालव:**सत्कार एवं परहित कार्य
3. **कौलव:**उन्माद और मित्रता करें
4. **तैत्तिल:**मांगलिक कार्य
5. **गर:**बीजारोपण, हल चलाना
6. **वणिज:**देव प्रतिष्ठा, गृह निर्माण, दुकान, व्यापार
7. **विष्टि:**समस्त शुभ कार्य वर्जित हैं, परंतु क्रूर कार्य वर्जित नहीं हैं
8. **शकुनि:**मित्रोपदेश, गृह—पूजा, औषधि—निर्माण व सेवन आदि
9. **चतुष्पद:**पशु सेवा, राज्य, पितृ संबंधी कार्य
10. **नाग:**सौम्य कर्म, विद्याभ्यास, युद्ध आदि
11. **किंस्तुघ्न:**समस्त शुभ कार्य।

❑

मौखिक ज्ञान

जीवन में कभी—कभी ऐसी परिस्थितियाँ भी आती हैं कि पंचांग पास में न हो तो किस प्रकार हम तिथि, वार, नक्षत्र आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ज्योतिष के विद्यार्थी को मौखिक रूप से भी पंचांग का ज्ञान होना चाहिए, जिससे विषम परिस्थिति में भी ज्योतिष के कार्य में व्यवधान न हो पाए। इसी कारण पंचांग के मौखिक ज्ञान की रीति बतलाते हैं। इन विधियों से स्थूल ज्ञान ही होता है। सूक्ष्म ज्ञान तो गणित द्वारा ही होता है।

तिथि ज्ञान

सूत्र:(1) जिस दिन की तिथि ज्ञात करनी है उस दिन का नक्षत्र ज्ञात करो।

(2) पूर्णमासी के आगे जो नक्षत्र हो, उससे इष्ट दिन के नक्षत्र तक गिनती करो।

(3) गिनती करने पर जो संख्या आए, कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से उतना गिनकर तिथि ज्ञात कर लो।

(4) संख्या 15 से अधिक हो तो अमावस्या की 15 तिथि घटाकर शेष तिथि शुक्लपक्ष की समझनी चाहिए।

विशेष:(1) कभी—कभी तिथि की वृद्धि अथवा क्षय होने से एक तिथि का अंतर पड़ जाता है।

(2) नक्षत्र का ध्यान मास की पूर्णमासी से रखना चाहिए।

मास:चैत्र—वैशाख—ज्येष्ठ—आषाढ़—श्रावण—भाद्रपद

नक्षत्र:चित्रा—विशाखा—ज्येष्ठा—पूर्वाषाढ़—श्रवण—पू. भाद्रपद

मास:आश्विन—कार्तिक—मार्गशीर्ष—पौष—माघ—फाल्गुन

नक्षत्र :चित्रा—विशाखा—ज्येष्ठा—पूर्वाषाढ़—श्रवण—पू. भाद्रपद

उदाहरणार्थ : (1) संवत् 2065 में श्रावण मास में अनुराधा नक्षत्र को कौन सी तिथि होगी?

- श्रावण मास के पूर्व आषाढ़ मास था, आषाढ़ मास की पूर्णमासी को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र था।
- पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के आगे उत्तराषाढ़ नक्षत्र से इष्ट नक्षत्र अनुराधा तक गिनती करने पर 23 आया।
- उक्त संख्या 15 से अधिक आई है, अत: शुक्लपक्ष होगा।
- उक्त 23 में से 15 घटाया तो शेष 8 आया।
- अत: तिथि शुक्लपक्ष की अष्टमी हुई।

पंचांग देखने पर ज्ञात हुआ कि तिथि शुक्लपक्ष नवमी थी, क्योंकि एक तिथि का क्षय हुआ था।

(2) संवत् 2065 में आश्विन मास में अश्विनी नक्षत्र को कौन सी तिथिथी?

- अश्विन मास के पूर्व भाद्रपद मास था, भाद्रपद मास की पूर्णमासी को पू.भाद्रपद नक्षत्र था।
- पू.भाद्रपद से अगला नक्षत्र उ.भाद्रपद से इष्ट नक्षत्र अश्विनी तक गिनती करने पर 3 आया।
- उक्त संख्या 15 से कम है, अत: कृष्णपक्ष होगा।
- अत: तिथि कृष्णपक्ष की तृतीया हुई।

पंचांग देखने पर ज्ञात हुआ कि तिथि कृष्णपक्ष की तृतीया ही थी।

वार ज्ञान:

सूत्र:(1) चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गत मास की अमावस्या तक गिनो।

(2) जो गिनती प्राप्त हो उसे 3/2 से गुणा करो।

(3) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उसमें गत इष्ट तिथि को जोड़ दो।

(4) जो योग प्राप्त हो उसे 7 से भाग दो।

(5) शेष फल जो प्राप्त हो उसे वार के राजा से उक्त शेष तक गिनो, अभीष्ट वार प्राप्त होगा।

उदाहरणार्थ : (1) संवत् 2065 में मार्गशीर्ष मास शुक्लपक्ष की द्वितीया को कौन सा वार होगा?

● सर्वप्रथम चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से गत मास की अमावस्या तक गिना तो संख्या 8 प्राप्त हुई।

● 8 को 3/2 से गुणा किया तब संख्या 12 आई।

● 12 में गत इष्ट तिथि को जोड़ा अर्थात् 12+1 = 13

● अब 13 में 7 का भाग दिया तो शेष 6 रहा।

● अब संवत् 2065 के राजा चंद्र अर्थात् सोमवार से गिना तो सोमवार से छठा दिन शनिवार आया।

अत: उक्त तिथि को शनिवार था।

विशेष : पाठकों की विशेष सुविधा के लिए कुछ वर्षों के राजा वार दिए जा रहे हैं, जिसमें कि कहीं खोजना न पड़े।

संवत् : 2051

राजा वार : सोम

संवत् : 2052

राजा वार : शनि

संवत् : 2053

राजा वार : बुध

संवत् : 2054

राजा वार :

संवत् : 2055

राजा वार : शनि

संवत् : 2056

राजा वार : गुरु

संवत् : 2057

राजा वार : बुध

संवत् : 2058

राजा वार : सोम

संवत् : 2059

राजा वार : शनि

संवत् : 2060

राजा वार : बुध

संवत् : 2061

राजा वार : रवि

संवत् : 2062

राजा वार : शनि

संवत् : 2063

राजा वार : गुरु

संवत् : 2064

राजा वार : चंद्र

संवत् : 2065

राजा वार : चंद्र

संवत् : 2066

राजा वार : शुक्र

उक्त संवत् के अतिरिक्त जिस संवत् का राजावार ज्ञात करना हो तब यह ज्ञात करिए कि किस वार को चैत्र माह की शुक्ल प्रतिपदा आरंभ हो रही है। वही उस संवत् का राजा वार होगा।

नक्षत्र ज्ञान:

सूत्र:(1) गत माह की पूर्णिमा के नक्षत्र से इष्ट तिथि की संख्या ज्ञात की।

(2) जो संख्या प्राप्त हो, उस संख्या तक पूर्णिमा के नक्षत्र से गिनने पर नक्षत्र प्राप्त हो जाएगा ।

नक्षत्र ज्ञान :

सूत्र :(1) गत माह की पूर्णिमा के नक्षत्र से इष्ट तिथि की संख्या ज्ञात की।

(2) जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या तक पूर्णिमा के नक्षत्र से गिनने पर नक्षत्र प्राप्त हो जाएगा।

उदाहरणार्थ : (1) पौष मास, कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि को कौन सानक्षत्रथा?

- पौष मास से पूर्व मार्गशीर्ष मास की पूर्णिमा को मृगशिरा नक्षत्र था।
- मृगशिरा नक्षत्र से तृतीया तिथि अर्थात् संख्या 3 प्राप्त हुई।
- पूर्णिमा के नक्षत्र मृगशिरा से तीसरा नक्षत्र पुनर्वसु प्राप्त हुआ।

अत: पौष मास कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र था।

(2) भाद्रपद मास, शुक्लपक्ष की अष्टमी को कौन सा नक्षत्र था?

- भाद्रपद से पूर्व माह श्रावण मास की पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र था।
- श्रावण नक्षत्र से शुक्ल पक्ष की अष्टमी तक 23 संख्या प्राप्त हुई।
- पूर्णिमा के नक्षत्र श्रवण से 23वाँ नक्षत्र ज्येष्ठा प्राप्त हुआ।

अत: भाद्रपद मास, शुक्लपक्ष की अष्टमी को ज्येष्ठा नक्षत्र था।

करण ज्ञान

सूत्र :(1) शुक्ल प्रतिपदा से इष्ट तिथि तक गिनकर संख्या प्राप्त करो।

(2) उक्त संख्या को 2 से गुणा करो।

(3) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या में 1 घटाकर 7 का भाग दो।

(4) भाग देने पर जो शेष बचे वे क्रम से चर करण (1) बव (2) बालव (3) कौलव (4) तैतिल (5) गर (6) वणिज और (7) विष्टि प्राप्त होंगे।

(5) उक्त चर करण तिथि के उत्तराद्‌र्ध में प्राप्त होंगे।

(6) तिथि के पूर्वाद्‌र्ध में उक्त करण के पूर्व का करण प्राप्त होगा।

(7) स्थिर करण के लिए जो संख्या में चार हैं—

(i) शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तिथि के पूर्वाद्‌र्ध में किंस्तुघ्न स्थिर करण प्राप्त होगा।

(ii) कृष्णपक्ष की अमावस्या तिथि के पूर्वाद्‌र्ध में चतुष्पद स्थिर करण प्राप्त होगा।

(iii) कृष्णपक्ष की अमावस्या तिथि के उत्तराद्‌र्ध में नाग स्थिर करण प्राप्त होगा।

(iv) कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तराद्‌र्ध में शकुनि स्थिर करण प्राप्त होगा।

उदाहरणार्थ : (1) आषाढ़ मास के कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि को कौन सा करण होगा?

- शुक्ल प्रतिपदा से कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि तक 18 संख्या प्राप्त हुई।
- 18 को 2 से गुणा किया तब संख्या 36 प्राप्त हुई।
- 36 में से 1 घटाया तब संख्या 35 प्राप्त हुई।
- 35 में से 7 का भाग दिया।
- शेष 7 या 0 प्राप्त हुआ।
- अर्थात् 7वाँ करण अर्थात् विष्टि करण हुआ।
- उक्त विष्टि करण तिथि के उत्तराद्‌र्ध में हुआ।

● तिथि के पूर्वाद्र्ध में विष्टि के पूर्व वणिज नामक करण हुआ।

अत: उक्त अभीष्ट तिथि के पूर्वार्द्ध में वणिज एवं उत्तराद्र्ध में विष्टि नामक करण हुआ।

विशेष : स्थिर करण शकुनि, चतुष्पद, नाग एवं किंस्तुघ्न निम्न तिथियों में स्थिर रहते हैं।

1. शुक्लपक्ष की प्रतिपदा:पूर्वाद्र्ध में किंस्तुघ्न (स्थिर) उत्तराद्र्ध में बव (चर)अमावस्या:पूर्वाद्र्ध में चतुष्पद (स्थिर)

2. कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को:पूर्वाद्र्ध में विष्टि (चर) उत्तराद्र्ध में शकुनि (स्थिर)

योग ज्ञान :

सूत्र :(1) अभीष्ट तिथि का सूर्य नक्षत्र ज्ञात करो।

(2) अभीष्ट तिथि का चंद्र नक्षत्र ज्ञात करो।

(3) पुष्य नक्षत्र से सूर्य नक्षत्र तक दोनों नक्षत्रों को मिलाते हुए संख्या ज्ञात करो।

(4) श्रवण नक्षत्र से चंद्र नक्षत्र तक दोनों नक्षत्रों को मिलाते हुए संख्या ज्ञात करो।

(5) क्रम सं.—3 एवं क्रम सं.—4 में जो संख्या प्राप्त हो उसको जोड़ें तथा जो योगफल प्राप्त हो उसे 27 से भाग दें। जो शेष प्राप्त हो उसी क्रम से विष्कुंभ, प्रीति आदि योग होगा।

विशेष : नक्षत्रों के घट—बढ़ जाने से इसमें कभी—कभी एक दिन का अंतर पड़ जाता है।

उदाहरणार्थ : (1) संवत् 2065 में फाल्गुन मास शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को कौन सा योग था?

● उक्त तिथि में सूर्य नक्षत्र देख—शतभिषा था।

● उक्त तिथि में चंद्र नक्षत्र देखो—रेवती था।

● पुष्य से सूर्य नक्षत्र अर्थात् शतभिषा तक प्राप्त संख्या—17

● श्रवण से चंद्र नक्षत्र अर्थात् रेवती तक प्राप्त संख्या—06

● योग 17+06 = 23+27 = 23 शेष रहा

● 23वाँ योग शुभ है।

अत: उक्त तिथि को शुभ नामक योग था।

उदाहरणार्थ : संवत् 2065 में कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की पंचमी को कौन सा योग था?

● उक्त तिथि में सूर्य नक्षत्र—चित्रा

● उक्त तिथि में चंद्र नक्षत्र—मृगशिरा

● पुष्य से सूर्य नक्षत्र चित्रा तक प्राप्त संख्या = 7

● श्रवण से चंद्र नक्षत्र मृगशिरा तक प्राप्त संख्या = 10

● योग 7+10 = 17+27 = 17 शेष रहा

● 17वाँ योग व्यतिपात है।

पंचांग देखने पर व्यतिपात योग चतुर्थी तिथि को था (नक्षत्रों के घट—बढ़ जाने से कभी—कभी एक दिन का अंतर हो जाता है)।

चंद्र राशि ज्ञान

सूत्र :(1) इष्ट तिथि को 2 से गुणा करो।

(2) यदि तिथि शुक्लपक्ष की है तो 5 जोड़ो तथा यदि तिथि कृष्णपक्ष की है तो 35 जोड़ो।

(3) जोड़कर जो संख्या प्राप्त हो उसको 5 से भाग करो।

(4) भाग करने पर जो लब्धि प्राप्त हो उस संख्या तक, सूर्य जिस राशि में हो उस संख्या से गिनती गिनो। चंद्र प्राप्त हो जाएगी।

उदाहरणार्थ : संवत् 2065 में पौष मास के कृष्णपक्ष की सप्तमी को चंद्र किस राशि में था।

- इष्ट तिथि सप्तमी अर्थात् $7 \times 2 = 14$
- तिथि कृष्णपक्ष की है, अत: $14 + 35 = 49$
- 49 को 5 से भाग दिया तो लब्धि 9 प्राप्त हुआ।
- उक्त तिथि को सूर्य धनु राशि में स्थित है। अत: धनु राशि से क्रम से 9 तक गिना तो सिंह राशि प्राप्त हुई।
- अत: उक्त तिथि को चंद्र सिंह राशि में संचरण कर रहा है।

तारीख से तिथि निकालना : दिनांक से तिथि निकालने का सूत्र है—

= विशेषांक + दिनांक + मास संख्या = अभीष्ट तिथि।

यदि उक्त योगफल 1 से 15 तक आता है तो अभीष्ट तिथि शुक्लपक्ष की होगी और यदि 16 से 30 तक आता है तो अभीष्ट तिथि कृष्णपक्ष की होगी। यदि योगफल 30 से अधिक आता है तो योगफल में 30 घटाकर शुक्लपक्ष एवं कृष्णपक्ष का निर्धारण करेंगे।

उक्त सूत्र में सर्वप्रथम विशेषांक ज्ञात करने की रीति को समझते हैं।

- सर्वप्रथम विशेषांक ज्ञात करने के लिए सुवर्णांक ज्ञात करना होगा।
- सुवर्णांक ज्ञात करने का सूत्र है = $\frac{\text{अभीष्ट वर्ष} + 1}{19}$

जो शेष बचे वह सुवर्णांक हुआ।

नीचे दी गई सारणी में सुवर्णांक के सम्मुख जो विशेषांक अंकित हो वह उस अभीष्ट वर्ष का विशेषांक हुआ।

सुवर्णांक— 1—2—3—4—5—6—7—8—9—10—11—12—13—14

विशेषांक— 0—11—22—3—14—25—6—17—28—9—20—1—12—23

सुवर्णांक— 15—16—17—18—19

विशेषांक— 4—15—26—7—18

मास संख्या में आरंभ माह मार्च का होगा, अर्थात् मार्च से अभीष्ट माह तक गिनती करने पर जो संख्या प्राप्त होगी वह मास संख्या होगी।

उदाहरणार्थ : 9 अप्रैल, 2008 को कौन सी तिथि है?

- सर्वप्रथम सुवर्णांक प्राप्त किया, अर्थात्

$\frac{\text{अभीष्ट वर्ष} \quad 1}{19} \quad \frac{2008 \quad 1}{19} \quad \frac{2009}{19}$ शेष रहा 14

अत: सुवर्णांक प्राप्त हुआ 14

उपर्युक्त सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि सुवर्णांक 14 के सम्मुख विशेषांक 23 अंकित है, अतः विशेषांक हुआ 23।

● मास संख्या = माह मार्च से अभीष्ट माह अप्रैल तक गिनने पर मास संख्या 2 प्राप्त हुई।

● दिनांक से तिथि ज्ञात करने का सूत्र

विशेषांक + दिनांक + मास संख्या = तिथि

= 23+9+2

= 34

चूँकि उक्त योगफल 30 से अधिक है, अतः 34—30 = 4

अतः अभीष्ट तिथि शुक्लपक्ष की चतुर्थी है। चूँकि उक्त संख्या 4 प्राप्त हुई, जो 1 से 15 के मध्य में है, अतः उक्त चतुर्थी तिथि का पक्ष शुक्ल हुआ।

उदाहरणार्थ : 27 मई, 2008 को कौन सी तिथि है?

● सर्वप्रथम सुवर्णांक प्राप्त किया अर्थात्

$\frac{\text{अभीष्ट वर्ष} \quad 1}{19} \quad \frac{2008 \quad 1}{19} \quad \frac{2009}{19}$ शेष रहा 14

अतः सुवर्णांक प्राप्त हुआ 14

● उपर्युक्त दी हुई सारणी देखने से ज्ञात हुआ कि सुवर्णांक 14 के सम्मुख —विशेषांक 23 अंकित है, अतः विशेषांक 23 हुआ।

● मास संख्या माह = मार्च से अभीष्ट माह मई तक गिनने पर मास संख्या —3 प्राप्त हुई।

● दिनांक से तिथि ज्ञात करने का सूत्र

= विशेषांक + दिनांक + मास संख्या

= 23+27+3

= 53

चूँकि उक्त योगफल 30 से अधिक है, अतः 53 में से 30 घटाया तो 23

शेष रहा।

उक्त शेष 15 से 30 के मध्य है, अतः तिथि कृष्णपक्ष की होगी।

अब 23 में से 15 को घटाया तो 8 शेष रहा, अतः तिथि अष्टमी हुई।

अतः उक्त दिनांक 27 मई, 2008 को कृष्णपक्ष की अष्टमी थी।

अब अगर उक्त दिनांक का संवत् वर्ष ज्ञात करना हो तो सन् में 57 जोड़ने से संवत् वर्ष प्राप्त हो जाएगा । अतः 2008+57 = 2065 अतः 27 मई, 2008 को संवत् 2065 में कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि होगी।

अगर उक्त दिनांक का माह भी ज्ञात करना है तो निम्न सारणी के अनुसार माह ज्ञात किया जा सकता है—

हिंदी माह : 1. चैत्र

अंग्रेजी माह : मार्च/अप्रैल

हिंदी माह : 2. वैशाख

अंग्रेजी माह : अप्रैल/मई

हिंदी माह : 3. ज्येष्ठ

अंग्रेजी माह : मई/जून

हिंदी माह : 4. आषाढ़

अंग्रेजी माह : जून/जुलाई

हिंदी माह : 5. श्रावण

अंग्रेजी माह : जुलाई/अगस्त

हिंदी माह : 6. भाद्रपद

अंग्रेजी माह : अगस्त/सितंबर

हिंदी माह : 7. आश्विन

अंग्रेजी माह : सितंबर/अक्तूबर

हिंदी माह : 8. कार्तिक

अंग्रेजी माह : अक्तूबर/नवंबर

हिंदी माह : 9. मार्गशीर्ष

अंग्रेजी माह : नवंबर/दिसंबर

हिंदी माह : 10. पौष

अंग्रेजी माह : दिसंबर/जनवरी

हिंदी माह : 11. माघ

अंग्रेजी माह : जनवरी/फरवरी

हिंदी माह : 12. फाल्गुन

अंग्रेजी माह : फरवरी/मार्च

अत: माह मई के सापेक्ष हिंदी माह वैशाख एवं ज्येष्ठ अंकित हैं; परंतु माह मई की 27 तारीख है, जिसमें ज्येष्ठ माह उचित प्रतीत होता है।

अत: 27 मई, 2008 को संवत् 2065 के ज्येष्ठ मास कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि होगी।

दिनमान/रात्रिमान ज्ञान :

सूत्र :(1) सायन कर्क संक्रांति और सायन मकर संक्रांति से गत दिनों की संख्या ज्ञात करो।

(2) गत दिनों की जो संख्या प्राप्त हो उसे 3 से गुणा करो।

(3) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या में 1530 जोड़ो और 60 का भाग दो।

(4) भाग करने पर जो लब्धि मिले वह कर्क संक्रांति की गणना करने से रात्रिमान और मकर संक्रांति से गणना करने पर दिनमान प्राप्त होगा।

(5) 60 से भाग करने पर जो लब्धि प्राप्त होगी वह घड़ी तथा जो शेष प्राप्त होगा वह पल में रात्रिमान या दिनमान होगा।

(6) रात्रिमान/दिनमान = 60 — दिनमान/रात्रिमान।

(7) सायन कर्क संक्रांति 21 जून एवं सायन मकर संक्रांति 22 दिसंबर को होती है।

उदाहरणार्थ : 13 नवंबर, 2008 को दिनमान एवं रात्रिमान क्या था?

21 जून को सायन कर्क संक्रांति हुई थी तथा 23 नवंबर का दिनमान एवं रात्रिमान ज्ञात करनी है—

- माह जून के शेष दिन = 9
- माह जुलाई के शेष दिन = 31
- माह अगस्त के शेष दिन = 31
- माह सितंबर के शेष दिन = 30
- माह अक्तूबर के शेष दिन = 31
- माह नवंबर के शेष दिन = 13

कुल दिन = 145

- गत दिनों की संख्या = 145
- गत दिनों की संख्या 145 में 3 से गुणा किया संख्या = 435
- 435 में 1530 को जोड़ा = 1965
- 1965 में 60 का भाग दिया तो 32 घड़ी लब्धि एवं 45 पल शेष प्राप्त हुए।
- उक्त 32 घड़ी 45 पल रात्रिमान प्राप्त हुए, क्योंकि गणना कर्क संक्रांति से की गई है।
- अत: दिनमान = 60—रात्रिमान

= 60—32/45

= 27/15

अत: उक्त दिनांक को दिनमान 27 घड़ी 15 पल एवं रात्रिमान 32 घड़ी 45 पल हुए।

उदाहरणार्थ : 15 मार्च, 2008 का दिनमान एवं रात्रिमान क्या था?

22 दिसंबर को सायन मकर संक्रांति हुई थी तथा 15 मार्च का दिनमान एवं रात्रिमान ज्ञात करनी है।

माह दिसंबर के शेष दिन = 9

माह जनवरी के शेष दिन = 31

माह फरवरी के शेष दिन = 29

माह मार्च के शेष दिन = 15

कुल = 84

● गत दिनों की संख्या = 84
● 84×3 = 252 + 1530 = 1782
● 1782 को 60 से भाग करने पर लब्धि 29 घड़ी और शेष 42 पल प्राप्त हुए।
● क्योंकि गणना सायन मकर संक्रांति से की गई है, अत: उक्त 29 घड़ी 42 पल दिनमान प्राप्त हुआ।
● रात्रिमान = 60 — दिनमान = 60 — 29/42 = 30/18

अत: उक्त दिनांक को दिनमान 29 घड़ी 42 पल एवं रात्रिमान 30 घड़ी 18 पल प्राप्त हुआ।

सूर्य उदय/अस्त ज्ञान

सूत्र : (1) सर्वप्रथम जिस दिन का सूर्य उदय ज्ञात करना हो उस दिन का दिनमान ज्ञात कर लो।

(2) दिनमान को आधा कर लो।

(3) दिनमान को आधा करने पर जो संख्या प्राप्त होगी वह घड़ी—पल में होगी। घड़ी—पल को घंटा—मिनट में परिवर्तित करो।

(4) घंटा—मिनट में जो समय प्राप्त होगा वह समय सूर्योदय का होगा।

(5) 12 घंटा में से सूर्योदय का समय घटा दो तो सूर्यास्त का समय प्राप्त होगा।

विशेष : घड़ी—पल को घंटा—मिनट में परिवर्तन इस प्रकार किया जाता है।

1 घड़ी = 24 मिनट

2 पल = 1 मिनट

उदाहरणार्थ : 7 मई, 2008 को सूर्योदय एवं सूर्यास्त का समय क्या था?

● सर्वप्रथम 7 मई, 2008 का दिनमान ज्ञात किया।

दिनमान = 32 घड़ी 57 पल था।

● दिनमान को 2 से भाग दिया = 16 घड़ी 28 पल
● 16 घड़ी 28 पल को घंटा—मिनट में परिवर्तित किया तो 6 घंटा 40 मिनट प्राप्त हुआ।
● अत: उक्त दिनांक को सूर्योदय 6 बजकर 40 मिनट पर हुआ।
● सूर्यास्त = 12 — 6.40 = 5 घंटा 20 मिनट
● अत: उक्त दिनांक को सूर्यास्त 5 बजकर 20 मिनट सायंकाल को हुआ।

अयन ज्ञान : अयन ज्ञान दो प्रकार के होते हैं—उत्तरायण एवं दक्षिणायन। अयन पंचांग में सबसे ऊपर अंकित रहते हैं।

सूत्र :(1) सूर्य जब मकर राशि में प्रवेश करता है तब उत्तरायण आरंभ होता है तथा उत्तरायण सूर्य के मिथुन राशि की समाप्ति तक रहता है, अर्थात् कहा जाता है कि सूर्य उत्तरायण में है।

(2) सूर्य जब कर्क राशि में प्रवेश करता है तब दक्षिणायन आरंभ होता है तथा दक्षिणायन सूर्य के धनु राशि की समाप्ति तक रहता है, अर्थात् कहा जाता है कि सूर्य दक्षिणायन में है।

(3) उत्तरायण एवं दक्षिणायन वर्ष में 6—6 माह रहते हैं।

उदाहरणार्थ : 18 मई, 2008 को कौन सा अयन है? अर्थात् उक्त तिथि को सूर्य उत्तरायण में है या दक्षिणायन में, यह ज्ञात करना है।

● सर्वप्रथम यह ज्ञात किया कि 18 मई, 2008 को सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है। उक्त दिनांक को सूर्य वृष राशि में संचरण कर

रहा है।

● वृष राशि मकर राशि एवं कर्क राशि के मध्य पड़ती है।

● अत: सूर्य उत्तरायण में है।

उदाहरणार्थ : 8 अक्तूबर, 2008 को सूर्य किस अयन में स्थित है?

● सर्वप्रथम यह ज्ञात किया कि उक्त तिथि को सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है।

● उक्त दिनांक को सूर्य कन्या राशि में संचरण कर रहा है।

● कन्या राशि कर्क राशि एवं धनु राशि के मध्य आती है।

● अत: सूर्य दक्षिणायन में है।

गोल ज्ञान :

गोल दो प्रकार के होते हैं—उत्तर गोल एवं दक्षिण गोल। गोल भी पंचांग में सबसे ऊपर अंकित रहते हैं।

सूत्र : (1) सूर्य जब मेष राशि से कन्या राशि के मध्य संचरण करता है तो कहा जाएगा कि सूर्य उत्तर गोल में है।

(2) सूर्य जब तुला राशि से मीन राशि के मध्य संचरण करता है तो कहा जाएगा कि सूर्य दक्षिण गोल में है।

उदाहरणार्थ : 26 अगस्त, 2008 को सूर्य किस गोल में है?

● सर्वप्रथम यह ज्ञात किया कि उक्त दिनांक को सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है।

● उक्त दिनांक को सूर्य सिंह राशि में संचरण कर रहा है।

● सिंह राशि मेष राशि एवं कन्या राशि के मध्य में पड़ती है।

● अत: उक्त दिनांक को सूर्य उत्तर गोल में है।

ऋतु ज्ञान : 12 मास में 6 ऋतुएँ होती हैं, अर्थात् प्रत्येक ऋतु 2 मास की होती हैं।

सूत्र : (1) सर्वप्रथम यह ज्ञात कीजिए कि सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है।

(2) यदि सूर्य मीन या मेष राशि में है तो वसंत ऋतु

यदि सूर्य वृष या मिथुन राशि में है तो ग्रीष्म ऋतु

यदि सूर्य कर्क या सिंह राशि में है तो वर्षा ऋत

यदि सूर्य कन्या या तुला राशि में है तो शरद ऋत

यदि सूर्य वृश्चिक या धनु राशि में है तो हेमंत ऋत

यदि सूर्य मकर या कुंभ राशि में है तो शिशिर ऋतु।

उदाहरणार्थ : 12 सितंबर, 2008 को कौन सी ऋतु चल रही है?

● सर्वप्रथम ज्ञात किया कि उक्त दिनांक को सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है।

● सूर्य उक्त दिनांक को सिंह राशि में संचरण कर रहा है।

● अत: उक्त दिनांक को वर्षा ऋतु चल रही है, क्योंकि सूर्य जब कर्क और सिंह राशि में संचरण करता है तब वर्षा ऋतु होती है।

पंचक ज्ञान :

सूत्र :(1) सर्वप्रथम ज्ञात कीजिए कि चंद्र किस नक्षत्र में संचरण कर्रहा है।

(2) यदि चंद्र धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तरार्द्ध, शतभिष, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र में संचरण करता है, तब पंचक लगता है।

उदाहरणार्थ : 7 मार्च, 2008 को पंचक की स्थिति क्या थी?

- सर्वप्रथम उक्त तिथि में यह ज्ञात किया कि चंद्र किस नक्षत्र में संचरण कर रहा है।
- उक्त तिथि में चंद्र शतभिष नक्षत्र में संचरण कर रहा है।
- अत: उक्त तिथि में पंचक लगा था।

भद्रा ज्ञान :

सूत्र : शुक्लपक्ष में चतुर्थी, अष्टमी, एकादशी एवं पूर्णमासी तिथियों में तथा कृष्णपक्ष की तृतीया, सप्तमी, दशमी एवं चतुर्दशी तिथियों में भद्रा का निवास्रहता है।

लग्न ज्ञान : जैसा कि हम जानते हैं कि एक दिन में 24 घंटे होते हैं तथा 12 राशियाँ क्रम से पूर्वी क्षितिज पर उदित होती रहती हैं। इस प्रकार प्रत्येक लग्न लगभग 2 घंटे रहती है। विभिन्न लग्नों का समय क्रम से इस प्रकार है—

लग्न : 1. मेष

समय (घंटा—मिनट) : 01—38

लग्न : 2. वृष

समय (घंटा—मिनट) : 02—00

लग्न : 3. मिथुन

समय (घंटा—मिनट) : 02—14

लग्न : 4. कर्क

समय (घंटा—मिनट) : 02—17

लग्न : 5. सिंह

समय (घंटा—मिनट) : 02—14

लग्न : 6. कन्या

समय (घंटा—मिनट) : 02—13

लग्न : 7. तुला

समय (घंटा—मिनट) : 02—16

लग्न : 8. वृश्चिक

समय (घंटा—मिनट) : 02—17

लग्न : 9. धनु

समय (घंटा—मिनट) : 02—06

लग्न : 10. मकर

समय (घंटा—मिनट) : 01—45

लग्न : 11. कुंभ

समय (घंटा—मिनट) : 01—31

लग्न : 12. मीन

समय (घंटा—मिनट) : 01—29

लग्न : 1. मेष

समय (घंटा—मिनट) : 01—38

लग्न : 2. वृष

समय (घंटा—मिनट) : 02—00

लग्न : 3. मिथुन

समय (घंटा—मिनट) : 02—14

लग्न : 4. कर्क

समय (घंटा—मिनट) : 02—17

लग्न : 5. सिंह

समय (घंटा—मिनट) : 02—14

लग्न : 6. कन्या

समय (घंटा—मिनट) : 02—13

लग्न : 7. तुला

समय (घंटा—मिनट) : 02—16

लग्न : 8. वृश्चिक

समय (घंटा—मिनट) : 02—17

लग्न : 9. धनु

समय (घंटा—मिनट) : 02—06

लग्न : 10. मकर

समय (घंटा—मिनट) : 01—45

लग्न : 11. कुंभ

समय (घंटा—मिनट) : 01—31

लग्न : 12. मीन

समय (घंटा—मिनट) : 01—29

योग : 12 लग्न

समय (घंटा—मिनट) : 24—00

सूत्र : सर्वप्रथम वर्ष को दो भागों में बाँटकर दो सूत्र प्रतिपादित करेंगे।

● प्रथम भाग में माह जनवरी से माह जून तक

● द्वितीय भाग में माह जुलाई से माह दिसंबर तक

● सूत्र सन् 2009 के लिए प्रमाणित है।

● यदि वर्ष 2009 से पीछे के वर्षों या आगे के वर्षों के लिए लग्न ज्ञात करनी है तो प्रति वर्ष 1 मिनट की दर से क्रमशः घटाएँगे या जोड़ेंगे।

● यदि लग्न माह जनवरी से जून के मध्य ज्ञात करनी है तो 12 घंटा 40 मिनट—4 (कुल दिवस 1 जनवरी से)

● यदि लग्न माह जुलाई से दिसंबर के मध्य ज्ञात करनी है तो

24 घंटा 45 मिनट—4 (कुल दिवस 1 जुलाई से)

उदाहरणार्थ : दिनांक 19 सितंबर, 2008 को 7—25 पी.एम. पर क्या लग्न थी?

● चूँकि उक्त तिथि माह जुलाई से दिसंबर के मध्य आती है, अतः सूत्र

24 घंटा 44 मिनट—4 (कुल दिवस 1 जुलाई से)

● 1 जुलाई से 19 सितंबर तक कुल दिवस 81

= 24 घंटा 44 मिनट — 4 (81)

= 24 घंटा 44 मिनट — (324)

= 24 घंटा 44 मिनट — 5 घंटा 24 मिनट

= 19 घंटा 20 मिनट

अर्थात् उक्त तिथि को 7.20 पी.एम. पर मेष लग्न उदित हुई होगी।

हमारा अभीष्ट समय 7.25 पी.एम. है, अत: 7.25 पी.एम. मेष लग्न होगी।

उदाहरणार्थ : दिनांक 13.04.2008 को 2.15 पी.एम. पर क्या लग्न थी?

चूँकि उक्त तिथि माह जनवरी से जून के मध्य आती है, अत: सूत्र

= 12 घंटा 39 मिनट — 4 (कुल दिवस 1 जनवरी से)

= 1 जनवरी से 13 अप्रैल तक कुल दिवस = 104

= 12 घंटा 39 मिनट — 4 (104)

= 12 घंटा 39 मिनट — (416)

= 12 घंटा 39 मिनट — 6 घंटा 56 मिनट

= 5 घंटा 43 मिनट

अर्थात् उक्त तिथि को 5.43 ए.एम. पर मेष लग्न उदित हुई होगी।

अत: उक्त तिथि को 5.43 ए.एम. पर मेष लग्न उदित हुई; परंतु हमारा अभीष्ट समय 2.15 पी.एम. पर लग्न ज्ञात करना है, अत: 5.43 ए.एम. से उक्त लग्न समय सारणी की मदद से लग्न को अभीष्ट समय तक बढ़ाना शुरू किया।

05—43 ए.एम. पर मेष लग्न आरंभ

+ 01—38 मेष लग्न काल

07—22 ए.एम. पर मेष लग्न समाप्ति

+ 02—00 वृष लग्न काल

09—22 ए.एम. पर वृष लग्न समाप्ति

+ 02—14 मिथुन लग्न काल

11—36 ए.एम. पर मिथुन लग्न समाप्ति

+ 02—17 कर्क लग्न काल

13—53 पर कर्क लग्न समाप्ति

+ 02—14 सिंह लग्न काल

16—07 सिंह लग्न समाप्ति

उक्त से स्पष्ट है कि अभीष्ट समय 02—15 पी.एम. सिंह लग्न में पड़ता है, अत: उक्त तिथि को उक्त समय पर सिंह लग्न थी।

लग्न ज्ञान की दूसरी विधि :

सूत्र :(1) सर्वप्रथम यह ज्ञात करेंगे कि अभीष्ट तिथि को सूर्य किस राशि में संचरण कर रहा है।

(2) उक्त के बाद यह ज्ञात करेंगे कि अभीष्ट समय पर सूर्य किस भाव पर स्थित है।

(3) उक्त दोनों के आधार पर सूर्य का भाव एवं राशि ज्ञात होने पर लग्न पर कौन सी राशि उदित हो रही है, ज्ञात हो जाएगी।

विशेष : सूर्य का विभिन्न राशियों में संचरण निम्न प्रकार है—
(कभी—कभी सूर्य का राशि में प्रवेश तिथि में एक दिन का अंतर आ जाता है)

राशि : 1. मेष

राशि प्रवेश तिथि : 13 अप्रैल

राशि : 2. वृष

राशि प्रवेश तिथि : 14 मई

राशि : 3. मिथुन

राशि प्रवेश तिथि : 14 जून

राशि : 4. कर्क

राशि प्रवेश तिथि : 16 जुलाई

राशि : 5. सिंह

राशि प्रवेश तिथि : 16 अगस्त

राशि : 6. कन्या

राशि प्रवेश तिथि : 16 सितंबर

राशि : 7. तुला

राशि प्रवेश तिथि : 16 अक्तूबर

राशि : 8. वृश्चिक

राशि प्रवेश तिथि : 16 नवंबर

राशि : 9. धनु

राशि प्रवेश तिथि : 15 दिसंबर

राशि : 10. मकर

राशि प्रवेश तिथि : 14 जनवरी

राशि : 11. कुंभ

राशि प्रवेश तिथि : 13 फरवरी

राशि : 12. मीन

राशि प्रवेश तिथि : 14 मार्च

● सूर्य का विभिन्न भावों में प्रवेश काल निम्न प्रकार है—

प्रथम भाव—जब सूर्य उदय होता है

दशम भाव—जब सूर्य मध्याह्न में होता है।

सप्तम भाव—जब सूर्य अस्त होता है

चतुर्थ भाव—जब सूर्य मध्य रात्रि में होता है।

सूर्य एक दिन में 12 भावों में संचरण करता है, अत: 24 घंटे में 12 भावों में विचरण करते हुए एक भाव में लगभग 2 घंटे सूर्य स्थित रहता है, जिसका
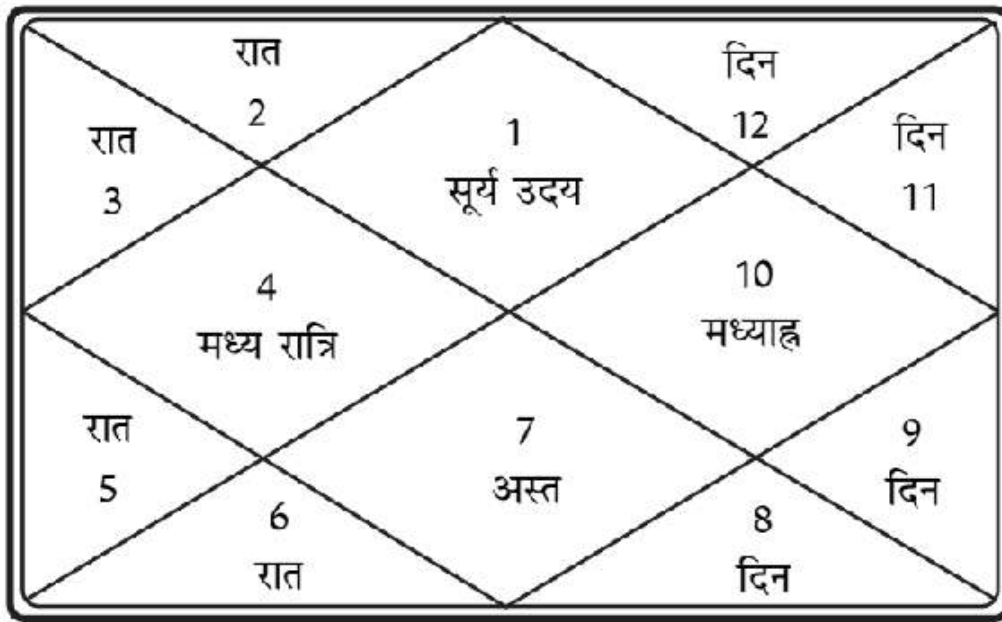
भावानुसार हम इस प्रकार समझते हैं।

यदि सूर्योदय प्रात: 6 बजे हुआ तो 6 से 8 ए.एम. तथा सूर्य लग्न में 8 से 10 ए.एम. सूर्य बारहवें भाव में 10 से 12 पी.एम. तक सूर्य ग्यारहवें भाव में 12 से 2 पी.एम. तक सूर्य दशम भाव में 2 से 4 पी.एम. तक सूर्य नवम भाव में 4 से 6 पी.एम. तक सूर्य अष्टम भाव में 6 से 8 पी.एम. तक सूर्य सप्तम भाव में 8 से 10 पी.एम. तक सूर्य षष्ठ भाव में, 10 से 12 पी.एम. तक सूर्य पंचम भाव में 12 से 2 ए.एम. तक सूर्य चतुर्थ भाव में 2 से 4 ए.एम. तक सूर्य तृतीय भाव में तथा 4 से 6 ए.एम. तक सूर्य द्वितीय भाव में स्थित रहेगा।

यह सूर्य की स्थिति तब होगी जब सूर्य प्रात: 6 बजे उदय हो तथा सायं 6 बजे अस्त हो परंतु सूर्य उदय एवं अस्त का समय परिवर्तित होता रहता है, इसलिए उसी अनुपात में सूर्य का भाव में संचरण समय भी बदलता रहता है।

उदाहरणार्थ : दिनांक 13.04.2008 को 2.15 पी.एम. पर क्या लग्न थी?

● सर्वप्रथम सूर्य प्रवेश राशि चार्ट से ज्ञात किया कि सूर्य 13 अप्रैल को मेष राशि में प्रवेश करता है। अत: उक्त दिनांक को सूर्य मेष राशि पर था।

● उक्त के बाद ज्ञात किया कि 2.15 पी.एम. पर सूर्य किस भाव पर स्थित होगा। उक्त समय पर सूर्य नवम भाव पर स्थित होगा।

● उक्त दोनों बिंदुओं से ज्ञात हुआ कि उक्त दिनांक एवं समय पर सूर्य नवम भाव में मेष राशि पर होगा।

● अत: जब नवम भाव में मेष राशि होगी तब लग्न पर सिंह राशि ही होगी।

अत: उक्त तिथि एवं समय पर लग्न में सिंह राशि उदित होगी।

नवांश ज्ञान

सूत्र :(1) राशि का तत्त्व ज्ञात करो।

(2) (i) यदि राशि अग्नि तत्त्व में है तो मेष नवांश से प्रारंभ होगा।

(ii) यदि राशि पृथ्वी तत्त्व में है तो मकर नवांश से प्रारंभ होगा।

(iii) यदि राशि वायु तत्त्व में है तो तुला नवांश से प्रारंभ होगा।

(iv) यदि राशि जल तत्त्व में है तो कर्क नवांश से प्रारंभ होगा।

(3) जितनी डिग्री दी हो उसी अनुपात में मेष/मकर/तुला/कर्क से गिनती करने पर अभीष्ट नवांश ज्ञात हो जाएगा ।

उदाहरणार्थ : गुरु सिंह राशि के 16° पर स्थित है। ज्ञात कीजिए, गुरु किस राशि के नवांश में है?

● गुरु सिंह राशि पर स्थित है, अत: गुरु अग्नि तत्त्व राशि पर है।

● चूँकि गुरु अग्नि तत्त्व राशि पर है, अत: नवांश की गणना मेष से प्रारंभ होगी।

● गुरु सिंह राशि के 16° पर है। जैसा कि हम जानते हैं कि 3°—20' पर प्रथम नवमांश 6'—40' पर दूसरा... इसी क्रम में 16° पाँचवें नवांश पर स्थित होगा।

● अब मेष राशि से पाँचवाँ नवांश सिंह का होगा।

● अत: गुरु सिंह राशि के 16° पर सिंह नवांश पर होगा।

उदाहरणार्थ : गुरु वृश्चिक राशि के 29° पर स्थित है। ज्ञात कीजिए, गुरु किस नवांश में है?

● गुरु वृश्चिक राशि पर स्थित है, अत: गुरु जल तत्त्व की राशि पर है।

● चूँकि गुरु जल तत्त्व राशि पर है, अत: नवांश की गणना कर्क से प्रारंभ होगी।

● गुरु वृश्चिक राशि के 29° पर है, अत: गिनती करने पर नौवाँ नवांश आया।

● अब कर्क राशि से नौवाँ नवांश गिनने पर मीन नवांश प्राप्त हुआ।

● अत: गुरु वृश्चिक राशि के 29° पर मीन नवांश पर होगा।

ग्रह ज्ञान : ग्रह ज्ञान के लिए मुख्यत: निम्न बिंदुओं पर ध्यान देना अनिवार्य है—

(1) ग्रहों की मासिक एवं वार्षिक गति।

(2) कुछ प्रमुख वर्षों के ग्रह गोचर की स्थिति।

(3) बुध एवं शुक्र सदैव सूर्य से क्रमश: 23° एवं 48° के अंतराल पर ही संचरण करते हैं।

(4) अधिक—से—अधिक जन्मांग का अध्ययन करना, जिससे ग्रहों की विभिन्न वर्षों की स्थिति का ज्ञान होना।

(5) नियमित रूप से पंचांग का अवलोकन करना।

● ग्रहों की मासिक एवं वार्षिक गति निम्न प्रकार है—

सूर्य की मासिक गति—एक राशि में एक माह

चंद्र की मासिक गति—एक राशि में सवा दो दिन

मंगल की मासिक गति—एक राशि में 1½ माह

बुध की मासिक गति—एक राशि में एक माह

गुरु की मासिक गति—एक राशि में एक वर्ष

शुक्र की मासिक गति—एक राशि में एक माह

शनि की मासिक गति—एक राशि में 2½ वर्ष

राहु/केतु की मासिक गति—एक राशि में 1½ वर्ष।

उक्त ग्रहों की गति औसत आधार पर है। इसी आधार पर सूर्य, बुध एवं शुक्र 1 वर्ष में पूरे **भचक्र** का भ्रमण करते हैं।

मंगल 1½ वर्ष में, गुरु 12 वर्ष में, शनि 30 वर्ष में तथा राहु—केतु 18 वर्ष में **भचक्र** का भ्रमण करते हैं।

● अगर कुछ वर्षों की ग्रह गोचर स्थिति का ज्ञान हो तो उसी आधार पर हम अभीष्ट वर्ष की गोचर स्थिति ज्ञात कर सकते हैं। कुछ वर्षों की गोचर स्थिति निम्न प्रकार है—

वर्ष : 1980

मंगल : सिंह राशि

गुरु : कन्या राशि

शनि : कन्या राशि

राहु : सिंह राशि

वर्ष : 1985

मंगल : कुंभ राशि

गुरु : धनु राशि

शनि : वृश्चिक राशि

राहु : वृष राशि

वर्ष : 1990

मंगल : वृश्चिक राशि

गुरु : मिथुन राशि

शनि : धनु राशि

राहु : मकर राशि

वर्ष : 1995

मंगल : सिंह राशि

गुरु : वृश्चिक राशि

शनि : कुंभ राशि

राहु : तुला राशि

वर्ष : 2000

मंगल : कुंभ राशि

गुरु : मेष राशि

शनि : मेष राशि

राहु : कर्क राशि

वर्ष : 2005

मंगल : वृश्चिक राशि

गुरु : कन्या राशि

शनि : कर्क राशि

राहु : मेष राशि

वर्ष : 2010

मंगल : कर्क राशि

गुरु : कुंभ राशि

शनि : कन्या राशि

राहु : धनु राशि

● जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक 20 वर्ष बाद गुरु एवं शनि एक ही राशि पर भ्रमण करते हैं। गुरु एवं शनि का विभिन्न वर्षों में निम्न राशियों पर संचरण—

वर्ष : 1940

राशि : मेष/वृष

वर्ष : 1960

राशि : धनु/मकर

वर्ष : 1980

राशि : कन्या

वर्ष : 2000

राशि : मेष/वृष

वर्ष : 2020

राशि : धनु/मकर

● **सूर्य ग्रह ज्ञान :** सूर्य का विभिन्न राशियों में संचरण काल लगभग समान रहता है। पृष्ठ सं 65 पर सूर्य का माहवार संचरण काल अंकित है, जिसके आधार पर सूर्य की राशि का ज्ञान हो जाएगा ।

● **चंद्र ग्रह ज्ञान :** पृष्ठ संख्या 125 पर चंद्र राशि ज्ञान अंकित है जिसके आधार पर चंद्र की राशि का ज्ञान हो जाएगा ।

● **मंगल ग्रह ज्ञान :** जैसा कि हम जानते हैं कि औसतन मंगल एक राशि में 1½ वर्ष संचरण करता है। इस आधार पर तथा पीछे दिए गए मंगल की विभिन्न वर्षों की गोचर स्थिति के आधार पर मंगल की स्थिति ज्ञात कर सकते हैं।

● **बुध ग्रह ज्ञान :** जैसा कि हम जानते हैं कि बुध ग्रह सूर्य से 22°/23° से दूर नहीं जाता है। अत: बुध ग्रह की स्थिति सूर्य के आस—पास अर्थात् सूर्य से या तो द्वितीय या द्वादश या सूर्य के साथ ही होगी।

● **गुरु ग्रह ज्ञान :** गुरु वर्ष में एक राशि या 12 वर्ष में एक भचक्र पूरा कर लेता है तथा पीछे दिए गए गुरु की विभिन्न वर्षों की गोचर स्थिति के आधार पर गुरु की स्थिति ज्ञात कर सकते हैं।

● **शुक्र ग्रह ज्ञान :** जैसा कि हम जानते हैं कि शुक्र ग्रह सूर्य से 48° के आस—पास ही विचरण करता है। अत: शुक्र ग्रह की स्थिति सूर्य से दो भाव आगे या पीछे ही होगी।

● **शनि ग्रह ज्ञान :** शनि 2½ वर्ष में एक राशि या 30 वर्ष में एक भचक्र पूरा कर लेता है तथा गत पृष्ठ में दी गई शनि की विभिन्न वर्षों की गोचर स्थिति के आधार पर शनि की स्थिति ज्ञात कर सकते हैं।

● **राहु ग्रह ज्ञान :** राहु 1½ वर्ष में एक राशि या 18 वर्ष में एक भचक्र पूरा करता है तथा गत पृष्ठ में दी गई विभिन्न वर्षों की गोचर स्थिति से राहु की स्थिति ज्ञात कर सकते हैं।

● **केतु ग्रह ज्ञान :** जैसा कि हम जानते हैं कि केतु सदैव राहु के सामने अर्थात् राहु से सप्तम भाव पर स्थित होता है। अत: राहु की स्थिति जिस राशि पर हो उसके सप्तम राशि पर केतु की स्थिति होगी।

विंशोत्तरी दशा ज्ञान

यह दशा 120 वर्ष की मानी गई है, जिसमें सूर्य आदि 9 ग्रहों की दशा सम्मिलित है। इसके अंतर्दशा प्रत्यंतर्दशा, सूक्ष्म दशा एवं प्राणपद दशा आदि भेद होते हैं।

1. महादशा ज्ञान : जातक के जन्म के समय चंद्र जिस नक्षत्र में स्थित होता है उसी नक्षत्र स्वामी की महादशा जन्म से होती है।

जन्म नक्षत्र द्वारा ग्रह दशा—बोधक चक्र एवं ग्रहों की दशा वर्ष इस प्रकार्है—

ग्रह : वर्ष

सूर्य : 6

चंद्र : 10

भौम : 7

राहु : 18

गुरु : 16

शनि : 19

बुध : 17

केतु : 7

शुक्र : 20

ग्रह : नक्षत्र

सूर्य : कृत्तिका

चंद्र : रोहिणी

भौम : मृग.

राहु : आर्द्रा

गुरु : पुन.

शनि : पुष्य

बुध : आश्.

केतु : मघा

शुक्र : पू.फा.

ग्रह :

सूर्य : उ. फा.

चंद्र : हस्त

भौम : चित्रा

राहु : स्वाती

गुरु : विशा.

शनि : अनु.

बुध : ज्ये.

केतु : मूल

शुक्र : पू. षा.

ग्रह :

सूर्य : उ.षा.

चंद्र : श्रवण

भौम : धनिष्ठा

राहु : शत.

गुरु : पू.मा.

शनि : उ.भ्रा.

बुध : रेवती

केतु : अशि

शुक्र : भरणी

उदाहरणार्थ : किसी जातक का जन्म नक्षत्र पुष्य है तो ज्ञात कीजिए कि जन्म के समय किस ग्रह की महादशा थी?

● चूँकि जन्म के समय जन्म नक्षत्र पुष्य है, जिसका स्वामी शनि ग्रह है, अत: जन्म के समय जातक की महादशा शनि ग्रह की थी।

2. अंतर्दशा ज्ञान : प्रत्येक ग्रह की महादशा में 9 ग्रह की अंर्तदशा होती है तथा जिस ग्रह की महादशा में अंतर्दशा ज्ञात करनी होती है सबसे पहले उसी ग्रह की अंतर्दशा प्रारंभ होती है तथा फिर क्रम से 9 ग्रह की अंतर्दशा ज्ञात करते हैं।

सूत्र :(1) महादशा के ग्रह के वर्ष तथा जिस ग्रह की अंतर्दशा ज्ञात करनी हो उसके वर्ष को आपस में गुणा करें।

(2) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उसको 10 से भाग दें।

(3) 10 से भाग करने पर जो लब्धि प्राप्त होगी वह अंतर्दशा का मास होगा।

(4) 10 से भाग करने पर जो शेष प्राप्त होगा उसको 3 से गुणा करने पर अंतर्दशा के दिवस प्राप्त होंगे।

उदाहरणार्थ : सूर्य की महादशा में मंगल की अंतर्दशा कितने मास एवं दिन की होगी?

● जैसा कि हम जानते हैं कि सूर्य की महादशा में मंगल की अंतर्दशा ज्ञात करनी है।

सूर्य के दशा वर्ष = 6

मंगल के दशा वर्ष = 7

सूर्य के दशा वर्ष × मंगल के दशा वर्ष अर्थात् 6×7 = 42

● 42 को 10 से भाग दिया।

● 10 से भाग करने पर 4 लब्धि एवं 2 शेष रहा।

● लब्धि अंतर्दशा के मास होते हैं, अत: सूर्य की महादशा में मंगल की अंतर्दशा 4 मास।

● शेष 2 था, जिसको 3 से गुणा करने पर संख्या 6 प्राप्त हुई। यहाँ 6 दिवस हुए।

● अत: सूर्य की महादशा में मंगल की अंतर्दशा 4 मास 6 दिन हुए।

3. प्रत्यंतर्दशा ज्ञान : प्रत्येक ग्रह की अंर्तदशा में 9 ग्रह की प्रत्यंतर्दशा होती है तथा जिस ग्रह की अंतर्दशा में प्रत्यंतर्दशा ज्ञात करनी होती है सबसे पहले उसी ग्रह की प्रत्यंतर्दशा प्रारंभ होती है तथा फिर क्रम से 9 ग्रह की प्रत्यंतर्दशा ज्ञात करते हैं।

सूत्र :(1) महादशा के ग्रह के वर्ष, अंतर्दशा के ग्रह के वर्ष तथा प्रत्यंतर्दशा ग्रह के वर्ष को आपस में गुणा करें।

(2) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या को 40 से भाग्दें।

(3) 40 से भाग करने पर जो लब्धि प्राप्त होगी वह प्रत्यंतर्दशा के दिन होंगे।

(4) 40 से भाग करने पर जो शेष प्राप्त हे उसे 60 से गुणा करें।

(5) 60 से गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उसे 40 से भाग दें।

(6) 40 से भाग करने पर जो लब्धि प्राप्त होगी वह प्रत्यंतर्दशा की घटी होगी।

उदाहरणार्थ : सूर्य की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर्दशा ज्ञात करनी है।

● सूर्य के दशा वर्ष—6

मंगल के दशा वर्ष—7

सूर्य के दशा वर्ष × सूर्य के दशा वर्ष × मंगल के दशा वर्ष

6×6×7 = 252

● 252 को 40 से भाग दिया

● 252 को 40 से भाग करने पर लब्धि 6 तथा शेष 12 प्राप्त हुए।

● उक्त प्राप्त लब्धि 6, सूर्य की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में तथा मंगल की प्रत्यंतर्दशा में 6 दिन हुए।

● 40 से भाग करने पर जो शेष 12 प्राप्त हुए, उसको 60 से गुणा किया 60×12 = 720

● प्राप्त संख्या 720 को 40 से भाग करने पर 18 लब्धि हुई।

● उक्त प्राप्त लब्धि 18 उक्त प्रत्यंतर्दशा की 18 घटी हुई।

● अत: सूर्य महादशा में, सूर्य की अंतर्दशा में मंगल की प्रत्यंतर्दशा 6 दिन 18 घटी रही।

4. सूक्ष्म दशा ज्ञान : प्रत्येक ग्रह की प्रत्यंतर्दशा में 9 ग्रह की सूक्ष्म दशा होती है तथा जिस ग्रह की प्रत्यंतर्दशा में सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी होती है सबसे पहले उसी ग्रह की सूक्ष्म दशा प्रारंभ होती है तथा फिर क्रम से 9 ग्रह की सूक्ष्म दशा ज्ञात करते हैं।

सूत्र :(1) जिस ग्रह की प्रत्यंतर्दशा से सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी है उस प्रत्यंतर्दशा के मास, दिन, घटी को परिवर्तित करो।

(2) उक्त प्राप्त घटी को जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी हो उस ग्रह के दशा वर्ष से गुणा करो।

(3) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या को 60 से भाग करो।

(4) 60 से भाग देने पर जो लब्धि एवं शेष प्राप्त हो उसको 2 से भाग दो।

(5) 2 से भाग करने पर जो संख्या प्राप्त हो वह सूक्ष्म दशा के घटी—पल प्राप्त होंगे।

उदाहरणार्थ : सूर्य की महादशा में, सूर्य की अंतर्दशा में, सूर्य के प्रत्यंतर में सूर्य की सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी है?

● सर्वप्रथम सूर्य महादशा में सूर्य की अंतर्दशा ज्ञात करेंगे।

सूर्य की दशा × सूर्य की दशा

अर्थात् 6×6 = 36÷10 = 3 लब्धि 6 शेष

शेष को 3 से गुणा किया अर्थात् 6×3 = 18

लब्धि मास अर्थात् 3 मास 18 दिन

● सूर्य महादशा में सूर्य के अंतर में सूर्य का प्रत्यंतर

सूर्य की दशा × सूर्य की दशा × सूर्य की दशा

= 6 × 6 × 6 = 216 ÷ 40 = 5 लब्धि 16 शेष

16× 60 = 960 ÷ 40 = 24

अर्थात् 5 दिन 24 घटी

● सूक्ष्म दशा ज्ञात करने के लिए सूर्य प्रत्यंतर

5 दिन 24 घटी को घटी में परिवर्तित करेंगे।

= 5 दिन = 5×60 घटी = 300 घटी + 24 घटी = 324 घटी

● उक्त 324 घटी को जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी है उसके दशा वर्ष से गुणा करेंगे।

● माना सूर्य प्रत्यंतर में सूर्य की सूक्ष्म दशा ज्ञात करनी है।

अत: उक्त प्राप्त 324 घटी को सूर्य दशा वर्ष 6 से गुणा करो।

अर्थात् 324 × 6 = 1944

● 6 से गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त हुई उस संख्या को 60 से भाग करो।

अर्थात् 1944 ÷ 60 = 32 लब्धि 24 शेष

अर्थात् 32 घटी 24 पल

● उक्त 32 घटी 24 पल को 2 से भाग किया = 16 घटी 12 पल

अत: सूर्य के प्रत्यंतर में सूर्य की सूक्ष्म दशा 16 घटी 12 पल रहेगी।

5. प्राण दशा ज्ञान : प्रत्येक ग्रह की सूक्ष्म दशा में 9 ग्रह की प्राण दशा होती है तथा जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा में प्राण दशा ज्ञात करनी होती है, सबसे पहले उसी ग्रह की प्राण दशा प्रारंभ होती है तथा फिर क्रम से 9 ग्रह की प्राण दशा ज्ञात करते हैं।

सूत्र :(1) जिस ग्रह की सूक्ष्म दशा में प्राण दशा ज्ञात करनी है, सूक्ष्म दशा के समय को पल में परिवर्तित करते हैं।

(2) उक्त प्राप्त पल को जिस ग्रह की प्राण दशा ज्ञात करनी है, उसके दशा वर्ष से गुणा करते हैं।

(3) गुणा करने पर जो संख्या प्राप्त होती है उस संख्या को 60 से भाग देते हैं।

(4) 60 से भाग करने पर जो संख्या प्राप्त हो उस संख्या को 2 से भाग दो।

(5) 2 से भाग करने पर जो संख्या प्राप्त हो वह प्राण दशा के पल—विपल प्राप्त होंगे।

उदाहरणार्थ : सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राण दशा ज्ञात करनी है।

● सूर्य की सूक्ष्म दशा 16 घटी 12 पल है। उक्त घटी—पल को पल में परिवर्तित करो, अर्थात्—

16 × 60 +12 = 972 पल

● चूँकि सूर्य की प्राण दशा ज्ञात करनी है, अत: उक्त प्राप्त पल को सूर्य की दशा वर्ष से गुणा करेंगे।

अर्थात् 972 × 6 = 5832

● उक्त गुणा करने से जो संख्या प्राप्त हुई उस संख्या को 60 से भाग करो।

अर्थात् 5832 ÷ 60 = 97 पल 12 विपल

● 60 से भाग करने पर जो संख्या प्राप्त हुई उसको 2 से भाग करो।

अर्थात् 97 पल 12 विपल ÷ 2 = 48 पल 36 विपल

अत: सूर्य की सूक्ष्म दशा में सूर्य की प्राण दशा 48 पल 36 विपल रहेगी।

विशेष ज्ञान

उक्त मौखिक ज्ञान की जो विधियाँ बतलाई गई हैं वह स्थूल ज्ञान है, सूक्ष्म ज्ञान तो गणित प्रक्रिया के शास्त्रीय विधि द्वारा ही प्राप्त होगा तथा मौखिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए अभ्यास की भी आवश्यकता है। जितना अधिक अभ्यास होगा उतना ही शीघ्र एवं सटीक परिणाम प्राप्त होगा।

जन्मांग से जन्म समय आदि का ज्ञान

कभी—कभी ऐसा होता है कि हमारे पास मात्र जन्मांग चक्र ही उपलब्ध होता है, उस जन्मांग से संबंधित जन्म—तिथि एवं जन्म—समय ज्ञात नहीं होता है। अत: ऐसी परिस्थिति में मात्र जन्मांग चक्र के आधार पर जातक की आयु, जन्म मास, तिथि, नक्षत्र आदि का ज्ञान किस प्रकार करेंगे, उसकी रीति समझाते हैं। उक्त आदि का ज्ञान हम स्थूल रूप से ही ज्ञात कर सकते हैं तथा वास्तविक आँकड़ों से इसमें कुछ भिन्नता भी हो सकती है।

वर्ष ज्ञान : किसी भी जन्मांग चक्र को देखकर जातक का जन्म वर्ष, शनि, गुरु एवं राहु के गोचर से ज्ञात कर सकते हैं।

गोचर के अनुसार शनि वर्ष में, $2\frac{1}{2}$ गुरु 1 वर्ष में तथा राहु $1\frac{1}{2}$ वर्ष में एक राशि पूरी करता है तथा शनि 29—30 वर्ष में, गुरु 12 वर्ष में तथा राहु 18 वर्ष में एक भचक्र को पूरा करता है।

उक्त के अतिरिक्त वर्तमान में गुरु, शनि एवं राहु किस राशि में संचरण कर रहे हैं, उसको ज्ञात करने के लिए जन्मांग में स्थित शनि, गुरु एवं राहु के साथ सामंजस्य स्थापित कर वर्ष का ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।
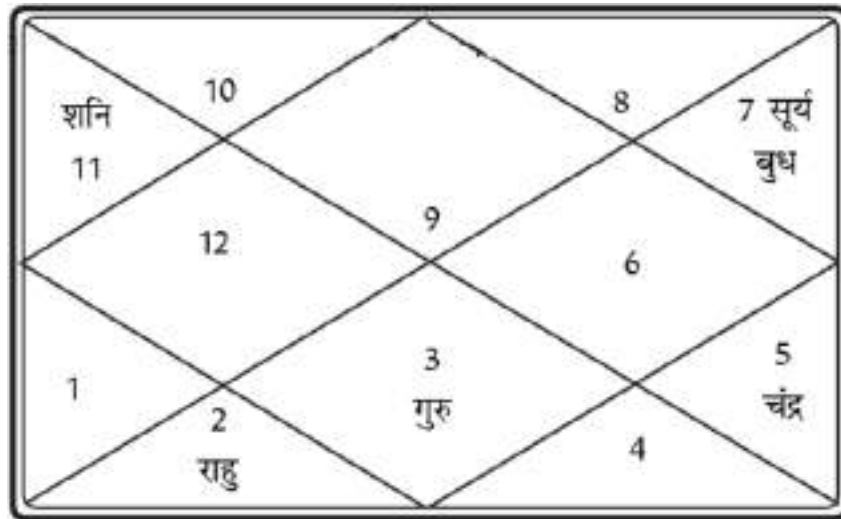
उदाहरणार्थ : सम्मुख जन्मांग में शनि कुंभ राशि का है तथा वर्तमान समय में (सितंबर—08) शनि सिंह राशि में स्थित है। अत: जातक की आयु की संभावना हो सकती है।

(1) 14—15 वर्ष (शनि के एक चक्र के बाद)

(2) 43—44 वर्ष (शनि के दूसरे चक्र के बाद)

शनि के बाद गुरु की स्थिति से जातक की आयु की निम्न संभावना हो सकती है—

जन्मांग में गुरु मिथुन राशि में स्थित है, जबकि वर्तमान समय में गुरु धनु राशि में स्थित है।

(i) 6—7 वर्ष

(ii) 17—18 वर्ष (गुरु के एम चक्र के बाद)

(iii) 29—30 वर्ष (गुरु के दूसरे चक्र के बाद)

(iv) 42—43 वर्ष (गुरु के तीसरे चक्र के बाद)

(v) 54—55 वर्ष (गुरु के चौथे चक्र के बाद)

शनि, गुरु के बाद राहु की स्थिति से जातक की आयु की निम्न संभावना हो सकती है। जन्मांग में राहु वृष राशि में स्थित है तथा वर्तमान में राहु मकर राशि में स्थित है—

(1) 11—12 वर्ष

(2) 26—27 वर्ष (राहु के एक चक्र के बाद)

(3) 43—44 वर्ष (राहु के दूसरे चक्र के बाद)

(4) 60—61 वर्ष (राहु के तीसरे चक्र के बाद)

उपर्युक्त शनि, गुरु एवं राहु से जो आयु की संभावना हुई, उसमें 43 वर्ष या 44 वर्ष तीनों में समान रूप से है। अत: जातक का जन्म

वर्ष—2008 — 43 वर्ष = 1965

या वर्ष—2008 — 44 वर्ष = 1964

अत: हम कह सकते हैं कि जातक का जन्म या तो सन् 1964 में या 1965 में हुआ होगा।

संवत् 2065—43 या 44 = 2022 या 2023

2. मास ज्ञान : जन्मांग में स्थित सूर्य राशि से चंद्र मास का ज्ञान किया जाता है। निम्न चक्रानुसार हम सूर्य राशि से चंद्र मास का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

सूर्य राशि : 1. मेष

चंद्र मास : वैशाख

अंग्रेजी माह : अप्रैल/मई

सूर्य राशि : 2. वृष

चंद्र मास : ज्येष्ठ

अंग्रेजी माह : मई/जून

सूर्य राशि : 3. मिथुन

चंद्र मास : आषाढ़

अंग्रेजी माह : जून/जुलाई

सूर्य राशि : 4. कर्क

चंद्र मास : श्रावण

अंग्रेजी माह : जुलाई/अगस्त

सूर्य राशि : 5. सिंह

चंद्र मास : भाद्रपद

अंग्रेजी माह : अगस्त/सितंबर

सूर्य राशि : 6. कन्या

चंद्र मास : आश्विन

अंग्रेजी माह : सितंबर/अक्तूबर

सूर्य राशि : 7. तुला

चंद्र मास : कार्तिक

अंग्रेजी माह : अक्तूबर/नवंबर

सूर्य राशि : 8. वृश्चिक

चंद्र मास : मार्गशीर्ष

अंग्रेजी माह : नवंबर/दिसंबर

सूर्य राशि : 9. धनु

चंद्र मास : पौष

अंग्रेजी माह : दिसंबर/जनवरी

सूर्य राशि : 10. मकर

चंद्र मास : माघ

अंग्रेजी माह : जनवरी/फरवरी

सूर्य राशि : 11. कुंभ

चंद्र मास : फाल्गुन

अंग्रेजी माह : फरवरी/मार्च

सूर्य राशि : 12. मीन

चंद्र मास : चैत्र

अंग्रेजी माह : मार्च/अप्रैल

प्रस्तुत जन्मांग में सूर्य तुला राशि में है। उपर्युक्त चार्ट में देखने पर ज्ञात हुआ कि तुला राशि के सम्मुख कार्तिक मास अंकित है तथा अंग्रेजी माह अक्तूबर/नवंबर अंकित है।

अत: जातक का जन्म कार्तिक मास में हुआ है।

3. पक्ष ज्ञान : यदि जन्मांग में चंद्र, सूर्य से 7 राशि के मध्य में स्थित हो तब शुक्लपक्ष समझना और यदि चंद्र, सूर्य से 7 राशि के बाहर हो तब कृष्णपक्ष का जन्म समझना चाहिए।

प्रस्तुत जन्मांग में सूर्य तुला राशि में तथा चंद्र सिंह राशि में स्थित है। यहाँ पर चंद्र सूर्य से 7 राशि के बाहर स्थित है, क्योंकि चंद्र सूर्य से ग्यारहवीं राशि पर स्थित है।

अत: जातक का जन्म कृष्णपक्ष में हुआ, ऐसा समझना चाहिए।

4. तिथि ज्ञान : जैसा कि हम जानते हैं कि जब चंद्र सूर्य में 12 अंश का अंतर होता है तब एक तिथि पूर्ण होती है तथा जैसे—जैसे यह अंतर बढ़ता जाता है, उसी अनुपात में तिथियाँ क्रमश: बढ़ती जाती हैं।

स्थूल रूप से चंद्र 30 दिन में 12 राशि पूर्ण कर लेता है, अर्थात् 1 राशि पूर्ण करने में 2½ दिन का समय लेता है।

प्रस्तुत जन्मांग में चंद्र सिंह राशि में एवं सूर्य तुला राशि में स्थित है तथा जातक का जन्म कृष्णपक्ष में हुआ है, जैसा कि पक्ष ज्ञान में हम पक्ष निकाल चुके हैं।

जब चंद्र तुला राशि में पहुँचेगा तब वह तिथि अमावस्या होगी; परंतु जन्मांग में चंद्र एवं सूर्य के बीच एक राशि का अंतर है, अर्थात् 2½ दिन का अंतर है।

अमावस्या अर्थात् 15—2½ = 12½ तिथि

परंतु कुछ समय चंद्र सिंह राशि को पूर्ण करने में तथा कुछ समय सूर्य के अंशों पर पहुँचने में लगेगा। इस आधार पर हमने 12वीं तिथि अर्थात् द्वादशी तिथि को मान लिया।

अत: जातक का जन्म द्वादशी तिथि को हुआ।

5. समय ज्ञान : जैसा कि हम जानते हैं कि जन्म—समय का ज्ञान सूर्य किस भाव में स्थित है, से ज्ञात कर लेते हैं, सूर्य की भाव—स्थिति के अनुसार समय निम्न प्रकार हैं—

प्रथम भाव—सूर्योदय के समय—अर्थात् 6—8 ए.एम.

बारहवाँ भाव—दिन का समय—अर्थात् 8—10 ए.एम.

ग्यारहवाँ भाव—दिन का समय—अर्थात् 10—12 ए.एम.

दशम भाव—मध्याह्न का समय—अर्थात् 12—2 पी.एम.

नवम भाव—दिन का समय—अर्थात् 2—4 पी.एम.

अष्टम भाव—दिन का समय—अर्थात् 4—6 पी.एम.

सप्तम भाव—सूर्यास्त का समय—अर्थात् 6—8 पी.एम.

षष्ठ—भाव—रात्रि का समय—अर्थात् 8—10 पी.एम.

पंचम भाव—रात्रि का समय—अर्थात् 10—12 पी.एम.

चतुर्थ भाव—मध्य रात्रि का समय—अर्थात् 12—2 ए.एम.

तृतीया भाव—रात्रि का समय—अर्थात् 2—4 एएम.

द्वितीया भाव—रात्रि का समय—अर्थात् 4—6 ए.एम.

प्रस्तुत जन्मांग में सूर्य ग्यारहवें भाव में स्थित है, अत: उक्त चार्ट के अनुसार जातक का जन्म समय 10 बजे से 12 बजे दिन के मध्य में है।

6. चंद्र नक्षत्र ज्ञान : जैसा कि हम जानते हैं कि जातक का जन्म कार्तिक माह, कृष्णपक्ष की द्वादशी को हुआ है, अत: हमको उक्त तिथि का नक्षत्र ज्ञात करना है।

● कार्तिक माह से पूर्व आश्विन माह की पूर्णमासी को आश्विन नक्षत्र था।

- आश्विन नक्षत्र से इष्ट तिथि अर्थात् आश्विन नक्षत्र से 12वाँ नक्षत्र तक् गिना।
- आश्विन से 12वाँ नक्षत्र उ. फाल्गुनी आता है।

अत: जातक का जन्म उ. फाल्गुनी या पू. फाल्गुनी में हुआ है, क्योंकि कभी—कभी तिथि क्षय या वृद्धि से एक नक्षत्र का अंतर पड़ जाता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि प्रस्तुत जन्मांग में चंद्र सिंह राशि में स्थित है। सिंह राशि में मघा, पू. फाल्गुनी एवं उ. फाल्गुनी नक्षत्र मिलते हैं।

अत: जातक का जन्म नक्षत्र पू. फाल्गुनी या उ. फाल्गुनी ही है।

❑

पंचांग अवलोकन ज्ञान

पंचांग के पाँचों अंगों को समझने के पश्चात् आइए, अब देखें कि पंचांग को देखने की विधि क्या है? जैसा कि हम जानते हैं कि काल चक्र के पाँचों अंगों के अन्योन्याश्रित संबंधों की गणना एवं विश्लेषण करनेवाले शास्त्र को पंचांग कहते हैं। एक उदाहरण को लेकर उस तिथि के समस्त गणितीय मान एवं उस तिथि से संबंधित समस्त सूचनाओं की विधि को समझते हैं। उदाहरण के लिए, दिनांक 27 मार्च, 2009 से संबंधित समस्त पंचांग विवरण ज्ञात करते हैं। उक्त दिनांक में समस्त आँकड़े चिंता हरण पंचांग संवत् 2065—66 से लिये गए हैं तथा उक्त पंचांग के आधार पर उक्त दिनांक का पंचांग विवरण निम्न प्रकार है—

सर्वप्रथम उक्त पंचांग का माह मार्च 2009, जो उक्त पंचांग के पृष्ठ सं. 24 पर है, का अवलोकन किया। उक्त पृष्ठ सं. 24 पर पृष्ठ के सबसे ऊपर माह, पक्ष, संवत्, शाके, अयन, गोल, ॠतु तथा क्रम से स्तंभों में वार, तिथि, नक्षत्र, योग, करण, चंद्र राशि प्रवेश, दिनमान, सूर्योदय आदि विवरण अंकित हैं और पृष्ठ सं. 25 पर क्रम से स्तंभों में वार, उदया तिथि, सौर मास, हिजरी मास तिथि सहित, राष्ट्रीय मास तिथि सहित, अंग्रेजी तिथि एवं उक्त तिथि के सम्मुख तिथि का विवरण जैसे प्रमुख त्योहार, प्रमुख योग, प्रमुख जयंती, प्रमुख व्रत, ग्रहों के उदय/अस्त पंचक आदि का वर्णन अंकित रहता है।

उक्त के क्रम में पृष्ठ सं. 26 पर क्रम से स्तंभों में नव ग्रहों के प्रतीक चिह्न, ग्रह के नक्षत्र संचरण, संचरण नक्षत्रों के चरण, ग्रहों के नवांश राशि तथा दैनिक लग्न प्रवेश सारणी, जो माह की प्रत्येक तिथि में मेष से लेकर मीन लग्न सभी 12 लग्नों का प्रवेश समय अंकित है। तत्पश्चात् पृष्ठ सं. 27 पर क्रम से स्तंभों में माह का नाम दिनांक सहित, संपातिक काल, दैनिक स्पष्ट सूर्य, दैनिक क्रांति, प्रात: 5 बजकर 30 मिनट पर स्पष्ट चंद्र, फिर सायं 5 बजकर 30 मिनट पर स्पष्ट चंद्र, स्पष्ट मंगल, स्पष्ट बुध, स्पष्ट गुरु, स्पष्ट शुक्र, स्पष्ट शनि, स्पष्ट राहु, स्पष्ट हर्शल, स्पष्ट नेप्च्यून तथा स्पष्ट प्लूटो आदि ग्रहों के मान अंश, कला व विकला में अंकित रहते हैं। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि उक्त सभी ग्रहों के जो मान अंश, कला, विकला में अंकित रहते हैं वे सभी प्रात: 5 बजकर 30 मिनट के समय के स्पष्ट मान होते हैं। प्रात: 5 बजकर 30 मिनट से आगे के समय के उक्त ग्रहों के मान ग्रहों की दैनिक चाल के आधार पर त्रैराशिक विधि से ज्ञात कर लेते हैं। उक्त ग्रहों के स्तंभ पर यदा—कदा अगर 'डी' अंकित है तो इसका अर्थ है कि जिस तिथि तथा जिस ग्रह के स्तंभ पर 'D' अंकित है उस तिथि से वह ग्रह Direct अर्थात् मार्गी हो गया है तथा जहाँ 'R' अंकित है तो इसका अर्थ है कि जिस तिथि के सम्मुख 'R' अंकित हो उस तिथि से वह ग्रह Retrograde अर्थात् वह ग्रह वक्री हो गया है।

उक्त पृष्ठ सं. 27 पर सबसे नीचे तीन चक्र बने हुए हैं। इनमें से प्रथम चक्र पूर्णमासी तिथि का, दूसरा चक्र सूर्य की संक्रांति तिथि का तथा तीसरा चक्र अमावस्या तिथि का बना होता है।

इस प्रकार उक्त विवरण से स्पष्ट है कि एक माह के पंचांग का विवरण चार पृष्ठों पर अंकित है। वांछित विषय—वस्तु के अनुसार माह से संबंधित तिथि के अनुसार सूचना एकत्रित कर लेते हैं। अब हम उक्त दिनांक 27 मार्च, 2009 से संबंधित सभी विषयों (पंचांग के अनुसार) की जानकारी पृष्ठ वार अंकित करते हैं। सर्वप्रथम पृष्ठ सं. 24 पर अंकित जानकारी निम्नानुसार है—

1. माह : फाल्गुन शुल्क 4 से चैत्र शुक्ल 5 तक

अर्थात् उक्त पृष्ठ फाल्गुन माह के शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि से लेकर चैत्र माह के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि से संबंधित है।

2. संवत् 2065—66! अर्थात् उक्त माह में विक्रम संवत् 2065—66 चल रहा है।

3. शके 1930—31 अर्थात् उस माह में शाके संवत् 1930—31 चल रहा है।

4. उत्तरायण : इसका अर्थ है कि उक्त माह में सूर्य उत्तरायण में है।

5. दक्षिण गोल : अर्थात् सूर्य उस माह दक्षिण गोल में स्थित है।

6. वसंत ऋतु : इसका अर्थ है कि वर्ष की 6 ऋ तुओं में उक्त माह में वसंत ऋतु चल रही है।

उक्त क्रम से 1 से 6 तक का विवरण पृष्ठ के सबसे ऊपरी भाग पर अंकित है। अब हम दिनांक 27 मार्च, 2009 का पंचांग विवरण स्तंभ वार देखते हैं।

1. वार—शुक्रवार
2. पक्ष—शुक्लपक्ष
3. माह—चैत्र माह
4. तिथि—प्रतिपदा

तिथि के आगे घटी—पल तथा घंटा—मिनट में तिथि का मान अंकित है, अर्थात् प्रतिपदा तिथि 27 मार्च, 2009 को 36 घटी 32 पल या 20 घंटा 35 मिनट तक रहेगी तत्पश्चात् द्वितीया तिथि आरंभ हो जाएगी।

5. नक्षत्र—रेवती : रेवती नक्षत्र के आगे घटी—पल तथा घंटा—मिनट में नक्षत्र का मान अंकित है, अर्थात् रेवती नक्षत्र 58 घटी 3 पल या 29 घंटा 11 मिनट तक रहेगा तत्पश्चात् अश्विनी नक्षत्र प्रारंभ हो जाएगा।

6. योग—ब्रह्म : ब्रह्म योग के आगे 16 घटी 36 पल तथा 12 घंटा 36 मिनट उक्त योग का मान लिखा है। इसका अर्थ है कि उक्त योग प्रतिपदा तिथि को 16 घटी 36 पल या 12 घंटा 36 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् ऐंद्र योग प्रारंभ हो जाएगा।

7. करण—किंस्तुघ्न एवं बव : जैसा कि हम जानते हैं कि एक तिथि में दो करण होते हैं, उसी के अनुरूप प्रथम किंस्तुघ्न करण के आगे 9 घंटा 5 मिनट तथा बव के आगे 20 घंटा 35 मिनट अंकित है। इसका अर्थ है कि किंस्तुघ्न करण प्रतिपदा तिथि को 9 घंटा 5 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् बव करेगा प्रारंभ हो जाएगा जो प्रतिपदा तिथि को 20 घंटा 35 मिनट तक रहेगा, तत्पश्चात् वालव करण प्रारंभ हो जाएगा ।

8. चंद्र राशि—मेष : मेष राशि के आगे 29 घंटा 11 मिनट अंकित है। इसका अर्थ है कि प्रतिपदा तिथि को चंद्र मेष राशि में 29 घंटा 11 मिनट पर प्रवेश करेगा, उक्त समय से पूर्व चंद्र मीन राशि पर संचरण करेगा। इस स्तंभ में चंद्र राशि प्रवेश का समय अंकित रहता है।

9. दिनमान : दिनमान का मान घटी—पल में अंकित रहता है। जैसा कि हम जानते हैं कि एक अहोरात्र में 60 घटी होता है, अत: 60 घटी में से दिनमान का मान घटाने से रात्रिमान का मान ज्ञात हो जाता है। यहाँ पर दिनमान का मान 30 घटी 24 पल अंकित है, जिसका अर्थ है कि दिन का मान अर्थात् सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का मान 30 घटी 24 पल है। रात्रिमान ज्ञात करने के लिए 60 घटी में से 30 घटी 24 पल घटाया तो रात्रिमान का मान 29 घटी 36 पल प्राप्त हुआ।

10. सूर्योदय : पंचांग में भारतीय प्रामाणिक समय के अनुसार काशी में सूर्योदय से संबंधित तीन स्तंभों में सूर्योदय का समय, मध्याह्न का समय तथा सूर्यास्त का समय अंकित है, जो निम्नानुसार है। उक्त तिथि को काशी में सूर्योदय का समय प्रात: 5 बजकर 58 मिनट, मध्याह्न सूर्य का समय 12 बजकर 3 मिनट 21 सेकंड तथा सूर्यास्त का समय सायं 6 बजकर 8 मिनट अंकित है।

पृष्ठ सं. 24 के पश्चात् पंचांग के पृष्ठ सं. 25 पर अंकित जानकारी का विवरण निम्न प्रकार है—

1. वार : प्रथम स्तंभ में वार 'शुक्रवार' अंकित है।

2. उदया तिथि : द्वितीय स्तंभ में किस दिनांक को कौन सी तिथि उदय हो रही है, का विवरण अंकित रहता है। दिनांक 27 मार्च, 2009 को 'प्रतिपदा' उदया तिथि अंकित है, जिसका अर्थ है कि उक्त दिनांक को प्रतिपदा तिथि उदय हो रही है।

3. सौर मास : तृतीय स्तंभ में सौर फाल्गुन मास की 13 तिथि अंकित है।

4. हिजरी माह : चतुर्थ स्तंभ में हिजरी माह तिथि सहित अंकित है। उक्त दिनांक के सम्मुख हिजरी मास 'रबीउलअव्वल' की 29 तिथि अंकित है।

5. राष्ट्रीय मास : पंचम स्तंभ में राष्ट्रीय चैत्र मास की षष्ठी तिथि अंकित है।

6. अंग्रेजी तिथि : इस अंतिम स्तंभ में अंग्रेजी तिथि 27 मार्च अंकित है।

7. विवरण : तिथि के सम्मुख तिथि का विवरण जैसे चैत्र शुक्लपक्ष आरंभ, पंचक समाप्त घंटा 29 मिनट 11 बजे, वसंत नवरात्र आरंभ, विक्रम संवत् 2066 प्रारंभ आदि। इसका अर्थ है कि 27 मार्च, 2009 से चैत्र माह का शुक्लपक्ष प्रारंभ हो गया है। प्रतिपदा तिथि में घंटा 29 मिनट 11 बजे से पंचक समाप्त हो जाएगा। इस दिन से वसंत नवरात्र प्रारंभ हो गया तथा हिंदुओं का नव वर्ष विक्रम संवत् 2066 प्रारंभ हो गया है।

उक्त के क्रम में पंचांग के पृष्ठ सं. 26 पर अंकित जानकारी निम्नानुसार्है—

1. माह : प्रथम स्तंभ में माह मार्च तिथि सहित अंकित है।

2. ग्रह : द्वितीय स्तंभ में प्रत्येक तिथि के सम्मुख ग्रहों के नाम अंकित हैं।

3. प्रतीक चिह्न : द्वितीय स्तंभ में अंकित ग्रहों के प्रतीक चिह्न अंकित हैं।

4. नक्षत्र राशि : चतुर्थ स्तंभ में द्वितीय स्तंभ में अंकित ग्रह किस नक्षत्र में स्थित है, अंकित है।

5. चरण : पंचम स्तंभ में, चतुर्थ स्तंभ में अंकित नक्षत्र किस चरण में हैं, अंकित है।

6. नवांश : द्वितीय स्तंभ में अंकित ग्रह किस नवांश में है, अंकित है।

उक्त के अनुसार 27 मार्च, 2009 को वक्री शुक्र उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में तथा तुला राशि के नवांश में है, ऐसा समझा जाएगा। उक्त छह स्तंभ के पश्चात् दैनिक लग्न प्रवेश सारणी अंकित है, जिसकी सहायता से माह मार्च में दिनांक 1 से लेकर दिनांक 31 तक किसी भी समय में कौन सी लग्न उदय हो रही है, को सुगमता से ज्ञात कर सकते हैं।

दैनिक लग्न प्रवेश सारणी के प्रथम स्तंभ में माह तिथि व वार सहित अंकित है, प्रथम स्तंभ के आगे के स्तंभों में क्रम से मेष से लेकर मीन सभी द्वादश लग्नों का प्रवेश समय अंकित है। उदाहरणार्थ 29 मार्च, 2009 को

मेष लग्न का प्रारंभ 6 बजकर 50 मिनट 46 सेकंड

तथा मेष लग्न की समाप्ति 8 बजकर 29 मिनट अंकित है।

वृष लग्न का प्रारंभ 8 बजकर 29 मिनट तथा

वृष लग्न की समाप्ति 10 बजकर 26 मिनट

मिथुन लग्न का प्रारंभ 10 बजकर 26 मिनट तथा

मिथुन लग्न की समाप्ति 12 बजकर 39 मिनट अंकित है।

इसी प्रकार 27 मार्च, 2009 को पूरे दिन के सभी द्वादश लग्नों का प्रवेश समय एवं समाप्ति समय उक्तानुसार समझा जा सकता है।

उक्त पृष्ठ सं. 24, 25 व 26 के पश्चात् पृष्ठ सं. 27 पर अंकित जानकारी का विवरण निम्नानुसार है—

पृष्ठ सं. 27 पर प्रथम स्तंभ में माह, तिथि वार सहित अंकित है। द्वितीय स्तंभ में संपातिक काल, तृतीय स्तंभ में स्पष्ट सूर्य, चतुर्थ स्तंभ में दैनिक क्रांति तथा आगे के स्तंभों में क्रमवार चंद्र ग्रह से लेकर प्लूटो ग्रह के तिथि वार अंश, कला, विकला में मान अंकित किए हैं। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि तिथि वार ग्रहों के जो मान अंश, कला, विकला में अंकित हैं वे मान सुबह 5 बजकर 30 मिनट के हैं। यदि हमें सुबह 5 बजकर 30 मिनट के आगे किसी भी समय का किसी भी ग्रह का स्पष्ट मान ज्ञात करना हो तो संबंधित ग्रह के दैनिक गति के आधार पर त्रैराशिक विधि से किसी भी समय का किसी भी ग्रह का स्पष्ट मान ज्ञात कर सकते हैं।

1. माह : प्रथम स्तंभ में माह का नाम तिथि एवं वार के सहित अंकित है।

2. संपातिक काल : द्वितीय स्तंभ में घंटा, मिनट, सेकंड में संपातिक काल अंकित है।

3. दैनिक स्पष्ट सूर्य : तृतीय स्तंभ में माह की प्रत्येक तिथि का सूर्य का मान राशि, अंश, कला, विकला में है। जैसे 27 मार्च, 2009 को सूर्य का मान 11—12—28—7 अंकित है। इसका अर्थ है कि उक्त तिथि को सुबह 5 घंटा 30 मिनट पर सूर्य मीन राशि के 12 अंश 28 कला 7 विकला पर स्थित है।

4. दैनिक क्रांति : चतुर्थ स्तंभ में दैनिक क्रांति 2 अंश 34 कला दक्षिण, अंकित है।

5. दैनिक चंद्र स्पष्ट : पंचम स्तंभ में सुबह 5 बजकर 30 मिनट पर चंद्र का मान राशि अंश कला—विकला में अंकित है। जैसे 27 मार्च, 2009 को चंद्र का मान 11—16—33—21 अंकित है। इसका अर्थ है कि उक्त तिथि को सुबह 5 घंटा 30 मिनट पर चंद्र मीन राशि के 16 अंश 33 कला 21 विकला पर स्थित है।

6. दैनिक चंद्र स्पष्ट : छठे स्तंभ में चंद्र का मान 11—23—21—45 घंटा 17 मिनट 30 पर अंकित है। इसका अर्थ है कि सायं 5 बजकर 30 मिनट पर चंद्र मीन राशि के 23 अंश 21 कला 45 विकला पर स्थित है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि सभी ग्रहों में चंद्र की गति सबसे अधिक होने के कारण पंचांगों में स्पष्ट चंद्र का मान प्रात: 5 बजकर 30 मिनट एवं सायं 5 बजकर 30 मिनट, दो बार अंकित रहता है।

उक्त चंद्र स्पष्ट के बाद उक्तानुसार ही शेष ग्रह मंगल से लेकर प्लूटो तक सभी ग्रहों के स्पष्ट मान राशि, अंश, कला, विकला में अंकित हैं।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि सबसे ऊपर जहाँ शनि अंकित है, वहाँ पर 'R' भी अंकित है। इसका अर्थ है कि शनि वक्री चल रहा है तथा शनि के स्तंभ में अंकित माह की तिथियों में शनि का मान धीरे—धीरे कम हो रहा है, जो इस बात का संकेत देता है कि पूरे माह शनि वक्री रहा है। सूर्य और चंद्र ग्रह कभी भी वक्री नहीं होते हैं, राहु और केतु सदैव वक्री रहते हैं तथा शेष ग्रह कभी वक्री और कभी मार्गी दोनों ही अवस्थाओं में गति करते हैं।

पृष्ठ के निचले भाग पर तीन चक्र बने हुए हैं, जो क्रमश: माह में पड़नेवाले पूर्णमासी तिथि, सूर्य की संक्रांति तिथि तथा अमावस्या तिथि से संबंधित हैं। यहाँ पर दिनांक 11 मार्च, 2009 को पूर्णमासी तिथि भारतीय प्रामाणिक समय घंटा 8 मिनट 7 सेकंड 42 पर चक्र बना हुआ है। दूसरा चक्र सूर्य की मीन संक्रांति दिनांक 14 मार्च, 2009 के भारतीय प्रामाणिक समय घंटा 16 मिनट 16 सेकंड 8 पर चक्र बना हुआ है। तीसरा एवं अंतिम चक्र दिनांक 26 मार्च, 2009 को अमावस्या तिथि भारतीय प्रामाणिक समय घंटा 21 मिनट 35 सेकंड 54 पर चक्र बना हुआ है। उक्त तीनों चक्र माह की महत्त्वपूर्ण तीनों तिथियों पूर्णमासी, सूर्य संक्रांति एवं अमावस्या की ग्रह गोचर की स्थिति दरशाती है।

इस प्रकार से किसी भी माह की किसी भी तिथि को पंचांग के माध्यम से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ बिना किसी गणित के ज्ञात कर सकते हैं।

❑

जन्मांग ज्ञान

पंचांग के संपूर्ण ज्ञान के पश्चात् पंचांग की सहायता से किसी जातक का जन्मांग बनाने की विधि समझाते हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि जन्मांग निर्माण एक गणितीय प्रक्रिया है, परंतु यहाँ पर स्थूल रूप से बिना किसी गणित के मात्र पंचांग की सहायता से जन्मांग बनाने की प्रक्रिया को प्रस्तुत करते हैं।

जन्मांग निर्माण के लिए हमें आवश्यक सामग्री के रूप में जातक की जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म—स्थान की आवश्यकता होती है। स्थूल रूप से देखा जाय तो जातक के जन्म—समय से जातक की लग्न ज्ञात की जाती है तथा जन्म—तिथि से ग्रहों की स्थिति का ज्ञान होता है। लग्न एवं ग्रहों की स्थिति निकालने के पश्चात् जन्मांग का निर्माण हो जाता है। जन्मांग बनाने से पूर्व आइए कुछ शब्दावली को समझ लें, जो जन्मांग को समझने में हमारी सहायता करेंगे।

1. जन्मांग या जन्म—कुंडली : जन्म—कुंडली जातक के जन्म के समय आकाश—मंडल में ग्रहों की स्थिति को दरशाता है, अर्थात् जातक के जन्म के समय कौन सा ग्रह कहाँ संचरण कर रहा है तथा वे ग्रह जातक पर क्या प्रभाव डाल रहे हैं, इसका नक्शा ही जन्म—कुंडली है।

2. लग्न : जातक के जन्म—समय आकाश—मंडल की पूर्वी क्षितिज पर जिस राशि का उदय होता है उसी राशि को जातक का लग्न माना जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि राशियाँ 12 होती हैं, जिनके नाम क्रम से इस प्रकार हैं—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

3. भाव : जन्म—कुंडली में 12 घर होते हैं, जिन्हें भाव के नाम से जानते हैं। कुंडली के प्रथम भाव को ही लग्न कहते हैं। कुंडली के भावों में राशियों के लिए निश्चित अंक ही लिखे जाते हैं। ऊपर जो क्रम से राशियाँ अंकित हैं उसी क्रम से 1 से 12 तक अंक राशियों के लिए निर्धारित हैं। जैसे मेष के लिए अंक 1, वृष के लिए 2, कुंभ के लिए 11 तथा मीन के लिए 12 अंक निर्धारित हैं।

4. जन्म राशि : जातक के जन्म के समय आकाश—मंडल में चंद्रमा जिस राशि में संचरण करता है वही राशि जातक की जन्म राशि मानी जाती है। जैसे यदि जन्म—समय चंद्रमा धनु राशि में स्थित है तब जातक की जन्म—राशि धनु मानीजाती है।

उक्त से स्पष्ट है कि सर्वप्रथम पूर्वी क्षितिज पर उदित राशि अर्थात् लग्न ज्ञात करेंगे। उदित राशि का जो अंक होगा वह अंक प्रथम भाव में लिखकर उस अंक से बढ़ते हुए क्रम में द्वितीय भाव से द्वादश भाव तक अंक लिख देंगे। उदाहरणार्थ, माना जातक के जन्म के समय पूर्वी क्षितिज पर धनु राशि उदय हो रही है अर्थात् धनु लग्न का उदय हो रहा है। धनु राशि का अंक 9 होने के कारण जन्म—कुंडली के प्रथम भाव या लग्न भाव में 9 नं. अंकित करते हुए द्वितीय भाव में 10 नं. आदि निम्नानुसार अंकित करेंगे।
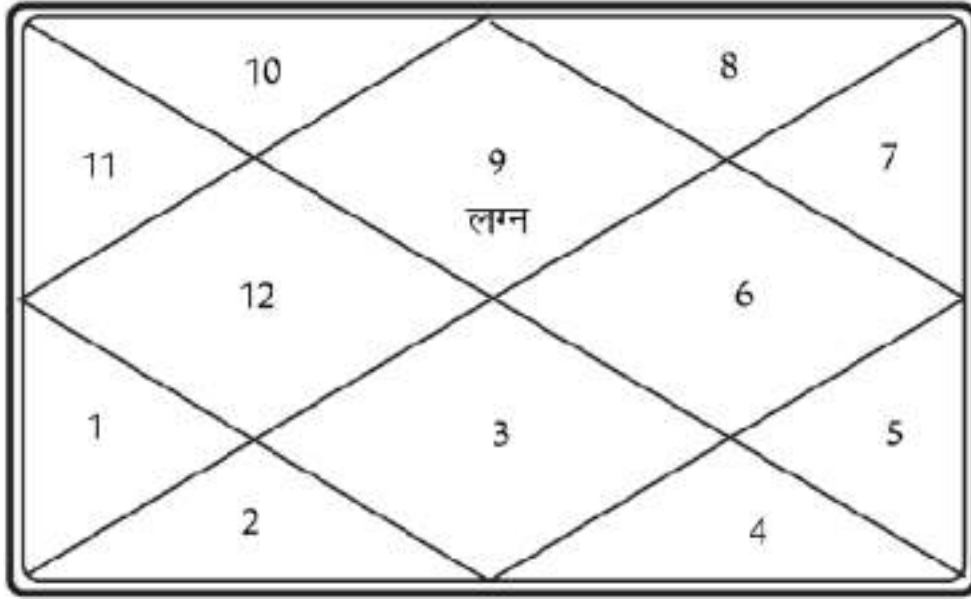
यहाँ पर यह ध्यान रखेंगे, चूँकि राशियाँ 12 हैं तथा भाव भी 12 हैं, अत: 12 अंक के बाद फिर 1 अंक से लिखना प्रारंभ करेंगे। प्रस्तुत जन्मांग में लग्न (प्रथम भाव) भाव से धनु राशि को निर्धारित अंक 9 से लिखना आरंभ किया तथा 12 अंक के पश्चात् फिर 1, 2... आदि लिखा गया।

इस प्रकार जन्म—लग्न एवं अन्य भावों में राशियों के अंक स्थापित करने के पश्चात् जातक के जन्म समय में कौन—कौन से ग्रह किस—किस राशि में भ्रमण कर रह हैं, ज्ञात करके जन्मांग की उस—उस राशि में ग्रहों को स्थापित कर देंगे, बस जन्मांग बनकर तैयार हो गया।

पंचांग की सहायता से जन्मांग निर्माण के लिए सर्वप्रथम उस वर्ष के पंचांग की आवश्यकता होती है जिस वर्ष का जन्मांग बनाना हो, क्योंकि जन्मांग निर्माण करने के लिए आवश्यक आँकड़े संबंधित वर्ष के पंचांग में ही उपलब्ध होंगे। उदाहरण के लिए 27 मार्च, 2009, प्रात: 9 बजकर 25 मिनट पर लखनऊ में जनमे एक जातक का जन्मांग स्थूल रूप से पंचांग की सहायता से निम्न प्रकार बना सकते हैं—

1. सर्वप्रथम पंचांग में संबंधित माह मार्च 2009 का पृष्ठ खोला (चिंता हरण पंचांग पृष्ठ सं. 24), जिस पर अंकित प्रारंभिक सूचनाएँ प्राप्त कीं—

माह—चैत्र—पक्ष—शुक्ल—तिथि—प्रतिपदा

नक्षत्र—रेवती—योग—ब्रह्म—करण—किंस्तुघ्न/बव

दिनमान— 30 घटी 24 पल—सूर्योदय — प्रात: 5.58 पर

2. तत्पश्चात् पृष्ठ सं. 26 पर दैनिक लग्न प्रवेश सारणी के 27 मार्च के सम्मुख मेष लग्न से अभीष्ट समय (प्रात: 9.25) तक लग्न का प्रवेश एवं समाप्ति समय नोट किया। यहाँ पर उक्त विवरण निम्नानुसार है —

मेष लग्न प्रवेश समय——प्रात: 6.50.46 सेकंड

मेष लग्न समाप्ति समय——प्रात: 8.29 मिनट

वृष लग्न प्रवेश समय——प्रात: 8.29 मिनट

वृष लग्न समाप्ति समय——प्रात: 10.26 मिनट

मिथुन लग्न प्रवेश समय——प्रात: 10.26 मिनट

मिथुन लग्न समाप्ति समय——दोपहर 12.39 मिनट

कर्क लग्न प्रवेश समय——अपराह्न 12.39 मिनट

कर्क लग्न समाप्ति समय——अपराह्न 2.57 मिनट

इसी प्रकार उक्त पूरे दिन में उदय होनेवाली सभी द्वादश लग्नों का प्रवेश समय एवं समाप्ति समय ज्ञात कर सकते हैं। हमारा अभीष्ट समय प्रात: 9.25 मिनट पर यह देखा कि कौन सी लग्न का समय उक्त समय प्रात: 9.25 के मध्य में आता है। उक्त विवरण से स्पष्ट है कि वृष लग्न का प्रवेश समय प्रात: 8.29 तथा समाप्ति समय प्रात: 10.26 है। इसका अर्थ यह हुआ कि दिनांक 27 मार्च 2009 को वृष लग्न प्रात: 8.29 से प्रात: 10.26 तक रही। हमारा अभीष्ट समय प्रात: 9.25 उक्त वृष लग्न के मध्य में आ रहा है। अत: हम कह सकते हैं कि उक्त अभीष्ट समय पर वृष लग्न का उदय हुआ था। अब हम वृष लग्न का जन्मांग इस प्रकार बना सकते हैं।
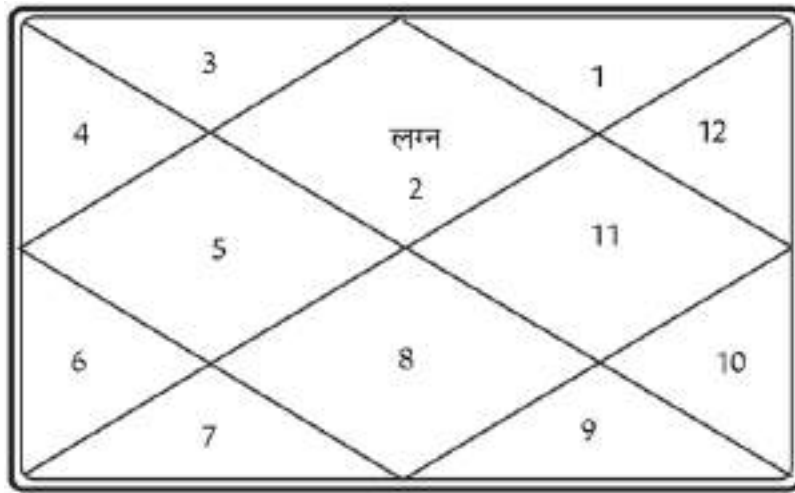
लग्न ज्ञात करने के पश्चात् अब हम उक्त दिनांक को ग्रहों की क्या स्थिति थी, इसके लिए माह मार्च से संबंधित पंचांग के पृष्ठ सं. 27 का अवलोकन करने के पश्चात् ग्रहों की स्थिति को निम्नानुसार नोट किया—

सूर्य—11—12—28—7—शुक्र—11—13—46—41

चंद्र—11—16—33—21—शनि R—4—22—59—8

मंगल—10—15—17—53—राहु—9—12—28—21

बुध—11—8—17—14

गुरु—9—24—9—20

उक्त से स्पष्ट है कि सूर्य मीन राशि के 12 अंश 28 कला 7 विकला पर है। चूँकि मीन राशि का अंक 12 है, अत: सूर्य को जन्मांग में वहाँ पर स्थित करेंगे जहाँ पर 12 नं. अंकित होगा। इसी प्रकार चंद्र भी मीन राशि अर्थात् अंक नं. 12 पर है, मंगल कुंभ राशि अर्थात् अंक नं. 11 पर है, बुध मीन राशि अर्थात् अंक नं. 12 पर है, गुरु मकर राशि अर्थात् अंक नं. 10 पर है, शुक्र मीन राशि अर्थात् अंक नं. 12 पर है, शनि सिंह राशि अर्थात् अंक नं. 5 पर तथा राहु मकर राशि अर्थात् अंक नं. 10 पर स्थित है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि पंचांगों में मात्र राहु की स्थिति ही अंकित रहती है, केतु की स्थिति अंकित नहीं होती है; क्योंकि हम जानते हैं कि राहु एवं केतु ग्रह सदैव आमने—सामने स्थित होते हैं। इसका अर्थ है कि यदि राहु 1 नं. पर स्थित है तो केतु 7 नं. पर स्थित होगा, यदि राहु 2 नं. पर स्थित है तो केतु 8 नं. पर

स्थित होगा, यदि राहु 3 नं. पर स्थित है तो केतु 9 नं. पर स्थित होगा, यदि राहु 4 नं. पर स्थित है तो केतु 10 नं. पर स्थित होगा। यदि राहु 5 नं. पर स्थित है तो केतु 11 नं. पर स्थित होगा, यदि राहु 6 नं. पर स्थित है तो केतु 12 नं. पर स्थित होगा। इस प्रकार केतु एवं राहु की भी स्थिति को समझें। चूँकि यहाँ पर राहु मकर राशि में स्थित है, इसलिए केतु कर्क राशि अर्थात् 4 नं. पर स्थित होगा।
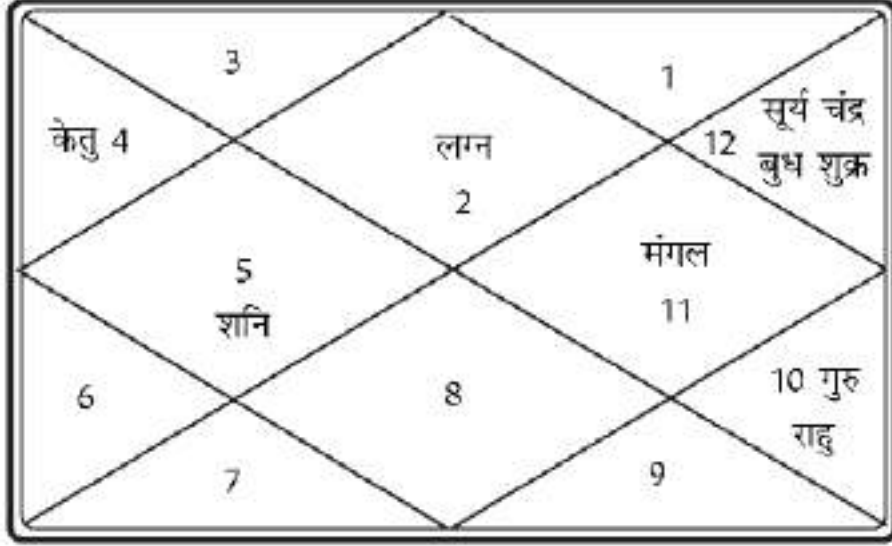
अब हम उपर्युक्त ग्रह स्थिति को पूर्व में अंकित लग्न चार्ट पर अंकित करते हैं तो निम्नानुसार जन्मांग बनकर तैयार होगा।

इस प्रकार दिनांक 27 मार्च, 2009, समय प्रात: 9 बजकर 25 मिनट पर पंचांग की सहायता से स्थूल रूप से बिना गणित प्रक्रिया के जन्मांग बनकर तैयार हो गया।

❑

मुहूर्त ज्ञान

मुहूर्त शब्द से हम सभी भलीभाँति परिचित हैं कि किसी भी कार्य करने के लिए वांछित समय ज्ञात करना ही मुहूर्त है। अर्थात् कौन सा कार्य किस कालखंड में करना है, इसका ज्ञान ही मुहूर्त है। मुहूर्त का अर्थ है कालखंड का विश्लेषण कर शुभ समय की पहचान करना।

अत: संक्षेप में मुहूर्त काल—निर्धारण की वह प्रक्रिया है, जिससे यह निर्धारित होता है कि कौन सा कार्य कब करना चाहिए। कालचक्र के पाँच अंगतिथि, वार, नक्षत्र, करण एवं योग मुहूर्त के प्राण तत्त्व हैं इन्हीं के विश्लेषण से मुहूर्त का ज्ञान होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि भिन्न—भिन्न कार्यों के निमित्त भिन्न—भिन्न प्रकार का समय वांछित होता है, अत: यदि कोई कार्य वांछित समय में संपन्न किया जाए तो उस कार्य की सफलता की प्रतिशत अधिकतम होती है। किसी कार्य की सफलता का अधिकतम प्रतिशत मुहूर्त के द्वारा ही संभव होती है। अत: मुहूर्त ही सर्वोपरि होता है।

कालखंड को एक अन्य प्रकार से भी पाँच भागों में विभाजित करते हैं—वर्ष, मास, दिन, लग्न एवं मुहूर्त। इसके विभाजन का अभिप्राय है कि यदि मास शुद्ध हो तो वर्ष का दोष समाप्त हो जाता है, दिन शुद्ध होने पर मास का दोष समाप्त हो जाता है, लग्न शुद्ध होने पर दिन का दोष समाप्त हो जाता है तथा मुहूर्त शुद्ध होने पर लग्नादि का दोष समाप्त हो जाता है। अत: कालखंड में यदि मुहूर्त शुद्ध हो तो सभी प्रकार के दोष समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार मुहूर्त का महत्त्व सर्वोपरि्है।

उक्त मुहूर्त के शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त गणना आदि के दृष्टिकोण से मुहूर्त का गणितीय मान भी निर्धारित किया जाता है। जैसा कि हम जानते हैं कि एक अहोरात्र में 24 घंटे होते हैं। इन्हीं 24 घंटों में 30 मुहूर्त होते हैं—अर्थात् 1 मुहूर्त का मान 2 घड़ी या 48 मिनट के बराबर होता है। उक्त 30 मुहूर्त में 15 मुहूर्त दिन में तथा 15 मुहूर्त रात्रि में होते हैं। दिन का अर्थ किसी भी दिन में सूर्योदय से सूर्यास्त का मान तथा रात्रि का अर्थ किसी भी दिन में सूर्यास्त से सूर्योदय तक का मान। अत: दिन के एक मुहूर्त का मान = दिनमान ÷15 तथा इसी प्रकार रात्रि के एक मुहूर्त का मान = रात्रिमान ÷15 दिनमान एवं रात्रिमान के घट—बढ़ जाने से मुहूर्त का मान भी घटता—बढ़ता रहता है। अत: इस प्रकार गणितीय दृष्टि से औसत आधार पर एक मुहूर्त का मान 2 घटी या 48 मिनट के बराबर होता है। दिन एवं रात्रि के मुहूर्त का विवरण निम्नानुसार है—

दिन के मुहूर्त

1. प्रात:काल—3 मुहूर्त
2. संगव काल—3 मुहूर्त
3. मध्याह्न काल—3 मुहूर्त
4. अपराह्न काल—3 मुहूर्त
5. सायंकाल—3 मुहूर्त

रात्रि के मुहूर्त

1. प्रदोष काल—3 मुहूर्त
2. रात्रि काल—4 मुहूर्त

3. निशीथ काल—1 मुहूर्त

4. ऊषा काल—3 मुहूर्त

5. अरुणोदय काल—2 मुहूर्त

6. प्रात:काल—2 मुहूर्त

उक्त दिन एवं रात्रि के मुहूर्त का उपयोग विभिन्न प्रकार के पूजन के मुहूर्त निकालने के लिए आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, दीपावली के पूजन का मुहूर्त में प्रदोष काल एवं निशीथ काल की आवश्यकता होती है। दीपावली—पूजन मुहूर्त की विधि विस्तृत रूप से अगले पृष्ठों पर समझाई गई है।

जैसा कि स्पष्ट है कि अभीष्ट विषय विभिन्न प्रकार के मुहूर्त की गणना करना नहीं है बल्कि पंचांग में अंकित मुहूर्त एवं दिन—प्रतिदिन के कार्यों में उपयोगी मुहूर्त पर प्रकाश डालना है। सरलता के लिए प्रमुख रूप से मुहूर्तों को इस प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है—

1. सामान्य मुहूर्त : सामान्य मुहूर्त के अंतर्गत पंचांग में अंकित चौघड़िया मुहूर्त, होरा मुहूर्त, यात्रा मुहूर्त से संबंधित गोरख पतरा तथा पंचांग में उल्लिखित विवाह मुहूर्त।

2. साढ़े तीन मुहूर्त : वर्ष में होनेवाले 3) मुहूर्त के विषय में।

3. प्रकीर्ण मुहूर्त : प्रकीर्ण मुहूर्त वे हैं, जो संस्कारों से संबंध रखते हैं, लेकिन संस्कार नहीं हैं। दैनंदिन जीवन में ऐसे मुहूर्तों का प्रयोजन आज भी समाज में प्रचलित है।

4. संस्कारों से संबंधित मुहूर्त : जैसा कि हम जानते हैं कि हिंदुओं में संस्कारों को धार्मिक दृष्टि से 16 प्रकार के माने गए हैं, जिन्हें षोडश संस्कार कहते हैं, जो जातक के जन्म से मृत्यु तक उनके आचार—विचार को परिष्कृत करने के दृष्टिकोण से संपन्न किए जाते हैं। षोडश संस्कार इस प्रकार हैं—

गर्भाधान संस्कार, पुंसवन संस्कार, सीमंतोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, कर्णवेध संस्कार, चूडाकर्म संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विद्यारंभ संस्कार, वेदारंभ संस्कार, समावर्तन संस्कार, उपनयन संस्कार, विवाह संस्कार एवं अंत्येष्टि संस्कार।

5. पूजन मुहूर्त : वर्ष में होनेवाले विभिन्न प्रकार के व्रत, पूजन, कथा आदि से संबंधित मुहूर्त।

6. विविध मुहूर्त : विविध मुहूर्त में यात्रा मुहूर्त, वाहन क्रय मुहूर्त, गृह प्रवेश मुहूर्त, क्रय—विक्रय मुहूर्त आदि।

उक्त छह प्रकार के मुहूर्त में अभीष्ट विषय सामान्य मुहूर्त एवं 3½ मुहूर्त से संबंधित हैं, जिनकी व्याख्या निम्नवत् है—

चौघड़िया मुहूर्त : शीघ्रता में कोई भी यात्रा का मुहूर्त न बनता हो या एकाएक यात्रा करने का मौका आ पड़े तो उस अवसर में विशेष रूप से चौघड़िया मुहूर्त का उपयोग होता है। लेकिन अब तो प्राय: प्रत्येक शुभ कार्यारंभ के लिए चौघड़िया मुहूर्त समाज में लोकप्रिय हो चुका है। दिन और रात के आठ—आठ बराबर हिस्से का एक—एक चौघड़िया मुहूर्त होता है। जब दिन और रात बराबर 12 घंटे का दिन और 12 घंटे की रात्रि होती है तब एक चौघड़िया मुहूर्त होता है अर्थात् 12 घंटा को 8 से भाग करने पर 1 घंटा 30 मिनट या पौने चार घड़ी का एक मुहूर्त हुआ। पौने चार घड़ी का एक मुहूर्त होने के कारण इस मुहूर्त का नाम चौघड़िया मुहूर्त पड़ा है।

जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय रात्रिमान होता है। अगर दिन चौघड़िया मुहूर्त ज्ञात करनी हो तो उस दिन का

दिनमान ज्ञात कर 8 से भाग करने से दिनमान के अष्टमांश घड़ी—पल में ज्ञात हो जाएँगे। तत्पश्चात् घटी—पल को घंटा—मिनट में बदलकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँगे तो क्रमश: उस दिन की आठों चौघड़िया के समय ज्ञात हो जाएँगे। इसी प्रकार रात्रिमान को 8 से भाग करने से रात्रि के आठों चौघड़ियों के समय ज्ञात हो जाएँगे। रात्रि के चौघड़िया ज्ञात करने के लिए रात्रिमान के अष्टमांश को सूर्यास्त समय में जोड़ने से क्रमश: आठों चौघड़ियों ज्ञात हो जाएँगे।

चौघड़िया मुहूर्त में कुल मुहूर्तों की संख्या सात है, जिनके नाम तथा स्वामी ग्रह निम्नानुसार हैं—

नाम : 1. उद्वेग

स्वामी ग्रह : रवि

शुभ/अशुभ : अशुभ

नाम : 2. चर

स्वामी ग्रह : शुक्र

शुभ/अशुभ : शुभ

नाम : 3. लाभ

स्वामी ग्रह : बुध

शुभ/अशुभ : शुभ

नाम : 4. अमृत

स्वामी ग्रह : चंद्र

शुभ/अशुभ : शुभ

नाम : 5. काल

स्वामी ग्रह : शनि

शुभ/अशुभ : अशुभ

नाम : 6. शुभ

स्वामी ग्रह : गुरु

शुभ/अशुभ : शुभ

नाम : 7. रोग

स्वामी ग्रह : मंगल

शुभ/अशुभ : अशुभ

उक्त सात चौघड़िया में चर, लाभ, अमृत एवं शुभ की चौघड़िया शुभ मानी जाती है तथा उद्वेग, काल एवं रोग की चौघड़िया अशुभ मानी जाती है। शुभ चौघड़िया में प्रत्येक शुभ कार्य संपादित किए जा सकते हैं तथा अशुभ चौघड़िया में शुभ कार्य नहीं करने चाहिए। प्राय: उक्त चारों शुभ चौघड़िया में से किसी भी चौघड़िया में किसी भी दिशा की यात्रा कर लेते हैं, किंतु जिस चौघड़िया का स्वामी अपनी यात्रा के लिए दिशाशूल कारक हो उस चौघड़िया की यात्रा को वर्जित करना चाहिए।

सुगमता के लिए दिन एवं रात का चौघड़िया चक्र निम्नानुसार है, जिसकी मदद से प्रत्येक वार की चौघड़िया मुहूर्त ज्ञात कर सकते हैं।

दिन की चौघड़िया : वार : पहली

रवि : उ

सोम : अ

मंगल : र

बुध : ल

गुरु : शु

दिन की चौघड़िया : वार : दूसरी

रवि : च

सोम : क

मंगल : उ

बुध : अ

गुरु : र

दिन की चौघड़िया : वार : तीसरी

रवि : ल

सोम : शु

मंगल : च

बुध : क

गुरु : उ

दिन की चौघड़िया : वार : चौथी

रवि : अ

सोम : र

मंगल : ल

बुध : शु

गुरु : च

दिन की चौघड़िया : वार : पाँचवीं

रवि : क

सोम : उ

मंगल : अ

बुध : र

गुरु : ल

दिन की चौघड़िया : वार : छठी

रवि : शु

सोम : च

मंगल : क

बुध : उ

गुरु : अ

दिन की चौघड़िया : वार : सातवीं

रवि : र

सोम : ल

मंगल : शु

बुध : च

गुरु : क

दिन की चौघड़िया : वार : आठवीं

रवि : उ

सोम : अ

मंगल : र

बुध : ल

गुरु : शु

रात की चौघड़िया : वार : पहली

शनि : क

रवि : शु

सोम : च

मंगल : क

बुध : उ

गुरु : अ

शुक्र : र

शनि : ल

रात की चौघड़िया : वार : दूसरी

शनि : शु

रवि : अ

सोम : र

मंगल : ल

बुध : शु

गुरु : च

शुक्र : क

शनि : उ

रात की चौघड़िया : वार : तीसरी

शनि : र

रवि : च

सोम : क

मंगल : उ

बुध : अ

गुरु : र

शुक्र : ल

शनि : शु

रात की चौघड़िया : वार : चौथी

शनि : उ

रवि : र

सोम : ल

मंगल : शु

बुध : च

गुरु : क

शुक्र : उ

शनि : अ

रात की चौघड़िया : वार : पाँचवीं

शनि : च

रवि : क

सोम : उ

मंगल : अ

बुध : र

गुरु : ल

शुक्र : शु

शनि : च

रात की चौघड़िया : वार : छठी

शनि : ल

रवि : ल

सोम : शु

मंगल : च

बुध : क

गुरु : उ

शुक्र : अ

शनि : र

रात की चौघड़िया : वार : सातवीं

शनि : अ

रवि : उ

सोम : अ

मंगल : र

बुध : ल

गुरु : शु

शुक्र : च

शनि : क

रात की चौघड़िया : वार : आठवीं

शनि : क

रवि : शु

सोम : च

मंगल : क

बुध : उ

गुरु : अ

शुक्र : र

शनि : ल

उक्त चक्र में उ से उद्वेग, च से चर, ल से लाभ, अ से अमृत, क से काल, शु से शुभ तथा र से रोग समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ माना कि 27 मार्च, 2009 को दिन की सभी आठों चौघड़िया का आरंभ एवं समाप्ति समय ज्ञात करना है।

सर्वप्रथम पंचांग से दिनांक 27 मार्च 2009 का दिनमान ज्ञात किया, तत्पश्चात् दिनमान को 8 से भाग देने पर अष्टमांश प्राप्त किया। चूँकि दिनमान घटी—पल में होगा जिसको घंटा—मिनट में बदलकर उक्त दिनांक के सूर्योदय में क्रमश: जोड़ने से दिन के आठों चौघड़िया का आरंभ एवं समाप्ति समय ज्ञात हो जाएगा।

दिनांक 27 मार्च, 2009 को दिनमान = 30 घटी 24 पल

दिनमान ÷ 8 = 3 घटी 48 पल

3 घटी 48 पल सूर्योदय का समय = घंटा 1 मिनट 31

दि. 27 मार्च, 2009 = प्रात: 5—58 पर

पहली चौघड़िया = 5 घंटा 58 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट

= 7 घंटा 29 मिनट

दूसरी चौघड़िया = 7 घंटा 29 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट

= 9 घंटा 00 मिनट

तीसरी चौघड़िया = 9 घंटा 00 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट

= 10 घंटा 31 मिनट

चौथी चौघड़िया = 10 घंटा 31 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट

= 12 घंटा 02 मिनट

पाँचवीं चौघड़िया = 12 घंटा 02 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट
= 13 घंटा 33 मिनट
छठी चौघड़िया = 13 घंटा 33 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट
= 15 घंटा 04 मिनट
सातवीं चौघड़िया = 15 घंटा 04 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट
= 16 घंटा 35 मिनट
आठवीं चौघड़िया = 16 घंटा 35 मिनट + 1 घंटा 31 मिनट
= 18 घंटा 06 मिनट

अर्थात् पहली चौघड़िया का समय प्रात: 5 बजकर 58 मिनट से प्रात: 7 बजकर 29 मिनट तक, दूसरी चौघड़िया का समय प्रात: 7 बजकर 29 मिनट से प्रात: 9 बजे तक का है। इसी प्रकार आठों चौघड़िया का समय समझें।

अब हमको यह ज्ञात करना है कि उक्त तिथि को कौन—कौन सी चौघड़िया में शुभ कार्य किए जा सकते हैं। सर्वप्रथम उक्त तिथि का वार ज्ञात किया। उक्त तिथि को शुक्रवार था, अत: दिन की चौघड़िया चक्र में शुक्रवार स्तंभ में देखा कि पहली, दूसरी, तीसरी, पाँचवीं एवं आठवीं चौघड़िया शुभ एवं चौथी, छठी एवं सातवीं चौघड़िया अशुभ श्रेणी की है। अत: उक्त समयानुसार शुभ चौघड़िया में शुभ कार्य संपादित किए जा सकते हैं एवं उक्त समयानुसार अशुभ चौघड़िया में शुभ कार्य को करना वर्जित होगा।

होरा मुहूर्त

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक है। सात ग्रहों के सात होरे हैं, जो अहोरात्र के 24 घंटों में घूमकर जातक को कार्य—सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुखमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य की होरा राज—सेवा के लिए उत्तम है, चंद्र की होरा सर्वकार्य सिद्धि के लिए उत्तम है, मंगल की होरा युद्ध, कलह और विवाद के लिए उत्तम है, बुध की होरा ज्ञानार्जन के लिए उत्तम है, गुरु की होरा विवाह आदि के लिए उत्तम है, शुक्र की होरा प्रवास के लिए उत्तम है तथा शनि की होरा द्रव्य—संग्रह के लिए उत्तम है।

एक अहोरात्र में 24 होरा होती है, अर्थात् प्रत्येक होरा एक घंटे की हुई। नियम यह है कि जिस दिन जो वार होता है उस वार के सूर्योदय के समय से 1 घंटा तक उसी वार की होरा रहती है। उसके बाद 1 घंटे की दूसरी होरा उस वार से छठे वार की होती है। इसी प्रकार दूसरी होरी के वार से छठे वार की होरा तीसरे घंटे तक रहता है। इसी क्रम में 24 घंटे में 24 होरा समाप्त होने पर अगले वार के सूर्योदय—समय उसी (अगले) वार की होरा आ जाती है। सुगमता के लिए होरा चक्र निम्नानुसार है—

होरा चक्र

वार	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होरा	होर
घंटा	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
रवि	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु
सोम	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु
मंग.	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु
बुध	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श
गुरु	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र
शुक्र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स
शनि	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म	र	शु	बु	स	श	गु	म

उक्त चक्र में 'र' से रवि अर्थात् सूर्य, 'स' से सोम अर्थात् चंद्र, 'म' से मंगल, 'बु' से बुध, 'गु' से गुरु अर्थात् बृहस्पति, 'शु' से शुक्र एवं 'श' से शनि समझना चाहिए।

जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ कही गई है, किसी भी दिन उस होरे के एक घंटे मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता का प्रतिशत अधिकतम होगा। उदाहरणार्थ माना कि 27 मार्च, 2009 को प्रवास में जाना है। सर्वप्रथम उक्त दिनांक का वार ज्ञात किया, तत्पश्चात् वार के सम्मुख प्रवास की होरा शुक्र में यह देखा कि किस—किस घंटे में शुक्र की होरा मिल रही है, वह घंटे सूर्योदय में जोड़ने से प्रवास का समय मिल जाएगा।

उक्त दिनांक को शुक्रवार था और शुक्र की होरा में ही प्रवास करना है, अत: चक्र में शुक्रवार के सम्मुख शुक्र की होरा प्रथम घंटे में, 8 घंटे में, 15वें घंटे में एवं 22वें घंटे में मिल रही है तथा उक्त दिनांक के सूर्योदय समय से 1 या 8 या 15 अथवा 22 घंटे बाद के एक—एक घंटे तक की शुक्र होरा में जातक को प्रवास करना चाहिए। इसी प्रकार दिन की होराओं के विषय में समझ लें।

विशेष : प्रत्येक जातक को अपनी राशि के स्वामी ग्रह के शत्रु ग्रहों की होरा को यात्रा, विवाह, युद्धादि में त्याग करना चाहिए। जैसे मान लीजिए राम कुमार जातक की जन्म—राशि के स्वामी गुरु हैं और गुरु के शत्रु ग्रह बुध और शुक्र हैं, अत: रामकुमार को बुद्ध और शुक्र के नैसर्गिक शुभ ग्रह होने के प्रति उनकी होराओं के उक्त कार्य नहीं करने चाहिए, अन्यथा परिणाम अशुभ होगा। इसी प्रकार गुरु के मित्र शुभ ग्रह चंद्र है, अत: उक्त कार्य चंद्र की होरा में करना चाहिए।

गोरख पतरा

यात्रा मुहूर्त से संबंधित गोरख पतरा कुछ पंचांगों में अंकित रहता है। यह पतरा मात्र यात्रा मुहूर्त से ही संबंधित है। श्री गोरखनाथ ने यात्रा के संबंध में गुरु मत्स्येंद्रनाथ से मुहूर्त राज पूछा था, जिसके उत्तर में गुरु मत्स्येंद्र नाथ ने वर्ष के 12 माहों की सभी तिथियों से संबंधित चारों प्रहर एवं चारों दिशाओं का फल बताया था, जिसका चक्र निम्नानुसार है—

नोट : (1) प्रत्येक मास के नीचे अंकित तिथियों को उस मास से संबंधित दोनों पक्षों की तिथियों के विषय में समझनी चाहिए।

(2) गोरख पतरा में 1 से 12 तक की तिथियाँ ही अंकित हैं। 13,14,15 एवं 30 तिथियाँ पतरा में अंकित नहीं हैं। अत: 13 तिथि का फल 3 तिथि के समान, 14 तिथि का फल 4 तिथि के समान, 15 तिथि का फल 5 तिथि के समान समझना चाहिए। 30 तिथि अर्थात् अमावस्या तिथि को यात्रा करना वर्जित बताया गया है, अत: इसके फल का प्रश्न ही नहीं उठता है।

(3) जैसा कि हम जानते हैं कि दिन में 4 प्रहर एवं रात्रि में भी 4 प्रहर होते हैं। अत: दिन में प्रहर ज्ञात करने के लिए दिनमान को 4 से भाग करने पर 1 प्रहर ज्ञात हो जाएगा तथा उसका मान उस दिन के सूर्योदय में जोड़ते जाएँगे तो क्रमश: दिन के चारों प्रहर का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार उस दिन के रात्रिमान को 4 से भाग करने पर रात्रि के एक प्रहर का मान ज्ञात होगा। इस मान को उस दिन के सूर्यास्त में क्रमश: जोड़ते जाओगे तो रात्रि के चारों प्रहर का समय ज्ञात हो जाएगा।

उक्त पतरा में 1 से 4 तक के प्रहरों को दिन और रात दोनों के लिए समझना चाहिए।

उदाहरणार्थ : किसी जातक को फाल्गुन शुक्ल तृतीया को पूर्व दिशा की यात्रा करनी है। इसका फल क्या होगा?

सर्वप्रथम फाल्गुन मास की तृतीया तिथि के सम्मुख मासों की तिथियों का फल अंकित है, में देखा कि ''बहुत सुख और अर्थ पूर्ण हो, क्लेश न हो'' अंकित है। तत्पश्चात् प्रथम प्रहर में 'अर्थ', द्वितीया प्रहर में 'सुख', तृतीया प्रहर में 'शोक' एवं चतुर्थ प्रहर में 'सुख' अंकित है। इसका अर्थ है कि उक्त तिथि को तृतीय प्रहर को छोड़कर शेष प्रहरों में की गई यात्रा सुखद होगी। दिशाओं में पूर्व दिशा की यात्रा 'सुख', दक्षिण की 'क्लेश', पश्चिम की यात्रा 'भय' एवं उत्तर दिशा की यात्रा 'द्रव्य लाभ' आदि अंकित है। इसका अर्थ है कि उक्त तिथि में पूर्व एवं उत्तर दिशा की यात्रा सुखद एवं पश्चिम तथा दक्षिण दिशा की यात्रा क्लेश पूर्ण होगी।

अत: उक्त तिथि की यात्रा सुखद होगी, परंतु तृतीया प्रहर को छोड़कर। यह फल गोरख पतरा के अनुसार प्राप्त हुआ।

साढ़े तीन मुहूर्त

जैसा कि हम जानते हैं कि मुहूर्त निकालने के लिए पंचांग शुद्धि, चंद्र शुद्धि, तारा शुद्धि एवं लग्न शुद्धि की आवश्यकता होती है; परंतु वर्ष में साढ़े तीन मुहूर्त ऐसे होते हैं जिसमें किसी भी प्रकार की शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती है, परंतु फिर भी जातक को चाहिए कि वह अपनी चंद्र राशि एवं लग्न को दृष्टिगत रखकर अधोलिखित साढ़े तीन मुहूर्त में शुभ कार्य संपादित कर ले। साढ़े तीन मुहूर्त में प्रथम तीन मुहूर्त पूरे—के—पूरे शुद्ध हैं तथा चौथे मुहूर्त को आधा मानकर कुल साढ़े तीन मुहूर्त माना गया है। वर्ष में पड़नेवाले साढ़े तीन मुहूर्त निम्नानुसार हैं—

1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा
2. वैशाख शुक्ल तृतीया
3. आश्विन शुक्ल दशमी

3½. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा

उक्त साढ़े तीन मुहूर्त में प्रथम मुहूर्त चैत्र शुक्ल प्रतिपदा इस दिन बसंत नवरात्र आरंभ होता है तथा साथ ही विक्रम संवत् आरंभ होता है। द्वितीय मुहूर्त वैशाख शुक्ल तृतीया, जिसे अक्षय तृतीया भी कहते हैं। इस दिन भगवान् परशुराम की जयंती भी मनाई जाती है। तृतीय मुहूर्त आश्विन शुक्ल दशमी, जो विजयादशमी के रूप में मनाया जाता है। इस प्रकार उक्त तीनों मुहूर्तों का वर्ष में विशेष महत्त्व होने के कारण इन मुहूर्तों में शुभ कार्य संपादित करने के लिए पंचांग शुद्धि की आवश्यकता नहीं पड़ती है। अत: उक्त अंकित साढ़े तीन मुहूर्त में मात्र जातक चंद्र राशि एवं लग्न देखकर शुभ कार्य संपादित कर सकते हैं।

गोरख पतरा

पौ.	मा.	फा.	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	मासों की तिथियों का फल	प्रहर 1	प्रहर 2	प्रहर 3	प्रहर 4	पूर्व	द.	प.	उत्तर.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	बहुत सुख अर्थपूर्ण, क्लेश न हो	अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भय	द्र.लाभ
2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	महाभय और जीवननाश, पछतावा	भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेह	दरिद्र	ममता
3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	कामना सिद्ध हो, अर्थपूर्ण हो	लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	सुख	लाभ	धन प्रा.
4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	क्लेश व जीवन नाश हो, कुशल से घर न आवे	क्लेश	शुभ	क्लेश	विनाश	लाभ	सुख	मंगल	वि.ला.
5	6	7	8	9	19	11	12	1	2	3	4	वस्तु लाभ हो, व्याधि व संकट	संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	घर की चिंता, मित्र संकट हो, कदाचित् घर आवे	संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भय	लाभ	मृत्यु	अर्धागम
7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	भाग्योद, रत्न-प्राप्ति, साधन-प्राप्ति	विनाश	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्र.लाभ	सुख
8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	बुरा हो, जीवन नाश, लेन देन न करें	शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	कामना सिद्ध, आशा पूर्ण हो	लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	कार्य	कष्ट
10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	सौभाग्य का उदय हो सौभाग्य प्राप्त, बहुत दिन लगे किंतु कुशल घर आवे	लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	सिद्धि अर्थ	धन प्रा.
11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	क्लेश हो, किंतु जीव नाश नहीं सौभाग्य न पावे	मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्रव्य लाभ	शून्य
12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	मार्ग में सिद्धि, मित्र मिले, धन	मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	कष्ट

दीपावली—पूजन का मुहूर्त

श्री महागणपति, महालक्ष्मी एवं महामाया महाकाली की पौराणिक अथवा तांत्रिक विधि से उपासना का परम पुनीत पर्व दीपावली है।

दीपावली पूजन का मुहूर्त निकालने के लिए तिथि, नक्षत्र, काल, लग्न एवं लाभ की चौघड़िया आदि का विचार करते हैं। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि दीपावली पर्व कार्तिक माह में कृष्णपक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है। पूजन के समय चित्रा या स्वाती नक्षत्र, स्थिर लग्न वृष या सिंह तथा प्रदोष काल में गृहस्थों एवं व्यापारियों के लिए तथा महानिशीथ काल में तांत्रिकों के लिए होता है। अत: दीपावली—पूजन के समय

तिथि— अमावस्या

नक्षत्र— चित्रा या स्वाती

काल— प्रदोष या महानिशीथ

लग्न— वृष या सिंह

चौघड़िया— लाभ

उक्त पाँचों का संयोग ही पूजन का सर्वश्रेष्ठ समय है।

आइए, वर्ष 2008 में दीपावली—पूजन समय की गणना करते हैं और देखते हैं कि उक्त वर्ष में पूजन का श्रेष्ठ समय क्या होता है?

- सर्वप्रथम
- कार्तिक मास कृष्णपक्ष की अमावस्या दिनांक 28 अक्तूबर मंगलवार को 28 घंटा 46 मिनट तक रहेगी।
- सर्वप्रथम उक्त तिथि को चित्रा नक्षत्र 6—35 पी.एम. तक तथा तत्पश्चात् 6—35 से स्वाती नक्षत्र आरंभ होगा।

● सर्वप्रथम प्रदोष काल 5—18 पी.एम. से 7—51 पी.एम. तक

सूर्यास्त से तीन मुहूर्त तथा प्रदोष काल रहता है।

$$1 \text{ मुहूर्त} = \frac{\text{रात्रिमान}}{15}$$

दिनांक 28 अक्तूबर को रात्रिमान 31 घड़ी 56 पल हैं

दिनांक 28 अक्तूबर को रात्रिमान 31 घड़ी 56 पल हैं

$$\text{अत: } 1 \text{ मुहूर्त} = \frac{31/56}{15}$$

= 2 घड़ी 8 पल

अत: 3 मुहूर्त = 6 घड़ी 24 पल

= 2 घंटा 33 मिनट

उक्त तिथि को सूर्यास्त 5.18 पी.एम. पर हुआ, अत: प्रदोष काल 5.18+2.33 = 7.51 पीएम

प्रदोष काल का समय 5.18 पी.एम. से 7.51 पी.एम. तक

● उक्त तिथि को वृष लग्न 6.18 पी.एम. से प्रारंभ होकर 8.15 पी.एम. तक रहेगी।

● रात्रि चौघड़िया चक्रम् में मंगलवार को लाभ की चौघड़िया द्वितीय चौघड़िया है। लाभ की चौघड़िया ज्ञात करने के लिए रात्रिमान के 8 बराबर भाग किए अर्थात् 4 घड़ी हुए। 4 घड़ी को घंटा—मिनट में परिवर्तित करने पर घंटा 1 मिनट 36 प्राप्त हुए।

अर्थात् सूर्यास्त में क्रमश: घंटा 1 36 मिनट जोड़ते गए।

दिन मंगलवार को प्रारंभ चौघड़िया काल का समय 5.18 से लेकर 6.54 पी.एम. तक।

द्वितीय चौघड़िया लाभ का समय 6.54 पी.एम. से 8.30 पी.एम. तक

अत: लाभ की चौघड़िया 6.54 पी.एम. से 8.30 तक रहेगी।

अब उक्त सभी तथ्यों का समय निम्नानुसार रहा।

तिथि अमावस्या—28 घंटा 46 मिनट तक

स्वाती नक्षत्र—6.35 पी.एम. से

प्रदोष काल—5.18 पी.एम. से 7.51 पी.एम. तक

वृष लग्न—6.18 पी.एम. से 8.15 पी.एम. तक

लाभ की चौघड़िया 6.54 पी.एम. से 8.30 पी.एम. तक

''अत: दीपावली—पूजन का समय प्रदोष काल तथा वृष लग्न में 6.54 पी.एम. से 7.51 पी.एम. तक रहेगा।''

● महानिशीथ काल रात्रि का आठवाँ मुहूर्त होता है। पूर्व में हम 1 मुहूर्त का मान 2 घड़ी 8 पल ज्ञात कर चुके हैं, अत: 8 मुहूर्त = 17 घड़ी 4 पल हुए। इसको घंटा—मिनट में परिवर्तित करने पर घंटा 6 तथा 49

मिनट हुए। सूर्यास्त समय में उक्त घंटा—मिनट को जोड़ा, अर्थात् 5 घंटा 18 मिनट + 6 घंटा 49 मिनट त्र 12 घंटा 07 मिनट रात्रि अर्थात् महानिशीथ काल रात्रि 12 बजकर 07 मिनट रहेगा।

जैसा कि हम जानते हैं कि महानिशीथ काल एक मुहूर्त का ही होता है, अत: उक्त समाप्ति काल रात्रि 12 बजकर 07 मिनट में एक मुहूर्त का समय घटाने पर महानिशीथ काल का आरंभ समय प्राप्त होगा।

उक्त दिनांक में एक मुहूर्त का समय 51 मिनट का है, अत: रात्रि 12 घंटा 07 मिनट में 51 मिनट घटाने पर रात्रि 11 घंटा 16 मिनट प्राप्त हुआ। अत: महानिशीथ काल रात्रि 11 बजकर 16 मिनट से रात्रि 12 बजकर 07 मिनट तक रहेगा।

● रात्रि चौघड़िया चक्रम् में मंगलवार को पहली चौघड़िया काल की फिर क्रमश: लाभ, उद्वेग, शुभ, अमृत, चर, रोग आदि की होगी।

जैसा कि पूर्व में हमने ज्ञात किया है कि एक चौघड़िया घंटा 1 मिनट 36 तक रहेगा, अत: सूर्यास्त के समय में क्रमश: घंटा 1 मिनट 36 जोड़ने पर रात्रि की सभी चौघड़िया का समय प्राप्त हो जाएगा।

अत: सूर्यास्त का समय 5.18 पी.एम.

\+ 1.36

6.54 – काल की चौघड़िया

\+ 1.36

8.30 –लाभ की चौघड़िया

\+ 1.36

10.06 –उद्वेग की चौघड़िया

\+ 1.36

11.42 –शुभ की चौघड़िया

\+ 1.36

13.18 –अमृत की चौघड़िया

\+ 1.36

14.54 –चर की चौघड़िया

उक्त में से शुभ की चौघड़िया 10.06 पी.एम. से 11.42 पी.एम. तक तथा अमृत की चौघड़िया 11.42 पी.एम. से 1.18 ए.एम. तक रहेगी।

अत: महानिशीथ काल में अर्थात् रात्रि 11 बजकर 16 मिनट से रात्रि 12 बजकर 07 मिनट तक शुभ एवं अमृत की चौघड़िया प्राप्त होगी, जो अति श्रेष्ठ है।

● उक्त तिथि को सिंह लग्न रात्रि 12 बजकर 46 मिनट से प्रारंभ होगी।

तिथि अमावस्या—28 घंटा 46 मिनट तक

स्वाती नक्षत्र——6.35 पी.एम. से

महानिशीथ काल—11.16 पी.एम. से 12.07 ए.एम. तक

चौघड़िया शुभ/अमृत—10.06 पी.एम. से 01.18 ए.एम. तक

सिंह लग्न—12.46 ए.एम. से

उक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उक्त तिथि में महानिशीथ काल की समाप्ति के बाद सिंह लग्न प्राप्त हो रही है, अत: पूजन के समय या तो महानिशीथ काल प्राप्त होगा या सिंह लग्न।

❑

व्रत और त्योहार ज्ञान

पंचांग में तिथि, वार आदि के सम्मुख वर्ष में होनेवाले व्रत व त्योहारों आदि का विवरण अंकित होता है। व्रत व त्योहार भारतीय सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में प्रचलित धार्मिक व आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार तथा वैज्ञानिकता की कसौटी पर निर्धारित किए गए हैं तथा ये हमारे शारीरिक व मानसिक शक्ति को पुष्ट करने के साथ—साथ ईश्वर आस्था को भी इंगित करते हैं।

प्रचलित धार्मिक व आध्यात्मिक मान्यताओं के अनुसार हिंदू पर्व व त्योहारों की संख्या लगभग 450 है, जबकि वर्ष में 365 दिन व संवत् में 360 तिथियाँ ही होती हैं। अत: सभी का वर्णन करना संभव नहीं है। इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण व्रत व त्योहारों, जो राष्ट्रीय स्तर पर किसी—न—किसी रूप में सभी हिंदू धर्मावलंबी मानते हैं, का वर्णन किया जा रहा है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि संवत् का प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। अत: यहाँ पर चैत्र माह से प्रारंभ कर क्रमश: सभी 12 माहों में होनेवाले प्रमुख व्रत व त्योहारों का वर्णन निम्नानुसार है—

1. वसंत नवरात्र : भारतीय धर्म—शास्त्रों के अनुसार वसंत नवरात्र चैत्र माह के शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ माना जाता है तथा इसी दिन से नए विक्रम संवत् का आरंभ भी होता है। मान्यता है कि ब्रह्माजी ने इसी तिथि से सृष्टि का सृजन भी किया था। कलश—स्थापन करके इस दिन नए वर्ष पंचांग का फल सुनना चाहिए। वसंत नवरात्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से लेकर राम नवमी तक चलता है। इन दिनों माँ दुर्गा एवं कन्या—पूजन का विशेष माहात्म्य है।

2. रामनवमी : मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का जन्म चैत्र माह के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि को कर्क लग्न में हुआ था, इसलिए यह पर्व रामनवमी के नाम से अभिहित की जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने 'रामचरित—मानस' की रचना भी इसी दिन से प्रारंभ की थी। पूरे भारतवर्ष में आज का दिन राम—जन्म महोत्सव के रूप में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। अयोध्या नगरी में रामनवमी का विशेष माहात्म्य है तथा इस दिन अयोध्या में बहुत बड़ा मेला भी लगता है।

3. अक्षय तृतीया : वैशाख शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को अक्षय तृतीया के नाम से अभिहित किया जाता है। यह तिथि महर्षि परशुरामजी के अवतरित होने के कारण श्रीरामनवमी की भाँति परम पुनीत पर्व है। चूँकि भगवान् परशुरामजी का अवतार संध्या काल में हुआ था, अत: परशुराम जयंती में तृतीया तिथि एवं संध्या काल का विशेष माहात्म्य है।

4. बुद्ध पूर्णिमा : वैशाख मास की पूर्णमासी को बौद्ध धर्म के अनुयायी बुद्ध पूर्णिमा पर्व बुद्ध परिनिर्वाण दिवस के रूप में मनाते हैं।

5. वट—सावित्री व्रत : ज्येष्ठ मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या को यह व्रत मनाया जाता है। यह व्रत सुहागिन स्त्रियों को अवश्य करना चाहिए क्योंकि ऐसी मान्यता है कि उक्त व्रत रखने से स्त्रियों का सुहाग अचल रहता है। उक्त व्रत में सत्यवान्, सावित्री तथा यमराज की पूजा की जाती है।

6. गंगा दशहरा : गंगा दशहरा ज्येष्ठ मास के शुक्लपक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। इसी दिन गंगा नदी भगीरथ द्वारा स्वर्गलोक से पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई थी। आदि ग्रंथों में वर्णित है कि गंगावतरण पृथ्वी पर उक्त तिथि में हस्त नक्षत्र में बुधवार के दिन हुआ था, इसलिए इस तिथि में स्नान—दान आदि से दश पापों का नाश होता है। इसलिए इसका नाम गंगा दशहरा पड़ा है।

7. गुरु पूर्णिमा : आषाढ़ शुक्लपक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के नाम से अभिहित किया गया है। गुरु पूर्णिमा को आदिगुरु व्यासजी के नाम पर व्यास पूर्णिमा भी कहते हैं। गुरु पूर्णिमा के दिन प्रात:काल स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु का पूजन करना चाहिए तथा यथाशक्ति फल, वस्त्र आदि दान करना चाहिए। तत्पश्चात् गुरु से आशीर्वाद ग्रहण करना चाहिए।

8. नाग पंचमी : श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी का त्योहार मनाया जाता है। पंचमी तिथि के स्वामी शेषनाग हैं तथा श्रावण मास ही सर्पों के दर्शन का मास होता है, अत: उक्त तिथि को ही नागों की पूजा अभीष्ट प्रतीत होती है।

स्थानीय स्तर पर नाग पंचमी को 'गुड़िया' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन घर की लड़कियाँ किसी जलाशय या किसी अन्य स्थान पर कपड़े की गुड़ियाँ बनाकर विसर्जन करती हैं तथा लड़के उस निर्जीव गुड़ियों को डंडे से खूब पीटते हैं।

9. रक्षाबंधन : रक्षाबंधन का त्योहार श्रावण मास की पूर्णमासी के दिन सभी वर्ग के लोग बहुत उत्साह के साथ मनाते हैं। यह त्योहार भाई—बहन को स्नेह की डोर से बाँधनेवाला त्योहार है।

हिंदू शास्त्रों में वर्णित है कि ऋ षि लोग श्रावणी पूर्णिमा को वेदाध्ययन का कार्य प्रारंभ करते थे, अत: उक्त तिथि रक्षा के बंधन के साथ—साथ वेदों के अध्ययन प्रारंभ करने के दिवस के रूप में भी मनाया जाता है।

10. कजरी तीज : कजरी तीज भाद्रपद मास में कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। इस दिन स्त्रियाँ कजरी के गीत गाती हैं, जो वर्षा ऋतु का एक विशेष राग है। सिंधी समुदाय में उक्त कजरी तीज को 'तीजड़ी' के नाम से पुकारते हैं। सिंधी समुदाय में कजरी तीज का वही माहात्म्य है, जो अन्य वर्गों में करवाचौथ व्रत का होता है।

11. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी : भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को जन्माष्टमी का पर्व मानाया जाता है। उक्त पर्व भगवान् श्रीकृष्ण के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। भगवान् श्रीकृष्ण का जन्म रोहिणी नक्षत्र तथा अष्टमी तिथि को मध्य रात्रि में हुआ था, अत: जन्माष्टमी के दिन मध्य रात्रि को यदि अष्टमी तिथि के साथ—साथ रोहिणी नक्षत्र हो तो अति उत्तम परंतु यदि रोहिणी नक्षत्र उक्त तिथि को न मिले तो तिथि को महत्ता देना चाहिए। जैसाकि नाम से ही स्पष्ट है कि यहाँ पर नक्षत्र से अधिक तिथि की महत्ता है।

12. हरितालिका तीज व्रत : यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की तृतीया तिथि को मनाया जाता है। उक्त व्रत गौरी व्रत के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि इस दिन शंकर—पार्वती की पूजा की जाती है तथा ऐसी मान्यता है कि उक्त व्रत करने से स्त्रियों का सुहाग माँ पार्वती के समान अचल रहता है।

13. श्री गणेश चतुर्थी : गणेश चतुर्थी भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि को मनाया जाता है। उक्त चतुर्थी को 'पत्थर चौथ' भी कहते हैं। प्रात:काल गणेशजी की मूर्ति बनाकर श्रद्धा के साथ पूजन करके मोदक का भोग लगाना चाहिए। इस प्रकार दस दिनों तक गणेशजी की पूजा—अर्चना करके पूर्णमासी को उक्त गणेश मूर्ति का जलाशय में विसर्जन करना चाहिए।

14. राधाष्टमी व्रत : यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि को राधाजी के जन्म—दिवस के रूप में मनाया जाता है।

15. पितृ पक्ष : आश्विन मास के कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तिथि अर्थात् 15 दिनों का पितृ पक्ष रहता है। आश्विन अमावस्या पितृ—विसर्जन अमावस्या की संज्ञा से अभिहित की जाती है। उक्त पक्ष की

नवमी तिथि 'मातृ नवमी' के नाम से पुकारी जाती है। मातृ नवमी को सौभाग्यवती स्त्रियों का श्राद्ध किया जाता है तथा अमावस्या के दिन अज्ञात तिथिवालों का श्राद्ध करना चाहिए।

उक्त पक्ष पितृ पक्ष या श्राद्ध पक्ष होने के कारण किसी भी प्रकार के शुभ कार्य को आरंभ नहीं करते हैं। उक्त पक्ष के बाद आश्विन मास का शुक्लपक्ष आरंभ होता है, जिससे शुभ कार्यों का प्रारंभ किया जाता है।

16. शारदीय नवरात्र : आश्विन मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से नवमी तिथि तक नवरात्र का व्रत माना जाता है। प्रतिपदा तिथि को प्रात:काल स्नानादि करके कलश की स्थापना करके 'दुर्गा सप्तशती' का पाठ करना चाहिए। नवरात्र का समय शक्ति—पूजा का समय है। प्राचीन शास्त्रों के अनुसार माँ दुर्गा देवी नौ रूपों में प्रकट हुई थीं। उन सब रूपों का क्रम से नौ दिनों तक पूजा—अर्चना आदि संपन्न की जाती है। माँ दुर्गा देवी के क्रम से नौ रूप इस प्रकार हैं—महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती, योगमाया, रक्त दंतिका, शाकुंभरी, श्री दुर्गा, भ्रामरी एवं चंडिका।

अष्टमी या नवमी तिथि को माँ दुर्गा देवी को पूर्ण आहुति देकर चना, हलुआ, खीर आदि से माँ का भोग लगाकर कन्या लांगुरा को भोजन कराया जाता है। कन्या जिमा कर भक्त तत्पश्चात् भोग आदि ग्रहण करते हैं। इस प्रकार नौ दिनों के व्रत का पारायण होता है।

17. विजयादशमी : यह पर्व आश्विन शुक्लपक्ष की दशमी तिथि को मनाया जाता है। मान्यता है कि उक्त तिथि को भगवान् राम ने रावण से युद्ध में विजय प्राप्त की थी। संध्या वेला का समय विजय काल होता है। विजयादशमी के दिन नीलकंठ का दर्शन शुभ माना जाता है। विजय काल में शमी वृक्ष के पूजन का भी विधान है तथा इसी काल में राजचिह्न, हाथी, घोड़े, अस्त्र—शस्त्र आदि का भी पूजन किया जाता है, जिसे शास्त्रों में 'लोहाभिसारिक कर्म' कहते हैं।

18. शरत् पूर्णिमा : आश्विन मास शुक्ल पूर्णिमा को शरत् पूर्णिमा कहा जाता है। शास्त्रों में उक्त पूर्णिमा को 'कोजागरी पूर्णिमा' भी माना गया है। शरत् पूर्णिमा के दिन चंद्रमा पृथ्वी के अत्यंत निकट रहता है। मान्यता है कि शरत् पूर्णिमा की रात्रि में खीर, दूध आदि खुले जगह पर रखकर दूसरे दिन प्रात:काल स्नान आदि से निवृत्त होकर उक्त वस्तु का सेवन करने से अमृत की प्राप्ति होती है, अर्थात् मान्यता है कि शरत् पूर्णिमा की रात्रि में अमृत की वर्षा होती है, जिसका अंश खीर आदि सामग्री में रहने से खीर अमृत तुल्य हो जाती है।

19. करवाचौथ : कार्तिक मास कृष्णपक्ष चतुर्थी को करवाचौथ के व्रत का विधान है। यह स्त्रियों का मुख्य त्योहार है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने पति की आयु—रक्षा के लिए व्रत करती हैं। यह व्रत निर्जल व्रत है अर्थात् इस व्रत में स्त्रियाँ जल भी ग्रहण नहीं करती हैं। रात्रि में चंद्र दर्शन के बाद चंद्र को अर्घ्य देकर भोजन करना चाहिए।

20. धनतेरस : कार्तिक मास कृष्णपक्ष की त्रयोदशी को धनतेरस पर्व मनाया जाता है। यह त्योहार दीपावली आने की पूर्व सूचना देता है। धन्वंतरि जयंती भी इसी दिन मनाई जाती है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि धन्वंतरि वैद्य समुद्र मंथन में इसी दिन समुद्र से अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे।

21. नरक चतुर्दशी : कार्तिक मास कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को नरक चतुर्दशी का पर्व मनाया जाता है। इस दिन नरक से मुक्ति पाने के लिए प्रात: काल तेल लगाकर जल में अपामार्ग पौधे के सहित स्नान करना चाहिए तथा संध्या काल में यमराज के लिए दीपदान करना चाहिए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को ही मेष लग्न में हनुमानजी का जन्म हुआ था। अत: इस दिन हनुमानजी का भी दर्शन एवं पूजन करना चाहिए।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को 'रूप चतुर्दशी' भी कहते हैं। इस दिन सौंदर्य रूप श्रीकृष्ण की भी पूजा—अर्चना होती है और ऐसी मान्यता है कि इस दिन श्रीकृष्ण की पूजा—अर्चना करने से भगवान् सुंदरता प्रदान करते हैं।

22. दीपावली : दीपावली पर्व कार्तिक मास कृष्णपक्ष की अमावस्या को मनाया जाता है। मान्यता है कि इसी दिन भगवान् श्रीरामचंद्रजी द्वारा लंका—नरेश रावण को मारकर सीता सहित अयोध्या नगरी वापस आए थे। आगमन की खुशी में अयोध्या वासियों द्वारा अपने—अपने घरों में दीपक जलाए गए थे।

वास्तव में दीपावली का पर्व असत्य पर सत्य की विजय का पर्व है। दीपावली में प्रदोष काल में लक्ष्मींद्र—कुबेरादि पूजा तथा महानिशीथ काल में महालक्ष्मी की पूजा की जाती है।

23. गोवर्धन—पूजा : गोवर्धन—पूजा दीपावली के दूसरे दिन अर्थात् कार्तिक मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा को मनाया जाता है। यह ब्रजवासियों का मुख्य त्योहार है। उक्त तिथि 'बलि प्रतिपदा' के नाम से भी अभिहित की जाती है क्योंकि इसी दिन दानी महाराज बलि की भी पूजा की जाती है।

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट का उत्सव भी मनाया जाता है।

24. भैया दूज : यह त्योहार कार्तिक शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को मनाया जाता है। यह त्योहार भाई—बहन के प्रेम का प्रतीक है। इस दिन भाई—बहन के साथ—साथ यमुना स्नान करना, तिलक लगवाना तथा बहन के घर भोजन करना अति फलदायी होता है। इस दिन बहन भाई की पूजा कर उसकी दीर्घायु तथा अपने सुहाग की कामना से हाथ जोड़ यमराज से प्रार्थना करती है। इस दिन जमुनाजी ने अपने भाई यमराज को भोजन कराया था, इसलिए इसे 'यम द्वितीया' भी कहते हैं। इस दिन श्रद्धावनत भाई को स्वर्ण, वस्त्र, मुद्रा आदि बहन को देना चाहिए।

25. सूर्य षष्ठी : यह त्योहार कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की षष्ठी को मनाया जाता है। इसे 'डाला छठ' भी कहते हैं। इस दिन सूर्य देवता की पूजा का विशेष माहात्म्य है। इस व्रत को करनेवाली स्त्रियाँ धन—धान्य, पति, पुत्र तथा सुख—समृद्धि आदि से परिपूर्ण व संतुष्ट रहती है। इस व्रत को करने से चर्म रोग एवं आँखों की बीमारी में लाभ प्राप्त होता है।

26. कार्तिक पूर्णिमा : कार्तिक पूर्णिमा कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की पूर्णमासी को मनाया जाता है। इसे 'त्रिपुरी पूर्णिमा' भी कहते हैं। इस दिन गंगा स्नान, दीप दान, अन्न दान आदि का विशेष महत्त्व है। त्रिदेवों ने इसे महापुनीत पर्व कहा है। इस तिथि को अगर कृत्तिका नक्षत्र पर चंद्र हो तथा विशाखा नक्षत्र पर सूर्य हो, तब इस पर्व का महत्त्व बहुत अधिक होता है। कार्तिक पूर्णिमा के दिन गुरु नानक का जन्म हुआ था, अत: इस दिन गुरु नानक जयंती भी मनाई जाती है।

27. मकर संक्रांति : सूर्य जब मकर संक्रांति पर आता है तब मकर संक्रांति होती है। वैसे तो संक्रांति प्रत्येक माह होती है, परंतु कर्क एवं मकर संक्रांति का विशेष महत्त्व होता है। मकर संक्रांति से सूर्य उत्तरायण हो जाते हैं। अंग्रेजी तिथि के अनुसार मकर संक्रांति हमेशा 14 जनवरी को ही होती है। मकर संक्रांति को उत्तर भारत में 'खिचड़ी' नामक पर्व से भी जाना जाता है। इस दिन गंगास्नान करके ब्राह्मण, भिक्षुक आदि को यथा—शक्ति खिचड़ी का दान करके खिचड़ी बनाकर भोजन के रूप में ग्रहण करना चाहिए। दक्षिण

भारत में इस पर्व को पोंगल के नाम से जाना जाता है। ऐसी मान्यता है कि यशोदा माता ने भगवान् कृष्ण को पुत्र रूप में पाने के लिए इसी दिन व्रत किया था।

28. वसंत पंचमी : यह पर्व माघ मास के शुक्लपक्ष की पंचमी तिथि को मनाया जाता है। यह पर्व वास्तव में ऋतुराज वसंत की अगवानी की सूचना देता है। इस दिन गेहूँ तथा जौ की स्वर्णिम बालियाँ भगवान् को अर्पित की जाती हैं। भगवान् विष्णु तथा माता सरस्वती के पूजन का विशेष फल है। भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाभूमि ब्रज में यह पर्व बड़े धूमधाम से मनाया जाता है।

29. महाशिवरात्रि व्रत : यह पर्व फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक बार भोजन ग्रहण करके चतुर्दशी के दिन अन्न ग्रहण नहीं करना चाहिए। महाशिवरात्रि व्रत के दिन काले तिलों से स्नान करके शिव—पूजन करना चाहिए तथा शिवजी के प्रिय पुष्प मदार, कनेर, बेलपत्र, मौलश्री आदि के द्वारा शिव की पूजा—अर्चना करना चाहिए। शिवजी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है।

30. होलिका पर्व : यह त्योहार फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की पूर्णमासी के दिन बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। होली का त्योहार प्रेम का त्योहार है। इस दिन अबीर, गुलाल, केसर आदि की बौछार करके परस्पर सभी लोग गले मिलते हैं तथा समस्त ईर्ष्या—द्वेष को भूलकर एक नवीन संबंधों का आरंभ करते हैं।

होली पर्व से पूर्व होलिका—दहन की क्रिया संपन्न होती है। होलिका—दहन के समय भद्रा नहीं होनी चाहिए तथा होलिका—दहन दिन में न करके रात्रि वेला में करना चाहिए। यदि दहन के समय भद्रा लगी हो तो भद्रा का मुख छोड़कर भद्रा में भी होली मनाई जा सकती है।

प्रदोष व्रत : माह के प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष कहते हैं। इस प्रकार प्रत्येक माह में दो प्रदोष व्रत होते हैं। प्रदोष का तात्पर्य है 'रात का शुभारंभ'। इस वेला में पूजन होने के कारण 'प्रदोष' नाम से विख्यात है। यह मुख्यतया स्त्रियों का व्रत है तथा यह व्रत संतान—कामना प्रधान है। इस व्रत के मुख्य देवता आशुतोष भगवान् शंकर माने जाते हैं। कृष्णपक्ष का 'शनि प्रदोष' विशेष पुण्यदायी होता है। शंकर भगवान् का दिन सोमवार होने के कारण इस दिन पड़नेवाला प्रदोष 'सोम प्रदोष' कहा जाता है। श्रावण मास के प्रत्येक सोम प्रदोष विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। माह के जिस वार को प्रदोष होता है, उसे उसी वार के नाम से जाना जाता है। जैसे रवि प्रदोष, सोम प्रदोष, भौम प्रदोष, बुध प्रदोष, गुरु प्रदोष, शुक्र प्रदोष, शनि प्रदोष आदि।

वर्ष 2009 में पड़नेवाले शनि प्रदोष एवं श्रावण मास में पड़नेवाले सोम प्रदोष निम्न प्रकार हैं। प्रत्येक पुत्रार्थियों को यह व्रत रखना चाहिए।

7 फरवरी—शनि प्रदोष व्रत

20 जून—शनि प्रदोष व्रत

4 जुलाई—शनि प्रदोष व्रत

3 अगस्त—सोम प्रदोष व्रत

31 अक्तूबर—शनि प्रदोष व्रत

14 नवंबर—शनि प्रदोष व्रत

वैनायकी श्रीगणेश व्रत : वैनायकी श्री गणेश व्रत प्रत्येक माह के शुक्लपक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है। प्रात: गणेशजी की श्रद्धापूर्वक पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय मोदक का भोग लगाकर दस

लड्डू ब्राह्मणों को दान देकर दस लड्डू स्वयं खाना चाहिए।

संकष्टी श्रीगणेश व्रत : संकष्टी श्रीगणेश व्रत प्रत्येक माह के कृष्णपक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है।

मास शिवरात्रि व्रत : शिवरात्रि व्रत भगवान् शंकर को प्रसन्न करने के लिए एवं अभीष्ट वर को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक माह के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी को रखा जाता है तथा आशुतोष भगवान् शंकर का श्रद्धापूर्वक पूजन किया जाता है।

श्री सत्यनारायण व्रत : श्री सत्यनारायण भगवान् का व्रत प्रत्येक माह की पूर्णिमा को रखा जाता है। इस दिन व्रत रखकर अपने इष्ट मित्रों एवं बंधुओं के साथ भगवान् श्री सत्यनारायण की कथा सुनते हैं तथा प्रसाद आदि का वितरण कर ब्राह्मणों एवं गरीब प्राणियों को भोजन कराकर तत्पश्चात् भोजन ग्रहण किया जाता है।

एकादशी व्रत : एकादशी व्रत माह के प्रत्येक पक्ष की एकादशी तिथि को रखा जाता है। इस प्रकार माह में दो एकादशी होने के कारण दो एकादशी व्रत रखने का विधान है। पहला व्रत कृष्णपक्ष की एकादशी को तथा दूसरा व्रत शुक्लपक्ष की एकादशी को रखा जाता है। वर्ष में होनेवाले सभी 24 एकादशी का वर्णन इस प्रकार्है—

1. चैत्र मास कृष्णपक्ष एकादशी : चैत्र मास के कृष्णपक्ष की एकादशी को 'पापमोचनी एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु को अर्घ्यदान आदि देकर षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए। इस दिन निंदित कर्म तथा मिथ्या भाषण नहीं करना चाहिए, जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है कि इस व्रत को करने से समस्त गर्हित पापों से मुक्ति मिल जाती है।

2. चैत्र मास शुक्लपक्ष एकादशी : चैत्र मास के शुक्लपक्ष की एकादशी को 'कामदा एकादशी' भी कहते हैं। वाराहपुराण में उक्त एकादशी के माहात्म्य का उल्लेख किया गया है। कामदा एकादशी व्रत गृहस्थों के लिए अति उत्तम बताया गया है।

3. वैशाख मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'बरूथनी एकादशी' एवं 'बरूथनी ग्यारस' भी कहते हैं। यह व्रत सुख—सौभाग्य का प्रतीक है। सुपात्र ब्राह्मण को दान देने, करोड़ों वर्ष तक ध्यानमग्न तपस्या करने तथा कन्यादान के फल से बढ़कर 'बरूथनी एकादशी' का व्रत माना जाता है।

4. वैशाख मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'मोहनी एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् राम की पूजा का विधान है। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से निंदित—से—निंदित कर्मों से छुटकारा मिल जाता है।

5. ज्येष्ठ मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'अचला एकादशी' तथा 'अपरा एकादशी' दो नामों से जानी जाती है। इस व्रत के करने से ब्रह्म हत्या, परनिंदा, भूत योनि जैसे निकृष्ट कर्मों से छुटकारा मिल जाता है। इसके करने से कीर्ति, पुण्य तथा धन में अभिवृद्धि होती है। इस एकादशी को भगवान् विष्णु की पूजा की जानी चाहिए। कहीं—कहीं बलराम—कृष्ण का भी पूजन करते हैं।

6. ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष एकादशी : ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष एकादशी को 'निर्जला एकादशी' या 'भीमसेनी एकादशी' भी कहते हैं। निर्जला एकादशी के दिन जल नहीं पीना चाहिए अर्थात् निर्जला व्रत रखा जाता है। इस व्रत को रखने से वर्ष की सभी एकादशियों का फल मिलता है। इस व्रत में 'ओइम् नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करके गोदान, स्वर्णदान, वस्त्रदान आदि करना चाहिए। शास्त्रों का मत है कि इस व्रत के करने से जातक दीर्घायु होता है तथा अंत में जातक को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

7. आषाढ़ मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'योगिनी एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् नारायण का पूजन करके गरीब ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयस्कर है। इस एकादशी के प्रभाव से पीपल वृक्ष के काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं और अंत में स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है।

8. आषाढ़ मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'हरिशयनी एकादशी' या 'पद्मा एकादशी' भी कहते हैं। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि इस दिन से भगवान् विष्णु चार मास की अवधि तक बलि द्वार पाताल लोक में निवास करते हैं। इसी कारण इसे 'हरिशयनी एकादशी' कहते हैं। आषाढ़ मास से कार्तिक मास तक चार मास के समय को चातुर्मास कहते हैं। धार्मिक दृष्टि से उक्त चार मास भगवान् विष्णु का निद्राकाल माना जाता है। इन चार मास में सभी शुभ कार्य वर्जित हैं। इस व्रत को करने से जातक की समस्त कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

9. श्रावण मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'कामदा एकादशी' या 'कार्मिका एकादशी' भी कहते हैं। प्रात: स्नानादि से निवृत्त होकर भगवान् विष्णु का पूजन करके ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से ब्रह्म—हत्या जैसे पापों से भी मुक्ति मिल जाती है।

10. श्रावण मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'पुत्रदा एकादशी' के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन भगवान् विष्णु का व्रत रखकर पूजन करना चाहिए, तत्पश्चात् वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए तथा दान आदि देकर आशीर्वाद लेना चाहिए। इस व्रत को रखनेवाले निस्संतान व्यक्ति को पुत्र—रत्न की प्राप्ति होती है।

11. भाद्रपद मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'जया एकादशी' या 'अजा एकादशी' भी कहते हैं। इस एकादशी को भी भगवान् विष्णु का पूजन आदि करके गरीब ब्राह्मण तथा दीन—दुखियों को भोजन कराके, दान आदि देकर आशीर्वाद लेना चाहिए। इस व्रत को रखने से जातक के संपूर्ण पाप नष्ट हो जाते हैं।

12. भाद्रपद मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'पद्मा एकादशी' भी कहते हैं। यह श्री लक्ष्मीजी का परम प्रिय व्रत है। इस दिन भगवान् विष्णु क्षीर सागर में शेष—शय्या पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं, इसीलिए इसे 'करवटनी एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन लक्ष्मी—पूजन करना अति शुभ माना जाता है तथा जातक के सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

13. आश्विन मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को इंदिरा एकादशी भी कहते हैं। इस दिन शालिग्राम की पूजा—अर्चना करनी चाहिए तथा पूजा आदि के पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए। इस व्रत को करने से करोड़ों पितरों का उद्धार होता है तथा जातक स्वयं स्वर्ग लोक जाता है।

14. आश्विन मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'पापांकुशा एकादशी' भी कहते हैं। यह एकादशी पाप रूपी हाथी को महावत रूपी अंकुश से बेधने के कारण पापांकुशा कहलाती है। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा तथा ब्राह्मण भोजन कराना वांछनीय है। इस व्रत को करने से समस्त पापों का नाश होता है।

15. कार्तिक मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'रंभा एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् केशव की पूजा—अर्चना करके ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए, तत्पश्चात् दक्षिणा देना चाहिए। इस व्रत को करने से रमा, रंभा अप्सराएँ स्वर्ग में सेवा किया करती हैं।

16. कार्तिक मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को देवोत्थान या 'देवठान एकादशी' कहते हैं। मान्यता है कि हरिशयनी एकादशी से भगवान् विष्णु के निद्रा के चार मास उक्त एकादशी में समाप्त होते हैं अर्थात् भगवान् विष्णु कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की एकादशी से ही इनका निद्राकाल समाप्त होता है तथा वर्जित सभी प्रकार के शुभ कार्य इस एकादशी से प्रारंभ हो जाते हैं।

17. मार्गशीर्ष मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'उत्पन्ना एकादशी' भी कहते हैं। इस एकादशी में भगवान् श्रीकृष्ण की पूजा का विधान है। व्रत रखनेवाले जातक को निंदक, चोरी, दुराचारी आदि बातें नहीं करनी चाहिए। इस एकादशी व्रत के प्रभाव से व्रती को विष्णु लोक प्राप्त होता है।

18. मार्गशीर्ष मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'मोक्षदा एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् श्रीकृष्ण ने महाभारत युद्ध प्रारंभ होने के पूर्व मोहित हुए अर्जुन को श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया था। इस दिन श्रीकृष्ण व गीता का पूजन आदि करके गीता का पाठ करना चाहिए तथा तत्पश्चात् ब्राह्मण भोजन कराकर दानादि देने से विशेष फल की प्राप्ति होती है।

19. पौष मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को सफला एकादशी भी कहते हैं। इस दिन भगवान् अच्युत की पूजा का विशेष विधान है। रात्रि में जागरण करते हुए कीर्तन—पाठ करना फलदायी होता है। इस व्रत को करने से समस्त कार्यों में अवश्य ही सफलता मिलती है, इसीलिए इसका नाम 'सफला एकादशी' है।

20. पौष मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'पुत्रदा एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु की पूजा का विधान है। इस व्रत को रखने से संतान की प्राप्ति होती है। इसीलिए इसका नाम पुत्रदा एकादशीहै।

21. माघ मास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'षटतिला' एकादशी भी कहते हैं। इस एकादशी के अधिष्ठाता देव भगवान् विष्णु हैं। इस पूजन में पूजक को तिल दान देना चाहिए। छह प्रकार के तिल प्रयोग होने के कारण इसे षटतिला एकादशी कहते हैं। इस प्रकार नियम पूर्वक भगवान् की पूजा करने पर बैकुंठ लोक की प्राप्ति होती है।

22. माघ मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'जया एकादशी' भी कहते हैं। इस व्रत को करनेवाले जातक को भूत—प्रेतादि योनियों से मुक्ति मिल जाती है तथा जन्म—जन्मांतरों के चिर संचित दोषों तथा ब्रह्म हत्या जैसे पातकों से भी छुटकारा मिल जाता है।

23. फाल्गुनमास कृष्णपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'विजया एकादशी' भी कहते हैं। इस दिन भगवान् विष्णु का पूजन किया जाता है। इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन—रात व्यतीत करना चाहिए। इस व्रत के प्रभाव से दुःख—दरिद्र दूर हो जाते हैं। समग्र कार्य में विजय प्राप्त होती है। इसकी कथा भगवान् राम की लंका विजय से संबंधित है, इसीलिए इस एकादशी का नाम विजया एकादशी है।

24. फाल्गुन मास शुक्लपक्ष एकादशी : इस एकादशी को 'आमलकी एकादशी' भी कहते हैं। आँवले के वृक्ष में भगवान् का निवास होने के कारण इसका पूजन किया जाता है। सर्वप्रथम व्रत रखनेवाले जातक को स्नानादि क्रिया से शुद्ध होकर आँवले के वृक्ष को भी स्नान कराना चाहिए, फिर आँवले के वृक्ष का पूजन करके उसके नीचे ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन भोजन कराना तथा दान देना सर्वोत्तम बताया गया है।

❑

मेलापक ज्ञान

यद्यपि 'मेलापक' शब्द विवाह के संदर्भ में ही विचार किया जाता है, परंतु विवाह के अतिरिक्त भी जब एक स्त्री का एक पुरुष से या एक पुरुष का दूसरे पुरुष से या एक स्त्री का दूसरी स्त्री से किसी भी प्रकार के संबंध पर विचार करना हो तो भी हम मेलापक के द्वारा उनके बीच के संबंधों की व्याख्या कर सकते हैं। अत: मेलापक एक बहुत व्यापक शब्द है, परंतु समान्यत: विवाह के पूर्व वर एवं कन्या के जन्मांग के मिलान को ही मेलापक कहते हैं।

सामान्यत: विवाह के पूर्व वर एवं कन्या के जन्मांगों का मिलान मात्र परंपरा का निर्वाह या मानसिक संतुष्टि मात्र ही रह गई है, जबकि मेलापक के द्वारा वर एवं कन्या जो भावी दंपती हो सकते हैं, के गुण, स्वभाव, आचार—व्यवहार, प्रेम आदि के संबंध में पूर्ण विचार करना तथा विवाह की सफलता के लिए सौभाग्य, संतति, स्वास्थ्य, संपत्ति आदि विषय पर भी प्रकाश डालना है। जैसा कि हम जानते हैं कि भारतीय समाज में प्रेम विवाह को उचित स्थान नहीं दिया गया है। अधिकांश विवाह माता—पिता की सलाह द्वारा ही संपन्न किए जाते हैं अर्थात् सामाजिक व्यवस्था के द्वारा दो अपरिचित व्यक्तियों को जीवन भर साथ रहने की शपथ दिलाई जाती है। उक्त परिस्थिति में मेलापक मात्र परंपरा का निर्वाह या मानसिक संतुष्टि ही नहीं बल्कि भावी दंपत्ति के लिए वरदान सिद्ध होता है। अत: मेलापक पद्धति की उपेक्षा करना किसी भी दशा में उचित प्रतीत नहीं होता है।

पंचांगों में अवकहड़ा चक्र, वर—कन्या गुण मेलापक चक्र आदि का उल्लेख रहता है, जिसकी मदद से हम वर एवं कन्या के गुणों का मिलान करते हैं। उक्त दोनों चक्रों का संक्षेप में विवरण इस प्रकार है। सर्वप्रथम अवकहड़ा चक्र, जो पृष्ठ सं. 195 पर बना है, से स्पष्ट है कि इस चक्र में प्रथम कॉलम में क्रम से अश्विनी से लेकर रेवती तक क्रम से 27 नक्षत्र अंकित हैं। प्रत्येक नक्षत्र के सम्मुख चरणाक्षर, राशि, वर्ण, वश्य, योनि, राशीश, गण, नाड़ी आदि अंकित हैं। अर्थात् यदि जन्म नक्षत्र का ज्ञान हो तो अवकहड़ा चक्र से उक्त सभी बातों का ज्ञान हो जाता है। उदाहरणार्थ—माना किसी जातक का जन्म नक्षत्र अश्विनी का द्वितीय चरण है तो अवकहड़ा चक्र के अनुसार उस जातक का चरणाक्षर 'चे' राशि मेष, वर्ण क्षत्रिय, वश्य चतुष्पद, योनि अश्व, राशीश मंगल, गण देव व नाड़ी आदि होगी।

मेलापक चक्र के अंतर्गत अष्टकूट का विचार किया जाता है। इस विचार के अंतर्गत वर के जन्म नक्षत्र व चरण तथा कन्या के जन्म नक्षत्र व चरण के आधार पर अष्टकूट का विचार किया जाता है। ज्योतिष—शास्त्र में अष्टकूट के आधार पर वर—कन्या के गुण—दोषों की विवेचना की गई है। क्रम से अष्टकूट इस प्रकार है, जो क्रम से उत्तरोत्तर बली है—(1) वर्ण (2) वश्य (3) तारा (4) योनि (5) ग्रह मैत्री (6) गण (7) भकूट (8) नाड़ी। उपर्युक्त अंकित 8 कूटों के अंक निर्धारित किए गए हैं, जो क्रमश: इस प्रकार हैं—

1. वर्ण का 1 अंक
2. वश्य का 2 अंक
3. तारा का 3 अंक
4. योनि का 4 अंक
5. ग्रह मैत्री का 5 अंक
6. गण का 6 अंक

8. योनि का 8 अंक

इस प्रकार क्रम सं. 1 से लेकर 8 तक का योग करने पर कुल 36 अंक होते हैं जिसे 36 गुणों के नाम से जाना जाता है, अर्थात् गुण मेलापक में अधिकतम 36 गुण ही हो सकते हैं।

उपर्युक्त क्रम सं. 1 से 8 तक अंकित गुणों में कमी तब आ जाती है, जबकि किसी कूट में किसी प्रकार का दोष आ जाता है। अब प्रत्येक कूट का संक्षेप में विवरण एवं प्रत्येक कूट के दोष एवं परिहार की रीति को समझाते हैं।

1. वर्ण विचार : वर्ण चार होते हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। वर्ण का विभाजन जाति या जन्म के आधार पर नहीं किया गया है बल्कि चंद्र राशि के आधार पर वर्ण का विभाजन इस प्रकार किया गया है—

वर्ण : ब्राह्मण

राशियाँ : कर्क, वृश्चिक, मीन

वर्ण : क्षत्रिय

राशियाँ : मेष, सिंह, धनु

वर्ण : वैश्य

राशियाँ : वृष, कन्या, मकर

वर्ण : शूद्र

राशियाँ : मिथुन, तुला, कुंभ

मेलापक करते समय वर एवं कन्या के जन्म राशि के अनुसार वर्ण निर्धारित हो जाते हैं। यदि वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च का हो तो वर्ण कूट में निर्धारित अधिकतम 1 अंक में 1 अंक प्राप्त होते हैं, यदि वर एवं कन्या के वर्ण समान हों तब भी 1 अंक प्राप्त होता है, परंतु यदि कन्या का वर्ण वर के वर्ण से उच्च का हो तो वर्ण कूट में 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। सुविधा के लिए वर्ण गुण—बोधक चक्र अंकित किया जा रहा है, जिसकी मदद से वर्ण कूट का ज्ञान हो जाता है।

	वर का वर्ण				
कन्या का वर्ण	वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
	ब्राह्मण	1	0	0	0
	क्षत्रिय	1	1	0	0
	वैश्य	1	1	1	0
	शूद्र	1	1	1	1

उदाहरणार्थ : माना वर का नक्षत्र अश्विनी प्रथम चरण तथा कन्या का जन्म नक्षत्र रेवती द्वितीय चरण का है। सर्वप्रथम अवकहड़ा चक्र में देखा कि अश्विनी नक्षत्र मेष राशि के अंतर्गत आती है तथा रेवती नक्षत्र मीन राशि के अंतर्गत आती है। अत: वर की राशि मेष तथा कन्या की राशि मीन हुई। मेष राशि का वर्ण क्षत्रिय एवं मीन राशि का वर्ण ब्राह्मण है। इस प्रकार वर का वर्ण क्षत्रिय तथा कन्या का वर्ण ब्राह्मण हुआ। वर्ण गुण—बोधक चक्र के अनुसार वर्ण कूट में 0 (शून्य) अंक प्राप्त हुए। इस प्रकार उक्त वर एवं कन्या के नक्षत्रों के आधार पर वर्ण कूट में 1 अंक के सापेक्ष 0 (शून्य) अंक प्राप्त हुए।

2. वश्य विचार : 2 राशियों की आकृति एवं चिह्नों के आधार पर पाँच प्रकार के वश्य होते हैं। 'वश्य' का अर्थ है—वश में होना; अर्थात् कौन किसके वश में है और कौन किसके वश में नहीं है, इसी आधार पर वश्य में अंक प्राप्त होते हैं। 12 राशियों के पाँच प्रकार के वश्य निम्न प्रकार हैं—(1) द्विपद (2) चतुष्पद (3) जलचर (4) कीट (5) वनचर। उक्त पाँच प्रकार के वश्य में 12 राशियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है—

वश्य : द्विपद

राशि : मिथुन, कन्या, तुला, धनु का पूर्वार्ध, कुंभ

वश्य : चतुष्पद

राशि : मेष, वृष, धनु का उत्तरार्ध, मकर का पूर्वार्ध

वश्य : जलचर

राशि : कर्क, मकर का उत्तरार्ध, मीन

वश्य : कीट

राशि : वृश्चिक

वश्य : वनचर

राशि : सिंह

ये पाँचों वश्य अपने स्वभाव के कारण वश्य, मित्र, शत्रु आदि कहलाते हैं तथा इसी आधार पर वश्य के अंतर्गत अधिकतम 2 गण के सापेक्ष गुण प्रदान किए जाते हैं। यदि वर एवं कन्या के वश्यों में मित्रता हो तो 2 गुण प्राप्त होते हैं, एक वश्य और दूसरा शत्रु हो तो 1 गुण, यदि एक वश्य और दूसरा मारनेवाला हो तो 0.5 गुण तथा एक शत्रु और दूसरा मारनेवाला हो तो 0 (शून्य) गुण प्राप्त होते हैं। सुविधा के लिए वश्य गुण —बोध चक्र अंकित किया जा रहा है, जिसकी मदद से वश्य कूट का ज्ञान किया जा सकता है।

	वर का वर्ण					
	वश्य	द्विपद	चतुष्पद	जलचर	कीट	वनचर
कन्या का वश्य	द्विपद	2	1	0.5	1	0
	चतुष्पद	1	2	1	1	0
	जलचर	0.5	1	2	1	1
	कीट	1	1	1	2	0
	वनचर	0	0	0	0	2

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र हस्त द्वितीय चरण तथा कन्या का जन्म नक्षत्र भरणी चतुर्थ चरण का है। सर्वप्रथम अवकहड़ा चक्र से देखा कि हस्त द्वितीय चरण कन्या राशि के अंतर्गत तथा भरणी चतुर्थ चरण मेष राशि के अंतर्गत आती है। कन्या राशि का वश्य द्विपद एवं मेष राशि का वश्य चतुष्पद हुआ। वश्य गुण—बोध चक्र के अनुसार वर का वश्य द्विपद एवं कन्या का वश्य चतुष्पद होने से 1 अंक प्राप्त हुए। इस प्रकार उक्त वर एवं कन्या के नक्षत्रों के आधार पर वश्य कूट के 2 अंक के सापेक्ष 1 अंक प्राप्त हुए।

3. तारा विचार : तारा ज्ञात करने के लिए वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिनती करके तथा कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गिनें। दोनों की गिनती करने पर जो संख्या प्राप्त हो उन संख्याओं को 9 का भाग देने पर जो शेष बचे उसी के अनुरूप निम्नानुसार तारा समझनी चाहिए—

यदि अवशेष 1 बचे तो 'जन्म' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 2 बचे तो 'संपत्' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 3 बचे तो 'विपत्' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 4 बचे तो 'क्षेम्' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 5 बचे तो 'प्रत्यरि' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 6 बचे तो 'साधक' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 7 बचे तो 'वध' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 8 बचे तो 'मित्र' तारा समझनी चाहिए।

यदि अवशेष 9 बचे तो 'अतिमित्र' तारा समझनी चाहिए।

उक्त 9 प्रकार के तारा में विपत्, प्रत्यरि और वध अशुभ तारा एवं शेष 6 तारें शुभ तारा की श्रेणी में वर्गीकृत की जाती हैं।

यदि वर एवं कन्या दोनों की शुभ तारा हो तो अधिकतम 3 अंक प्राप्त होते हैं, यदि दोनों में से एक की शुभ तारा तथा दूसरे की अशुभ तारा हो तो अधिकतम 3 अंक में से 1.5 अंक प्राप्त होते हैं और यदि दोनों वर एवं कन्या की अशुभ तारा हो तो 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। उदाहरणार्थ—माना वर का जन्म नक्षत्र उ. भाद्रपद प्रथम चरण तथा कन्या का जन्म नक्षत्र आर्द्रा तृतीय चरण है। सर्वप्रथम वर के जन्म नक्षत्र से कन्या के जन्म नक्षत्र तक गिना अर्थात् उ. भाद्रपद नक्षत्र से आर्द्रा नक्षत्र तक गिनती करने पर 8 संख्या प्राप्त हुई, तत्पश्चात् कन्या नक्षत्र आर्द्रा से वर नक्षत्र उ. भाद्रपद तक गिनती करने पर 21 संख्या प्राप्त हुई। प्राप्त दोनों

संख्याओं को 9 से भाग करने पर क्रमशः 8 एवं 3 संख्या प्राप्त हुई। 8 अवशेष में मित्र तारा एवं 3 अवशेष में विपत् तारा हुई। जैसा कि उक्त में अंकित है कि यदि एक की शुभ तारा तथा दूसरे की अशुभ तारा तो 1.5 अंक प्राप्त होते हैं। यहाँ पर भी एक शुभ तारा 'मित्र' एवं एक अशुभ तारा 'विपत्' होने से 1.5 अंक प्राप्त हुए। सरलता के लिए तारा गुण—बोध चक्र द्वारा भी वर की तारा एवं कन्या की तारा ज्ञात करके तारा के अंकों को ज्ञात कर सकते हैं।

कन्या की तारा	वर की तारा								
तारा	1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
2	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
3	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
4	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3
5.	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
6	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
7	1.5	1.5	0	1.5	0	1.5	0	1.5	1.5
8	3	3	1.5	3	1.5	3	1.5	3	3

जैसा कि पूर्व में अंकित है कि वर एवं कन्या को 8 नं. एवं 3 नं. प्राप्त हुए, अतः उक्त चक्र में वर की तारा एवं कन्या की तारा का मिलान किया तो अधिकतम 3 अंक में से 1.5 अंक प्राप्त हुए। इस प्रकार उक्त वर एवं कन्या के नक्षत्रों के आधार पर तारा कूट के 3 अंकों के सापेक्ष 1.5 अंक प्राप्त हुए।

4. योनि विचार : यहाँ पर 'योनि' का अर्थ है कि वर—कन्या की आपसी स्नेह एवं अभिरुचि आदि के ज्ञान से है। यदि वर एवं कन्या की योनि में समानता हो तो इसका अर्थ है कि वर एवं कन्या में आपसी प्रेम एवं रुचियाँ समान होंगी तथा योनियों के अंतर होने पर परस्पर प्रेम, विचारों एवं रुचियों में भी अंतर होगा। अगर वर एवं कन्या की योनि समान हो तो अधिकतम 4 अंक में से 4 अंक, मित्र योनि हो तो 3 अंक, सम योनि हो तो 2 अंक, शत्रु योनि हो तो 1 अंक एवं अधिशत्रु योनि पर 0 गुण प्राप्त होंगे। कुल 14 प्रकार की योनियों को 28 नक्षत्रों में निम्न प्रकार वर्गीकृत किया गया है। यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि योनि विचार में अभिजित् नक्षत्र की भी गणना की जाती है।

योनि : 1. अश्व

नक्षत्र : अश्विनी, शतभिष

योनि : 2. महिष

नक्षत्र : हस्त, स्वाती

योनि : 3. गज

नक्षत्र : भरणी, रेवती

योनि : 4. मेष

नक्षत्र : कृत्तिका, पुष्य

योनि : 5. वानर

नक्षत्र : पूर्वाषाढ़, श्रवण

योनि : 6. नकुल

नक्षत्र : उत्तराषाढ़, अभिजित्

योनि : 7. सर्प

नक्षत्र : रोहिणी, मृगशिरा

योनि : 8. मृग

नक्षत्र : अनुराधा, ज्येष्ठा

योनि : 9. श्वान

नक्षत्र : आर्द्रा, मूल

योनि : 10. मार्जार

नक्षत्र : पुनर्वसु, आश्लेषा

योनि : 11. मूषक

नक्षत्र : मघा, पूर्वा फाल्गुनी

योनि : 12. व्याघ्र

नक्षत्र : चित्रा, विशाखा

योनि : 13. गौ

नक्षत्र : उत्तरा फाल्गुनी, उत्तरा भाद्रपद

योनि : 14. सिंह

नक्षत्र : धनिष्ठा, पूर्वा भाद्रपद

यानी कूट में अंक ज्ञात करने के लिए योनि बोध चक्र के अनुसार ज्ञात करते है। योनि बोध चक्र निम्नानुसार है—

वर कन्या	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	4	4	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	2	3	2	2	0
मेष	3	3	4	3	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	3	4	2	2	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	2	4	1	1	2	2	1	0	3	2	1
मार्जार	3	3	3	1	1	4	0	3	3	2	3	2	2	2
मूषक	3	3	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गौ	3	2	3	1	2	2	2	4	3	0	3	2	3	1
महिष	0	3	3	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	2	1	1	2	0	1	4	2	1	2	2
मृग	3	3	3	2	0	2	2	3	2	1	4	2	2	2
वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
नकुल	2	2	3	0	2	2	1	3	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	1	1	2	1	2	1	1	3	2	2	2	2	4

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र पुष्य तृतीय चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र मूल द्वितीय चरण का है। सर्वप्रथम नक्षत्र के आधार पर वर एवं कन्या की योनि ज्ञात की। उपर्युक्त चार्ट के अनुसार पुष्य नक्षत्र की योनि मेष तथा मूल नक्षत्र की योनि श्वान है, अर्थात् वर की योनि मेष तथा कन्या की योनि श्वान है। तत्पश्चात् योनि बोध चक्र के अनुसार अधिकतम 4 अंक के सापेक्ष 2 अंक प्राप्त हुए।

5. ग्रह मैत्री विचार : जैसा कि हम जानते हैं कि प्रत्येक राशि का स्वामी कोई—न—कोई एक ग्रह होता है, उसी ग्रह के अनुसार ग्रह मैत्री का विचार किया जाता है। राशि एवं स्वामी ग्रह का विवरण इस प्रकार है —

राशि : मेष, वृश्चिक

स्वामी ग्रह : मंगल

राशि : वृष, तुला

स्वामी ग्रह : शुक्र

राशि : मिथुन, कन्या

स्वामी ग्रह : बुध

राशि : कर्क

स्वामी ग्रह : चंद्र

राशि : सिंह

स्वामी ग्रह : सूर्य

राशि : धनु, मीन

स्वामी ग्रह : गुरु

राशि : मकर, कुंभ

स्वामी ग्रह : शनि

जातक का जन्म जिस नक्षत्र में होता है वह नक्षत्र जातक का जन्म नक्षत्र कहलाता है तथा उक्त जन्म नक्षत्र जिस राशि में पड़ता है वह उस जातक की जन्म राशि होती है तथा इस जन्म राशि को जो ग्रह स्वामी होता है वह ग्रह उस जातक की जन्म राशि का स्वामी कहलाता है। सुविधा के लिए राशि एवं उसके अधीन नक्षत्रों का विवरण निम्न प्रकार है—

राशि : मेष

नक्षत्र : अश्विनी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 0—13.12

राशि : मेष

नक्षत्र : भरणी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 13.20—26.40

राशि : मेष

नक्षत्र : कृतिका

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 26.40—30.00

राशि : वृष

नक्षत्र : कृत्तिका

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 30.00—40.00

राशि : वृष

नक्षत्र : रोहिणी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 40.00—53.20

राशि : वृष

नक्षत्र : मृगशिरा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 53.20—60.00

राशि : वृष

नक्षत्र : मृगशिरा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 60.00—66.40

राशि : मिथुन

नक्षत्र : आर्द्रा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 66.40—80.00

राशि : मिथुन

नक्षत्र : पुनर्वसु

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 80.00—90.00

राशि : मिथुन

नक्षत्र : पुनर्वसु

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 90.00—93.20

राशि : कर्क

नक्षत्र : पुष्य

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 93.20—106.40

राशि : कर्क

नक्षत्र : आश्लेषा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 106.40—120.00

राशि : कर्क

नक्षत्र : मघा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 120.00—133.20

राशि : सिंह

नक्षत्र : पूर्वा फाल्गुनी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 133.20—146.40

राशि : सिंह

नक्षत्र : उत्तरा फाल्गुनी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 146.40—150.00

राशि : सिंह

नक्षत्र : उत्तरा फाल्गुनी

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 150.00—160.00

राशि : कन्या

नक्षत्र : हस्त

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 160.00—173.20

राशि : कन्या

नक्षत्र : चित्रा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 173.20—180.00

राशि : कन्या

नक्षत्र : चित्रा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 180.00—160.40

राशि : तुला

नक्षत्र : स्वाती

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 186.40—200.00

राशि : तुला

नक्षत्र : विशाखा

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 200.00—210.00

राशि : तुला

नक्षत्र : विशाखा

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 210.00—213.20

राशि : वृश्चिक

नक्षत्र : अनुराधा

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 213.20—226.40

राशि : वृश्चिक

नक्षत्र : ज्येष्ठा

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 226.40—240.00

राशि : वृश्चिक

नक्षत्र : मूल

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 240.00—253.20

राशि : धनु

नक्षत्र : पूर्णषाढ़

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 253.20—266.40

राशि : धनु

नक्षत्र : उत्तराषाढ़

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 266.40—270.00

राशि : धनु

नक्षत्र : उत्तराषाढ़

नक्षत्र मान (अंश— कला) : 270.00—280.00

राशि : मकर

नक्षत्र : श्रवण

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 280.00—293.20

राशि : मकर

नक्षत्र : धनिष्ठा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 293.20—300.00

राशि : मकर

नक्षत्र : धनिष्ठा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 300.00—306.40

राशि : कुंभ

नक्षत्र : शतभिषा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 306.40—320.00

राशि : कुंभ

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 320.00—330.00

राशि : कुंभ

नक्षत्र : पूर्वा भाद्रपद

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 330.00—333.20

राशि : मीन

नक्षत्र : स्वाती

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 333.20—346.40

राशि : मीन

नक्षत्र : विशाखा

नक्षत्र मान (अंश—कला) : 346.40—360.00

जातक की जन्म राशि का जो ग्रह स्वामी होता है वह ग्रह जातक के स्वभाव एवं गुण—अवगुणों पर प्रकाश डालता है। मेलापक के संदर्भ में वर एवं कन्या के जन्म राशि के स्वामी ग्रह इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि भावी पति—पत्नी का स्वभाव कैसा होगा तथा उन दोनों में आपस में मित्रता रहेगी अथवा नहीं। अत: भावी दंपती के बीच किस प्रकार का संबंध होगा, ग्रह मैत्री से ही इसका ज्ञान होता है। जैसा कि हम जानते हैं कि ग्रहों की संख्या 9 मानी गई है, परंतु ग्रह मैत्री में 7 ग्रहों को ही सम्मिलित किया गया है। चूँकि राहु एवं केतु किसी भी राशि के स्वामी नहीं होते हैं। अगर दोनों के ग्रह परस्पर मित्र हैं तो अधिकतम 5 अंक प्राप्त होते हैं, यदि एक सम दूसरा मित्र हो तो 4 अंक, यदि दोनों ग्रह परस्पर सम हों तो 3 अंक, यदि एक सम दूसरा शत्रु हो तो 1.5 अंक और यदि दोनों के ग्रह परस्पर शत्रु हों तो 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। सुविधा के लिए ग्रह मैत्री चक्र इस प्रकार है—

ग्रह	**सूर्य**	**चंद्र**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र
सम	बुध	शनि मंगल गुरु शुक्र	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु
शत्रु	शुक्र शनि	–	बुध बुध	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल

ग्रह मैत्री कूट में अंक ज्ञात करने के लिए ग्रह मैत्री बोध चक्र के अनुसार ज्ञात करते हैं। ग्रह मैत्री बोध चक्र निम्नानुसार है—

वर **कन्या**	**सूर्य**	**चंद्र**	**मंगल**	**बुध**	**गुरु**	**शुक्र**	**शनि**
सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
चंद्र	5	5	4	1	4	½	½
मंगल	5	4	5	½	5	3	½
बुध	4	1	½	5	½	5	4
गुरु	5	4	5	½	5	½	3
शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
शनि	0	½	½	4	3	5	5

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र मूल द्वितीय चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र शतभिष प्रथम चरण है। सर्वप्रथम नक्षत्र राशि चक्र के अनुसार मूल नक्षत्र धनु राशि के अंतर्गत तथा शतभिष नक्षत्र कुंभ राशि के अंतर्गत है। तत्पश्चात् राशि एवं ग्रह स्वामी चक्र के अनुसार धनु राशि का स्वामी ग्रह बृहस्पति एवं कुंभ राशि का स्वामी ग्रह शनि ज्ञात किया। अर्थात् वर का ग्रह बृहस्पति एवं कन्या का ग्रह शनि को ग्रह मैत्री बोध चक्र के अनुसार अधिकतम 5 अंक के सापेक्ष 3 अंक प्राप्त हुए।

6. गण विचार : जैसा कि हम जानते हैं कि प्रकृति तीन गुणों में विभाजित है—सात्त्विक, रजस एवं तमस। इसी प्रकार ज्योतिष—शास्त्र के 27 नक्षत्रों को 3 गणों में विभाजित किया गया है—देव गण, मानव गण एवं राक्षस गण। 27 नक्षत्रों का तीन गणों में विभाजन इस प्रकार है—

देवगण : अश्विनी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण और रेवती।

मानवगण : भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पू. फाल्गुनी, उ. फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़, पू. भाद्रपद और उ. भाद्रपद।

राक्षसगण : कृत्तिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा और शतभिष।

गण विचार में अधिकतम अंक 6 हैं। यदि वर एवं कन्या के समान गण हो तो 6 अंक, यदि वर का गण देव तथा कन्या का गण मानव हो तो 5 अंक, यदि वर एवं कन्या दोनों में एक का राक्षस और अन्य का देवता हो तो 1 अंक एवं यदि दोनों वर—कन्या में से एक राक्षस और अन्य का मानव हो तो 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। गण कूट में अंक ज्ञात करने के लिए गण—बोध चक्र के अनुसार ज्ञात करते हैं। गण बोध चक्र निम्नानुसार है—

वर कन्या : देव

देव : 6

मानव : 5

राक्षस : 1

वर कन्या : मानव

देव : 6

मानव : 6

राक्षस : 0

वर कन्या : राक्षस

देव : 0

मानव : 0

राक्षस : 6

उक्त चक्र से स्पष्ट है कि यदि वर का गण देव या मानव है, परंतु कन्या का गण यदि राक्षस है तो ऐसा संबंध उचित नहीं है और यदि वर का गण राक्षस हो तथा कन्या का गण मानव हो तो भी ऐसा संबंध उचित नहीं माना गया है।

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र विशाखा द्वितीय चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र श्रवण तृतीय चरण है। सर्वप्रथम जन्म नक्षत्र के आधार पर यह देखा कि वर एवं कन्या का गण क्या है? चूँकि वर का जन्म नक्षत्र विशाखा है, अत: वर का गण राक्षस हुआ तथा कन्या का जन्म नक्षत्र श्रवण है, अत: कन्या का गण देव है। गण—बोध चक्र के अनुसार वर का गण राक्षस एवं कन्या का गण देव होने से अधिकतम 6 अंक के सापेक्ष मात्र 1 अंक प्राप्त हुआ।

7. भकूट विचार : हम जानते हैं कि 27 नक्षत्रों को 12 राशियों में विभाजित किया गया है, जिसका पूर्ण विवरण 'ग्रह मैत्री विचार' के अंतर्गत अंकित किया गया है। भकूट विचार वर एवं कन्या की राशि पर आधारित हैं। अत: सर्वप्रथम वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र से जन्म राशि ज्ञात करते हैं, तत्पश्चात् वर एवं कन्या की राशि में परस्पर संबंध को देखते हैं। राशियों में परस्पर संबंध 6 प्रकार का होता है, इसी आधार पर भकूट को शुभ एवं अशुभ भकूट में बाँटा गया है। राशियों के 6 प्रकार के परस्पर संबंध निम्नांकित हैं—

(1) प्रथम—सप्तम संबंध (2) तृतीय—एकादश संबंध (3) चतुर्थ—दशम संबंध (4) द्वितीय—द्वादश (द्विदादश) संबंध (5) पंचम—नवम या नवम—पंचम (नव पंचक) संबंध एवं षष्ठ—अष्ठम (षडाष्टक) संबंध।

उक्त 6 प्रकार की राशियों के परस्पर प्रथम तीन संबंध शुभ एवं अंतिम तीन संबंध अशुभ होते हैं। इसी आधार पर यदि वर एवं कन्या की राशियों के बीच यदि प्रथम तीन प्रकार के संबंध हैं तो वर एवं कन्या शुभ भकूट के अंतर्गत आते हैं और भकूट के अधिकतम 7 अंक प्राप्त होते हैं, परंतु यदि वर एवं कन्या की राशियों के बीच यदि अंतिम तीन प्रकार के संबंध हैं तो वर एवं कन्या अशुभ भकूट के अंतर्गत आते हैं और भकूट के अधिकतम 7 अंक के सापेक्ष 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। भकूट कूट में अंक ज्ञात करने के लिए भकूट बोध चक्र के अनुसार ज्ञात करते हैं। भकूट बोध चक्र निम्नानुसार है—

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र रेवती प्रथम चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र चित्रा द्वितीय चरण है। सर्वप्रथम वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर जन्म राशि ज्ञात की। चूँकि वर का जन्म नक्षत्र रेवती है, अत: वर की जन्म राशि मीन हुई तथा कन्या का जन्म नक्षत्र चित्रा है, अत: कन्या की जन्म राशि कन्या हुई। भकूट बोध चक्र के अनुसार वर एवं कन्या की जन्म राशि के आधार पर अधिकतम 7 अंक प्राप्त हुए।

वर कन्या	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	3
वृष	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0

वर कन्या	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुंभ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

नाड़ी विचार : जिस प्रकार 27 नक्षत्रों को तीन गणों में विभाजित किया गया है। ठीक उसी प्रकार उक्त नक्षत्रों को तीन प्रकार की नाड़ियों में विभाजित किया गया है। तीन प्रकार की नाड़ियाँ एवं उनका नक्षत्रों में विभाजन इस प्रकार है—

आदि नाड़ी : अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उ. फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिष और पूर्वा भाद्रपद।

मध्य नाड़ी : भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़, धनिष्ठा और उत्तरा भाद्रपद।

अंत्य नाड़ी : कृत्तिका, रोहिणी, आश्लेषा, मधा, स्वाती, विशाखा, उत्तराषाढ़, श्रवण और रेवती।

नाड़ी विचार में समान नाड़ी का मेल करना अशुभ माना गया है, अर्थात् यदि वर की नाड़ी आदि हो तथा कन्या की नाड़ी भी आदि हो तो यह संबंध अशुभ माना गया है। इस अशुभ संबंध को नाड़ी दोष की संज्ञा दी गई है और नाड़ी दोष होने पर वर एवं कन्या के संबंध को वर्जित कहा गया है। यदि वर एवं कन्या की अलग—अलग नाड़ी हैं तो अधिकतम 8 अंक के सापेक्ष 8 अंक प्राप्त होते हैं और यदि वर एवं कन्या की नाड़ी समान है तो 0 (शून्य) अंक प्राप्त होते हैं। नाड़ी कूट में अंक ज्ञात करने के लिए नाड़ी बोध चक्र निम्नानुसार है—

वर कन्या : आदि

आदि : 0

मध्य : 8

अंत्य : 8

वर कन्या : मध्य

आदि : 8

मध्य : 0

अंत्य : 8

वर कन्या : अंत्य

आदि : 8

मध्य : 8

अंत्य : 0

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र भरणी प्रथम चरण तथा कन्या का जन्म नक्षत्र विशाखा प्रथम चरण है। उक्त जन्म नक्षत्र के आधार पर वर की नाड़ी मध्य एवं कन्या की नाड़ी अंत्य हुई। नाड़ी—बोध चक्र के अनुसार नाड़ी कूट के अधिकतम 8 अंक के सापेक्ष 8 अंक प्राप्त हुए।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि अष्टकूट मिलान में सर्वाधिक महत्त्व नाड़ी कूट का है, फिर भकूट कूट का है, तत्पश्चात् गण कूट एवं ग्रह मैत्री कूट का है; क्योंकि अधिकतम 36 अंकों के सापेक्ष उक्त चार प्रकार के कूट का कुल योग 26 अंकों का है। अत: उक्त चार प्रकार के कूटों की महत्ता सर्वोपरि समझनी चाहिए। उक्त अधिकतम 36 अंकों के सापेक्ष न्यूनतम 18 अंक यदि प्राप्त हों तथा नाड़ी दोष न हो तो यह मेलापक निम्न स्तर का माना जाएगा। यदि 20 अंकों से अधिक प्राप्त हों तथा नाड़ी दोष न हो तो यह मेलापक मध्यम स्तर का होगा और 26 अंकों से अधिक प्राप्त होने पर उत्तम स्तर का माना जाएगा। मेलापक यदि दोष—रहित हो, तभी उत्तम होता है। दोषों के परिहार के लिए कतिपय नियम हैं, जिनको मेलापक करते समय ध्यान में रखना आवश्यक है। कतिपय गण दोष, भकूट दोष एवं नाड़ी दोष के परिहार निम्नांकित हैं—

1. गण दोष परिहार : गण कूट के मिलान में यदि अधोलिखित परिस्थितियाँ बनती हैं, तब गण दोष का परिहार समझना चाहिए तथा प्राप्त अंकों में 3 अंक जोड़ देना चाहिए।

1. वर एवं कन्या का नक्षत्र समान, परंतु दोनों की जन्म राशियाँ भिन्न—भिन्न्हों।
2. वर एवं कन्या की जन्म राशि समान हों, परंतु दोनों के नक्षत्र भिन्न—भिन्न्हों।
3. वर एवं कन्या की जन्म राशि एवं नक्षत्र भी समान हों, परंतु दोनों के नक्षत्र चरण भिन्न—भिन्न हों।
4. वर और कन्या के जन्म राशियों के स्वामी या नवांश कुंडली की चंद्र राशियों के स्वामी परस्पर मित्र हों।

भकूट दोष परिहार : भकूट कूट के मिलान में यदि अधोलिखित स्थितियाँ बनती हैं तब भकूट दोष का परिहार समझना चाहिए तथा प्राप्त अंकों में 3.5 अंक जोड़ देना चाहिए।

1. वर एवं कन्या की जन्म राशि के स्वामी परस्पर मित्र हों।
2. वर एवं कन्या की जन्म राशि के स्वामी परस्पर शत्रु हों परंतु यदि दोनों के नवांश स्वामी एक हों।

नाड़ी दोष परिहार : नाड़ी कूट के मिलान में यदि निम्नलिखित स्थितियाँ बनती हों तब नाड़ी दोष का परिहार समझना चाहिए।

1. वर एवं कन्या का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, परंतु चरण भिन्न—भिन्न्हों।
2. वर एवं कन्या की जन्म राशि समान हो, परंतु दोनों के जन्म नक्षत्र भिन्न—भिन्न हों।
3. वर एवं कन्या के नक्षत्र समान हों, परंतु दोनों की जन्म राशियाँ भिन्न—भिन्न हों।
4. पाद बोध न हो।

वर के जन्म नक्षत्र का प्रथम चरण कन्या के जन्म नक्षत्र के चतुर्थ चरण से और वर के जन्म नक्षत्र के द्वितीय चरण का कन्या के जन्म नक्षत्र के तीसरे चरण से पाद बोध होता है। यह पाद बोध न हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है अर्थात् वर का नक्षत्र चरण प्रथम हो तो कन्या का जन्म नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो। यदि वर का जन्म नक्षत्र चरण दूसरा हो तो कन्या का जन्म नक्षत्र चरण प्रथम या चतुर्थ हो। यदि वर का जन्म नक्षत्र चरण तृतीय हो तो कन्या का जन्म नक्षत्र चरण प्रथम या चतुर्थ हो और यदि वर का जन्म नक्षत्र चरण चतुर्थ हो तो कन्या का जन्म नक्षत्र चरण दूसरा या तीसरा हो तो नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है तथा नाड़ी दोष परिहार हो जाने पर प्राप्त अंकों में 4 अंकों को जोड़ देना चाहिए।

विशेष नियम : सभी प्राचीन आचार्यों का मत है कि वर एवं कन्या की जन्म राशि समान हो तथा उन दोनों का जन्म नक्षत्र भिन्न—भिन्न हो तो उन दोनों का विवाह उत्तम होगा तथा राशि और नक्षत्र के आधार पर होनेवाले अधिकांश दोष नगण्य हो जाएँगे। इस संबंध में प्राचीन आचार्यों ने निम्नलिखित तीन नियम बतायेहैं—

1. यदि वर एवं कन्या दोनों की राशि समान हो, परंतु दोनों के जन्म नक्षत्र भिन्न—भिन्न हों तो ऐसा विवाह उत्तम माना जाता है। जैसे वर और कन्या दोनों की जन्म राशि मिथुन हो, परंतु दोनों वर और कन्या में एक का जन्म नक्षत्र मृगशिरा और दूसरे का जन्म नक्षत्र पुनर्वसु हो।

2. यदि वर एवं कन्या दोनों की जन्म राशि एवं जन्म नक्षत्र समान हो, परंतु दोनों के जन्म नक्षत्र के चरण भिन्न—भिन्न हों तो ऐसा विवाह मध्यम श्रेणी का माना जाता है। जैसे वर और कन्या दोनों की जन्म राशि मिथुन एवं जन्म नक्षत्र आर्द्रा हो, परंतु वर एवं कन्या दोनों में से एक का जन्म नक्षत्र आर्द्रा का प्रथम चरण और दूसरे का जन्म नक्षत्र आर्द्रा का द्वितीय, तृतीय या चतुर्थ चरण हो।

3. यदि वर एवं कन्या दोनों की जन्म राशि, जन्म नक्षत्र एवं जन्म नक्षत्र का चरण तीनों एक समान हों तो ऐसे विवाह को शास्त्रकार निषेध करते हैं। जैसे वर एवं कन्या दोनों की मिथुन राशि हो तथा जन्म नक्षत्र मृगशिरा का चतुर्थ चरण हो।

मेलापक से संबंधित उपर्युक्त सिद्धांत उत्तर भारत में प्रचलित हैं, परंतु दक्षिण भारत में दो विशिष्ट नियम 'त्रि रज्जु' एवं 'दशा—संधि' भी प्रचलित हैं, जिनका संक्षेप में विवरण निम्न प्रकार है—

त्रि—रज्जु नियम : त्रि—रज्जु का अर्थ है कि नक्षत्रों को तीन रस्सियों में बाँटना अर्थात् नक्षत्रों को पंक्तिवार तीन वर्गों में बाँटना है।

प्रथम पंक्ति : कृत्तिका

द्वितीय पंक्ति : रोहिणी

तृतीय पंक्ति : मृगशिरा

प्रथम पंक्ति : आर्द्रा

द्वितीय पंक्ति : पुनर्वसु

तृतीय पंक्ति : पुष्य

प्रथम पंक्ति : आश्लेषा

द्वितीय पंक्ति : मघा

तृतीय पंक्ति : पूर्वा फाल्गुनी

प्रथम पंक्ति : उत्तरा फाल्गुनी

द्वितीय पंक्ति : हस्त

तृतीय पंक्ति : चित्रा

प्रथम पंक्ति : स्वाती

द्वितीय पंक्ति : विशाखा

तृतीय पंक्ति : अनुराधा

प्रथम पंक्ति : ज्येष्ठा

द्वितीय पंक्ति : मूल

तृतीय पंक्ति : पूर्वाषाढ़

प्रथम पंक्ति : उत्तराषाढ़ा

द्वितीय पंक्ति : श्रवण

तृतीय पंक्ति : धनिष्ठा

प्रथम पंक्ति : शतभिष

द्वितीय पंक्ति : पूर्वा भाद्रपद

तृतीय पंक्ति : उत्तरा भाद्रपद

प्रथम पंक्ति : रेवती

द्वितीय पंक्ति : अश्विनी

तृतीय पंक्ति : भरणी

इस नियम का सिद्धांत यह है कि यदि किसी वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र एक ही पंक्ति के अंतर्गत आते हों तो विवाह सफल नहीं रहेगा, विवाहित जीवन में असुविधा रहेगी या पति—पत्नी के बीच मन—मुटाव रहेगा। उदाहरणार्थ माना कि वर का जन्म नक्षत्र हस्त एवं कन्या का जन्म नक्षत्र अश्विनी हो तो दोनों वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र चूँकि द्वितीय पंक्ति के हैं, अत: इस आधार पर यह माना जाएगा कि उक्त वर एवं कन्या का वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहेगा।

2. दशा—संधि : इस सिद्धांत को दक्षिण भारत में बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता है। दक्षिण भारत में जिस वर एवं कन्या के बीच दशा—संधि का सिद्धांत लागू होगा उनका विवाह यथा संभव टाल दिया जाता है। दशा—संधि का सिद्धांत विंशोत्तरी महादशा पर आधारित है।

यदि किसी वर और कन्या की विंशोत्तरी महादशा के अनुसार किन्हीं दो ग्रहों की महादशा 6 महीने की अवधि के अंदर प्रारंभ होती हो तो उसे 'दशा—संधि' कहते हैं। उदाहरणार्थ, माना वर की सूर्य की महादशा 15 अप्रैल, 2009 को प्रारंभ होती है तथा कन्या की शुक्र की महादशा 15 अक्तूबर, 2008 के बाद अथवा 15 अक्तूबर, 2010 के पहले प्रारंभ होती है तो दोनों वर एवं कन्या के जन्मांगों में दशा—संधि है, ऐसा माना जाएगा।

दक्षिण भारत में मान्यता है कि यदि विवाह के समय वर एवं कन्या के जन्मांगों में दशा—संधि हो तो विवाह की सफलता में बाधा अवश्य होती है और इसलिए दशा—संधिवाले वर एवं कन्या का विवाह टाल दिया जाता है, जिससे दशा—संधि का समय समाप्त हो जाए।

उपर्युक्त अष्ट कूट मिलान पद्धति को समझने के पश्चात् संक्षेप में किस प्रकार मेलापक करेंगे, इसकी विधि को समझाते हैं। पूर्व में अंकित वर्ण से लेकर योनि गुण बोधक चक्र एवं अवकहड़ा चक्र की मदद से मेलापक की विधि निम्नानुसार है। उदाहरणार्थ, माना कि वर का जन्म नक्षत्र आर्द्रा द्वितीय चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र भरणी तृतीय चरण है। सर्वप्रथम अवकहड़ा चक्र एवं गुण बोधक चक्र की मदद से निम्नानुसार चार्ट बनाते हैं—

कूट	वर	कन्या	प्राप्त अंक	अ. अंक
वर्ण	शूद्र	क्षत्रिय	0	1
वश्य	द्विपद	चतुष्पद	1	2
तारा	साधक	प्रत्यरि	1.5	3
योनि	श्वान	गज	2	4
ग्रह मैत्री	बुध	मंगल	1/2	5
गण	मानव	मानव	6	6
भकूट	मिथुन	मेष	7	7
नाड़ी	आदि	मध्य	8	8
		कुल गुण	26	36

इस प्रकार उक्त वर एवं कन्या के जन्म नक्षत्र के आधार पर कुल 36 गुणों के सापेक्ष 26 गुण मिलते हैं तथा उक्त मेलापक में नाड़ी दोष, भकूट दोष, गण दोष विद्यमान नहीं है; परंतु ग्रह मैत्री ने न्यूनतम अंक प्राप्त होने के कारण ग्रह मैत्री का मिलान उचित नहीं कहा जा सकता है; परंतु फिर भी गुणों के आधार पर मेलापक ठीक ही कहा जा सकता है।

उक्त के अतिरिक्त पंचांगों में वर—कन्या गुण मेलापक चक्र अंकित रहता है, जिसकी मदद से भी वर एवं कन्या के गुणों का मिलान किया जा सकता है, जिसकी विधि निम्न प्रकार है—

गुण मेलापक चक्र में पंक्ति में वर के जन्म नक्षत्र एवं कॉलम में कन्या के जन्म नक्षत्र अंकित रहते हैं। वर के जन्म नक्षत्र (पंक्ति) एवं कन्या के जन्म नक्षत्र (कॉलम) को मिलान करने पर जहाँ दोनों स्तंभ मिल जाएँ वहाँ पर जो संख्या अंकित हो वह संख्या ही गुणों की संख्या होती है। इसके अतिरिक्त गुणों की संख्या के नीचे कहीं—कहीं पर ऋणात्मक (—) चिह्न, धनात्मक (+) चिह्न या 0, 1, 2, 3, 4, 5 या 6 अंक अंकित रहते हैं, जिनका अर्थ निम्न प्रकार है—

ऋणात्मक (—) चिह्न : जहाँ थोड़ा दोष समझा गया।

धनात्मक (+) चिह्न : जहाँ अधिक दोष समझा गया।

0. जहाँ कन्या का नक्षत्र वर के नक्षत्र से पहले हो।

1. गण दोष
2. योनि दोष
3. नाड़ी दोष
4. भकूट दोष (द्धिर्दादश)
5. भकूट दोष (नव पंचक)
6. भकूट दोष (षडाष्टक)

उदाहरणार्थ : माना वर का जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी तृतीय चरण एवं कन्या का जन्म नक्षत्र चित्रा चतुर्थ चरण है तो वर—कन्या गुण मेलापक चक्र में 17½ गुण अंकित हैं तथा गुणों की संख्या के नीचे 124 अंकित है। इसका अर्थ है कि उक्त जन्म नक्षत्रों के आधार पर 17½ गुण मिलते हैं तथा गण दोष, योनि दोष एवं भकूट दोष (द्धिर्दादश) आदि हैं।

मंगल दोष

विवाह के संदर्भ में उकत मेलापक विधि से वर एवं कन्या के गुणों का मिलान हो जाता है, परंतु मेलापक दृष्टि से गुणों के अतिरिक्त वर एवं कन्या के जन्मांगों में मंगल का विचार प्रमुख विचार है। मंगल के विचार से ही स्पष्ट होता है कि वर या कन्या मंगली है अथवा नहीं? या वर और कन्या की जन्मांग मंगल दोष से प्रभावित है या नहीं? विवाह के संदर्भ में मंगल दोष को बहुत सावधानी पूर्वक देखना चाहिए एवं साथ—ही—साथ मंगल दोष के परिहार पर भी ध्यान देना चाहिए। यद्यपि जन्मांग में मंगल दोष पर ज्यादा विवाद नहीं है, परंतु मंगल दोष के परिहार पर विवाद अधिक होने के कारण मंगल दोष के संदर्भ में किसी विद्वान् ज्योतिषी की सलाह अवश्य लेकर ही मंगल दोष का निर्धारण करें। यहाँ पर संक्षेप में मंगल दोष एवं उसके परिहार की रीति समझाते हैं।

सर्वप्रथम यह जानना आवश्यक है कि जन्म—कुंडली में किन—किन भावों को मंगल दोष कारक होने की संज्ञा दी गई है। यदि जन्म—कुंडली में मंगल प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में से किसी भी भाव में स्थित हो, तब कहा जाएगा कि जन्म—कुंडली में मंगल दोष विद्यमान है। दक्षिण भारत में तथा उत्तर भारत के कुछ विद्वान् द्वितीय भाव को भी मंगल का दोष कारक भाव मानते हैं। अत: विवाह के संदर्भ में जिन भावों से मंगल का दोष माना जाता है, उक्त चक्र निम्न प्रकार है—
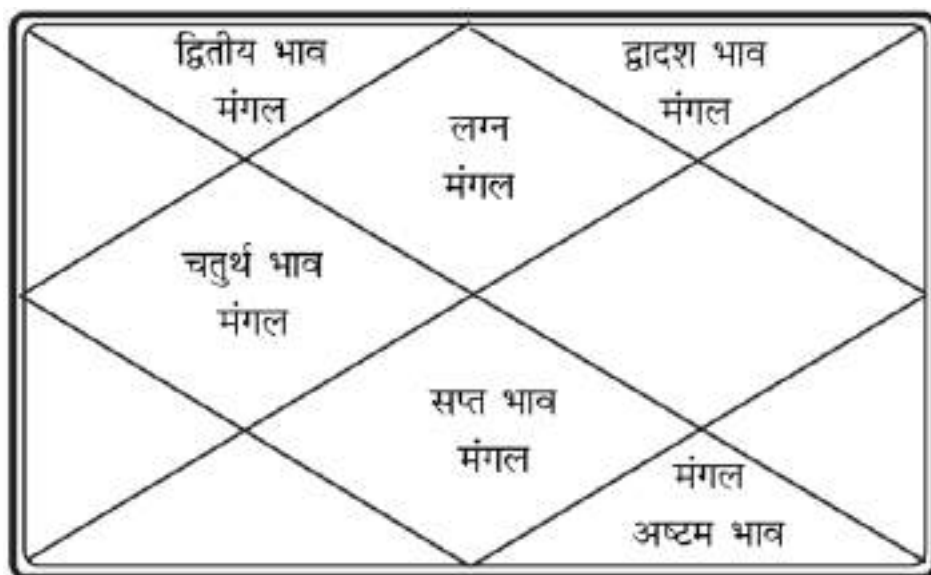
उक्त मंगल की स्थिति लग्न के अनुसार है। इसी प्रकार जन्म—कुंडली में जहाँ चंद्र स्थित हो उसको लग्न मानकर भी मंगल की स्थिति की विवेचना करनी चाहिए तथा इसी प्रकार जन्मांग में जहाँ शुक्र स्थित हो उसको लग्न मानकर यह देखना चाहिए कि मंगल उपर्युक्त किन्हीं 6 भावों में तो स्थित नहीं है। तात्पर्य यह है कि मंगल दोष में लग्न, चंद्र लग्न एवं शुक्र लग्न से यदि मंगल उपर्युक्त वर्णित भावों में स्थित है तो वह जन्मांग मंगल दोष से युक्त मानी जाएगी।

मंगल दोष परिहार : मंगल के उक्त वर्णित भावों में स्थित होने से वह जन्मांग मंगल दोष से प्रभावित मानी जाती है, इसमें कोई संदेह नहीं है; परंतु मंगल दोष के परिहार के संबंध में विद्वानों के बीच मतभेद हैं। अत: मंगल दोष परिहार के लिए विद्वान् ज्योतिषी की सलाह से ही उसका परिहार मानें। यहाँ पर मंगल दोष से संबंधित परिहार के कुछ नियम बताते हैं, परंतु यह नियम अंतिम नहीं है।

1. यदि मंगल मेष राशि, कर्क राशि, वृश्चिक राशि या मकर राशि में हो तथा मंगल चतुर्थ या सप्तम भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

2. यदि मंगल मेष, मिथुन, कन्या या वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल द्वितीय भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

3. यदि मंगल मेष, वृष, तुला या वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल चतुर्थ भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

4. यदि मंगल मेष, कर्क, वृश्चिक या मकर राशि में हो तथा मंगल सप्तम भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

5. यदि मंगल कर्क, धनु, मकर या मीन राशि में हो तथा मंगल अष्टम भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

6. यदि मंगल वृष, मिथुन, कन्या या तुला राशि में हो तथा मंगल द्वादश भाव पर लग्न से चंद्र लग्न से या शुक्र लग्न से स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

7. यदि वर एवं कन्या किसी एक के जन्मांग में मंगल प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो तथा दूसरे के जन्मांग में उक्त किसी भी भाव में शनि स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो

जाता है।

8. सिंह लग्न और कर्क लग्न में यदि मंगल लग्न में स्थित हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

9. शनि यदि प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में एक के जन्मांग में हो और दूसरे के जन्मांग में उक्त भावों में से किसी एक भाव में मंगल हो तो मंगल दोष का परिहार हो जाता है।

10. यदि राहु, मंगल या शनि जन्मांग के तृतीय, षष्ठ या एकादश भावों में दूसरी कुंडली में हो तो मंगल दोष नष्ट हो जाता है।

मौलिया मंगल : जन्म—कुंडली के लग्न स्थान से प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में मंगल हो तो ऐसी कुंडली मंगलीक कहलाती है; परंतु उपर्युक्त स्थिति यदि पुरुष जन्मांग में हो तो वह जन्मांग मौलिया मंगल वाली कहलाती है।

चुनरी मंगल : यदि उपर्युक्त भावों में मंगल किसी स्त्री के जन्मांग में हो तो वह जन्मांग चुनरी मंगल वाली कहलाती है।

❑

विविध ज्ञान

भद्रा विचार : समस्त करणों में भद्रा का विशेष महत्त्व कहा गया है। विष्टि करण को ही भद्रा कहा गया है। शुक्लपक्ष 8 एवं 15 तिथि के पूर्वाद्र्ध, 4 एवं 11 तिथि के उत्तराद्र्ध में तथा कृष्णपक्ष की 3 एवं 10 तिथि के उत्तराद्र्ध और 7 तथा 10 तिथि के पूर्वाद्र्ध में भद्रा रहती है।

तिथि के पूर्वाद्र्ध में दिवा भद्रा और उत्तराद्र्ध में रात्रि भद्रा होती है। पूर्वाद्र्ध की भद्रा दिन में और उत्तराद्र्ध की भद्रा रात्रि में त्याज्य होती है। इसके विपरीत पूर्वाद्र्ध की भद्रा रात्रि में और उत्तराद्र्ध की भद्रा दिन में समस्त कार्यों में प्रशस्त होती है।

भद्रा का मुख भाग ही त्याज्य करना चाहिए, जबकि पुच्छ भाग सब कार्यों में शुभ फलप्रद है। कृष्णपक्ष की भद्रा को वृश्चिकी और शुक्लपक्ष की भद्रा को सर्पिणी कहते हैं। आवश्यक कार्यों में भद्रा का मुख त्याज्य देना चाहिए। सर्पिणी भद्रा का मुख छोड़ देना चाहिए, क्योंकि सर्प के मुख में विष होता है तथा वृश्चिक के पूँछ में विष होता है, इसलिए वृश्चिक भद्रा की पूँछ त्याग देनी चाहिए।

सोमवार और शुक्रवार की भद्रा को कल्याणी, शनिवार की भद्रा को वृश्चिकी, गुरुवार की भद्रा को पुण्यवती और रविवार, मंगलवार व बुधवार की भद्रा को भद्रिका कहते हैं। शनिवार की भद्रा को अशुभ माना जाता है।

भद्रा का निवास चंद्र राशि से ज्ञात करना चाहिए। चंद्र जिस राशि में होगा उसी के अनुसार भद्रा का फल होगा। यदि चंद्र मेष, वृष, मिथुन और वृश्चिक राशि में हो तो यह भद्रा स्वर्ग लोक की है तथा यह भद्रा धन—धान्य एवं लाभकारी होगी। यदि चंद्र कन्या, तुला, धनु एवं मकर राशि में हो तो यह भद्रा पाताल लोक की है तथा यह भद्रा सुख व धन की प्राप्ति कराएगी। यदि चंद्र, कर्क, सिंह, कुंभ या मीन राशि में हो तो यह भद्रा मृत्युलोक की है तथा यह कार्य में असफलता देती है।

जिस लोक में भद्रा हो उसी लोक में उसका शुभाशुभ फल होता है। मृत्यु लोक की भद्रा सदैव वर्जित करनी चाहिए। स्वर्ग और पाताल में भद्रा शुभ होने के कारण शुभ मानी जाती है।

नोट : मीन संक्रांति में भद्रा का दोष नहीं लगता है।

1. पंचक : पंचांग में प्रत्येक माह लगभग 5 दिन पंचक—पंचक लिखा रहता है, अर्थात् चंद्र जब कुंभ एवं मीन राशि में संचरण करता है तब पंचक लगता है या हम कह सकते हैं कि जब चंद्र धनिष्ठा नक्षत्र के उत्तराद्र्ध में, शतभिष, पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद एवं रेवती नक्षत्र में संचरण करता है तब वे तिथियाँ पंचक तिथियाँ एवं उक्त पाँच नक्षत्र पंचक संज्ञक नक्षत्र कहलाते हैं।

पंचक में समस्त शुभ कार्य, यात्रा, गृह प्रवेश, गृहारंभ आदि वर्जित है तथा ऐसा माना जाता है कि पंचक में यदि कोई कार्य किया जाता है तो वह पाँच वार होता है।

2. खर मास : सूर्य की जब धनु व मीन राशि में संक्रांति होती है अर्थात् जिस दिनांक को सूर्य धनु या मीन राशि में प्रवेश करता है उस दिनांक से खर मास प्रारंभ माना जाता है। वर्ष 2009 में 14 मार्च को सूर्य की मीन राशि में संक्रांति हुई है। अत: 14 मार्च से खर मास का प्रारंभ माना जाएगा तथा उक्त खर मास का अंत सूर्य की मेष संक्रांति 13 अप्रैल को माना जाएगा। इसी प्रकार सूर्य की धनु संक्रांति 15 दिसंबर से होने के कारण 15 दिसंबर से एक माह का खर मास माना जाएगा।

खर मास में विवाहादि शुभ कार्य वर्जित रहते हैं।

3. प्रदोष : किसी भी माह की त्रयोदशी को प्रदोष कहते हैं। प्रदोष का व्रत रखे जाने का विधान है। जैसा कि हम जानते हैं कि माह में दो पक्ष होने के कारण माह में दो प्रदोष तिथियाँ होती हैं, जिसमें प्रदोष का व्रत रखा जाता है। प्रदोष व्रत में सोम प्रदोष व्रत, भौम प्रदोष व्रत एवं शनि प्रदोष व्रत का विशेष महत्त्व है।

4. अभिजित नक्षत्र : जैसा कि हम जानते हैं कि नक्षत्रों की कुल संख्या 27 होती है, परंतु कहीं—कहीं किसी मुहूर्त निकालने में या अन्यत्र अभिजित नक्षत्र की भी गणना की जाती है और इस प्रकार नक्षत्रों की कुल संख्या 28 मानी जाय तो अभिजित नक्षत्र उत्तराषाढ़ और श्रवण नक्षत्र के बीच स्थित किया गया है तथा अभिजित नक्षत्र का मान 19 घटी के बराबर माना गया है। यह 19 घटी उत्तराषाढ़ नक्षत्र का अंतिम चतुर्थ भाग 15 घटी का तथा श्रवण नक्षत्र के प्रारंभ भाग का 4 घटी मिलाकर अभिजित नक्षत्र को 19 घटी का मान दिया गया है।

विभिन्न प्रकार के योग

पंचांग में विभिन्न प्रकार के योगों का उल्लेख रहता है, जैसे सर्वार्थ सिद्धि योग, अमृत सिद्धि योग, पुष्य योग, रवि योग, द्वि पुष्कर योग, त्रि पुष्कर योग आदि। उक्त सभी योग शुभ योगों की श्रेणी में आते हैं कुछ अपवादों को छोड़कर। संक्षेप में प्रत्येक योग का विवरण निम्न प्रकार है—

1. सर्वार्थ सिद्धि योग : सर्वार्थ सिद्धि योग वार एवं विशेष नक्षत्रों से मिलकर बने हैं। प्रत्येक वार में कौन—कौन से नक्षत्र का संयोग हो, जिसे स्रर्वार्थ सिद्धि योग बने, विवरण निम्न प्रकार है—

वार	नक्षत्र	दुष्ट तिथि
रविवार	अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, मूल	1,3, 7
सोमवार	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा, श्रवण	2, 11
मंगलवार	अश्विनी, कृत्तिका, आश्लेषा, उत्तरा भाद्रपद	3, 9, 12
बुधवार	कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा	7,9, 11
गुरुवार	अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य, अनुराधा, रेवती	
शुक्रवार	अश्विनी, पुनर्वसु, अनुराधा, श्रवण, रेवती	11, 13
शनिवार	रोहिणी, स्वाती, श्रवण	

उक्त वार एवं विशेष नक्षत्रों से बने सर्वार्थ सिद्धि योग में गुरुवार एवं शुक्रवार को छोड़कर शेष वारों में दुष्ट तिथियाँ अंकित हैं, जिसका अर्थ होगा कि जैसे रविवार को अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, मूल इन सात नक्षत्रों में से कोई एक नक्षत्र आ जाय तो उसके योग काल तक सर्वार्थ सिद्धि का शुभ मुहूर्त होगा, लेकिन उसके बीच में शुक्ल या कृष्णपक्ष की प्रतिपदा, तृतीया या सप्तमी तिथि में से कोई तिथि आ जाय तो उस तिथि काल का सर्वार्थ सिद्धि योग दूषित होगा तथा उस समय तक कोई भी शुभ कार्य करना वर्जित है।

उदाहरणार्थ : 3 मार्च, 2009 को दिन मंगलवार है, कृत्तिका नक्षत्र है, अत: उक्त दिनांक को सर्वार्थ सिद्धि योग होगा। उक्त दिनांक को सप्तमी तिथि है, जो मंगलवार की दुष्ट तिथि भी नहीं है। उक्त वार को

सूर्य उदय 6 बजकर 23 मिनट पर हुआ था तथा कृत्तिका नक्षत्र 20 बजकर 21 मिनट तक रहेगा। अत: उक्त दिनांक को सर्वार्थ सिद्धि योग प्रात: 6 घंटा 23 मिनट से 20 घंटा 21 मिनट तक रहेगा।

2. अमृत सिद्धि योग : जिस प्रकार सर्वार्थ सिद्धि योग वार एवं विशेष नक्षत्रों के संयोग से बनते हैं ठीक उसी प्रकार अमृत सिद्धि योग भी वार एवं विशेष नक्षत्रों के संयोग से बनते हैं तथा जिस प्रकार सर्वार्थ सिद्धि योग में दुष्ट तिथियाँ होती हैं, ठीक उसी प्रकार अमृत सिद्धि योग में विष योग तिथियाँ होती हैं। अमृत सिद्धि योग के बीच में यदि विष योग तिथि आ जाए तो उस तिथि काल का अमृत सिद्धि योग दूषित होगा तथा उस काल में शुभ कार्य करना वर्जित है। प्रत्येक वार में कौन—कौन से नक्षत्र का संयोग हो जिससे अमृत सिद्धि योग बने तथा विष योग तिथियों का विवरण निम्न प्रकार है—

वार : रविवार

नक्षत्र : हस्त

विष योग तिथि : पंचमी

वार : सोमवार

नक्षत्र : मृगशिरा

विष योग तिथि : षष्ठी

वार : मंगलवार

नक्षत्र : अश्विनी

विष योग तिथि : सप्तमी

वार : बुधवार

नक्षत्र : अनुराधा

विष योग तिथि : अष्टमी

वार : गुरुवार

नक्षत्र : पुष्य

विष योग तिथि : नवमी

वार : शुक्रवार

नक्षत्र : रेवती

विष योग तिथि : दशमी

वार : शनिवार

नक्षत्र : रोहिणी

विष योग तिथि : एकादशी

उदाहरणार्थ : 27 मार्च, 2009 को दिन शुक्रवार तथा नक्षत्र रेवती एवं तिथि प्रतिपदा है, अत: उक्त दिनांक को अमृत सिद्धि योग हुआ। उक्त दिनांक को रेवती नक्षत्र 29 घंटा 11 मिनट तक है तथा शुक्रवार 5 घंटा 58 मिनट से प्रारंभ है। अत: उक्त दिनांक को अमृत सिद्धि योग 5 घंटा 58 मिनट से प्रारंभ होगा तथा 29 घंटा 11 मिनट पर समाप्त होगा।

3. पुष्यामृत योग : जिस प्रकार समस्त जानवरों का राजा सिंह होता है, उसी प्रकार समस्त नक्षत्रों का राजा पुष्य नक्षत्र होता है। पुष्य नक्षत्र में यदि अन्य किसी भी प्रकार का दोष भी हो तब भी पुष्य नक्षत्र में किया गया कार्य सिद्ध होता है, केवल विवाह कार्य को छोड़कर। पुष्य नक्षत्र के साथ—साथ यदि अभीष्ट दिन रविवार या गुरुवार पड़ जाता है तब पुष्यामृत योग बनता है, जो अत्यंत शुभ योग बनता है। जब पुष्य नक्षत्र के साथ रविवार का संयोग हो तब रवि पुष्य योग बनता है, जो तंत्र—मंत्र की सिद्धि तथा जड़ी—बूटी ग्रहण करने के लिए सर्वोत्तम दिन माना जाता है तथा जब पुष्य नक्षत्र के साथ गुरुवार का संयोग हो तब गुरु पुष्य योग बनता है, जो व्यापारिक एवं आर्थिक कार्य के लिए विशेष रूप से शुभ माना जाता है। उदाहरणार्थ 30 अप्रैल, 2009 को दिन गुरुवार एवं पुष्य नक्षत्र का संयोग होने पर उस दिन गुरु पुष्य योग 25 घंटा 54 मिनट से 29 घंटा 26 मिनट तक रहा। इसी प्रकार दिनांक 8 नवंबर, 2009 को दिन रविवार एवं पुष्य नक्षत्र के संयोग होने पर उस दिन रवि पुष्य योग 11 घंटा 22 मिनट से 30 घंटा 14 मिनट तक रहा।

4. द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग : पंचांगों में द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग अंकित रहते हैं जो वार, तिथि एवं नक्षत्र के योग से बनते हैं। द्विपुष्कर योग मृत्यु—विनाश और वृद्धि में दो गुना फल देते हैं तथा त्रिपुष्कर योग मृत्यु—विनाश और वृद्धि में तीन गुना फल देते हैं। द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग में वार एवं तिथि समान होते हैं, परंतु नक्षत्रों का अंतर होता है। जो नक्षत्र द्विपाद होते हैं, उनसे द्विपुष्कर योग बनता है तथा जो नक्षत्र त्रिपाद होते हैं उनसे त्रिपुष्कर योग बनते हैं। वार, तिथि एवं द्विपाद, त्रिपाद नक्षत्रों का वर्णन निम्नानुसार है—

वार—शनिवार, मंगलवार एवं रविवार

तिथि—द्वितीया, सप्तमी, दशमी एवं द्वादशी

द्विपाद नक्षत्र—मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा

त्रिपाद नक्षत्र— कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद

उदाहरणार्थ : 19 जनवरी, 2008

वार—शनिवार

तिथि—द्वादशी

नक्षत्र—मृगशिरा

उक्त दिनांक को वार शनिवार, तिथि द्वादशी एवं द्विपाद नक्षत्र मृगशिरा होने से द्विपुष्कर योग 16 घंटा 38 मिनट से 26 घंटा 17 मिनट तक हुआ।

उदाहरणार्थ : 8 जुलाई, 2008

वार— मंगलवार

तिथि—सप्तमी

नक्षत्र—पूर्वा भाद्रपद

उक्त दिनांक को वार मंगलवार, तिथि सप्तमी एवं त्रिपाद नक्षत्र पूर्वा भाद्रपद होने से त्रिपुष्कर योग 20 घंटा 51 मिनट से 29 घंटा 15 मिनट तक हुआ।

नोट : सर्वार्थ सिद्धि योग एवं अमृत सिद्धि योग यदि किसी दिन एक साथ पड़ जाएँ तो वह दिन अशुभ हो जाता है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार घी और शहद समान मात्रा में मिलाने पर विष तुल्य हो जाता है। अत: जिस दिन उक्त दोनों योग हों उस दिन शुभ कार्य को वर्जित माना गया है।

5. रवि योग : सूर्य नक्षत्र से चंद्र के नक्षत्र तक गिनती करने से यदि सूर्य से चंद्र का नक्षत्र 4, 6, 9, 10, 13, 20 इन संख्याओं में पड़े तो उस दिन रवि योग होगा जो समग्र दोषों को अच्छी प्रकार दूर करता है। उदाहरणार्थ— जिस दिन सूर्य कृत्तिका नक्षत्र में हो और चंद्र आर्द्रा नक्षत्र में हो तो सूर्य के नक्षत्र कृत्तिका से चंद्र के नक्षत्र आर्द्रा तक गिना तो संख्या (कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा) 4 आई अर्थात् उस दिन रवि योग होगा, ऐसा समझना चाहिए।

घात चक्र का विचार

घात चक्र के अनुसार जातक को अपनी चंद्र राशि के अनुसार घात चक्र में अंकित मास, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, प्रहर एवं चंद्र राशि के सम्मुख अंकित विवरण के अनुसार प्रवास, राजदर्शन और यात्रा न करे। उदाहरणार्थ—माना जातक की चंद्र राशि धनु है, उस जातक के लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी एवं त्रयोदशी तिथि, दिन शुक्रवार, नक्षत्र भरणी, योग वज्र, करण तैतिल, प्रथम प्रहर, पुरुष जातक के लिए घात चंद्र मीन राशि में तथा स्त्री जातक के लिए घात चंद्र कन्या राशि है।

अत: जिस जातक की धनु राशि है उस जातक को प्रवास, राजदर्शन और यात्रा में श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी या त्रयोदशी तिथि, शुक्रवार का दिन, भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, प्रथम प्रहर, मीन अथवा कन्या राशि, उक्त को छोड़कर अन्य में प्रवास, राजदर्शन या यात्रा करनी चाहिए।

घात चक्र

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	1,6.11	5,10,15	2,7.12	2.7,12	3,8.13	5,10.15	4,9.14	1,6,11	3,8.13	4,9,14	3,8,13	5,10,15
घात बार	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाती	अनुराधा	मूल	श्रवण	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विषकुंभ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शुक्ल	शुक्ल	व्यतीपात	वज्र	वैधृति	गंड	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
प्रहर	1	2	3	1	1	1	4	1	1	4	3	4
पु.घातचंद्र	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुंभ
स्त्री घातचंद्र	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुंभ

राहु काल का समय

सप्ताह के प्रत्येक दिन 90 मिनट का एक ऐसा काल होता है जिस काल में शुभ कार्य करना वर्जित माना गया है। उसी खंड काल को राहु काल का समय बताया गया है।

रविवार—प्रात: 4.30 से 6.00 बजे तक

सोमवार—प्रात: 7.30 से 9.00 बजे तक

मंगलवार—अपराह्न 3.00 से 4.30 बजे तक

बुधवार—दोपहर 12.00 से 1.30 बजे तक

गुरुवार—दोपहर 1.30 से 3.00 बजे तक

शुक्रवार—प्रात: 10.30 से 12.00 दोपहर तक

शनिवार—प्रात: 9.00 से 10.30 बजे तक

देवशयन : आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी से कार्तिक शुक्लपक्ष की एकादशी तक देवता शयन करते हैं, अत: उक्त समय को देव शयन का समय कहते हैं। उक्त अवधि में गृह निर्माण, विवाह, यात्रा, यज्ञ, दान, देव मूर्ति की प्रतिष्ठा आदि कार्य वर्जित कहे गए हैं।

वक्री/मार्गी ग्रह

संस्कृत में वक्री का अर्थ 'कुटिल' होता है, अर्थात् जो सीधा न चले। अंग्रेजी में वक्री को (Retrograde) कहा जाता है, जिसका अर्थ 'पीछे की ओर जानेवाला' होता है।

मार्गी का अर्थ, जो मार्ग पर चले अर्थात् जो सीधा चले। अत: वक्री का विपरीत 'मार्गी' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

ज्योतिष—शास्त्र अथवा पंचांग में वक्री एवं मार्गी शब्द ग्रहों के लिए प्रयुक्त किया जाता है। जब कोई ग्रह सीधा अर्थात् आगे की ओर चलता है तब उस ग्रह को मार्गी कहा जाता है, परंतु जब कोई ग्रह पीछे की ओर चलता है तब उसे वक्री कहा जाता है। पंचांग में जब कोई ग्रह वक्री होता है तब उस ग्रह के आगे 'ब' या अंग्रेजी का 'R' शब्द लगा दिया जाता है और इसी प्रकार जब कोई ग्रह वक्री से मार्गी होता है तब उस ग्रह

के आगे अंग्रेजी का अक्षर 'D' लगा दिया जाता है। जब कोई भी चिह्न किसी ग्रह के आगे अंकित नहीं होता है, इसका अर्थ है कि ग्रह अपनी स्वाभाविक गति से चल रहा है।

अब प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में ग्रह पीछे की ओर चलते हैं? वास्तव में ग्रह कभी भी पीछे की ओर नहीं चलते हैं, ग्रह जो एक आकर्षण घेरे में निश्चित गति से लगातार घूमते रहते हैं कभी भी पीछे की ओर नहीं घूम सकते हैं। वक्री कहने का मात्र इतना अर्थ है कि पृथ्वी की तुलना में मंद गति होने की सूचना देता है। वक्री ग्रह प्रत्यक्ष रूप से गति के अंतर के कारण दिखलाई देनेवाली भिन्नस्थितिहै।

सूर्य और चंद्रमा दो ऐसे ग्रह हैं, जो कभी भी वक्री नहीं होते; क्योंकि इन ग्रहों की गति अपेक्षाकृत पृथ्वी की गति से तेज रहती है। राहु और केतु दो ऐसे ग्रह हैं जो कभी भी मार्गी नहीं होते, क्योंकि इन ग्रहों की गति अपेक्षाकृत पृथ्वी की गति से हमेशा मंद रहती है। उक्त के अतिरिक्त मंगल, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनि पाँच ऐसे ग्रह हैं जो समय—समय पर वक्री होते रहते हैं। मार्गी एवं वक्री के बीच एक स्थिति ऐसी होती है जब ग्रह स्थिर प्रतीत होते हैं। ग्रहों की 'स्थिर' स्थिति तब होती है जब पृथ्वी की गति एवं ग्रह की गति लगभग समान होती है। तब देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि ग्रह स्थिर हो गया है।

भास्कराचार्य ने 'सूर्य सिद्धांत' में ग्रहों की आठ प्रकार की गतियों का उल्लेख किया है—

1. वक्र 2. अनुवक्र 3. कुटिल 4. मंद 5. मंदरतरा 6. सम 7. शीघ्र 8. शीघ्रतर उक्त आठ प्रकार की गतियों में वक्र, अनुवक्र एवं कुटिल, वक्र गति ही है। मंद और मंदरतरा स्थिर गति ही है तथा सम, शीघ्र एवं शीघ्रतर मार्गी गति हीहै।

अत: हम यह कह सकते हैं कि ग्रहों का मार्गी या वक्री या स्थिर होना मात्र गति के अंतर के कारण ही दिखलाई पड़ता है। विभिन्न ग्रहों के वक्री एवं स्थिर रहने का समय निम्नानुसार है—

शनि 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होने से 5 दिन पूर्व एवं बाद में स्थिर रहता है।

गुरु 120 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होने से लगभग 5 दिन पूर्व एवं बाद में स्थिर रहता है।

मंगल 75 से 80 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होने से 2 या 3 दिन पूर्व एवं बाद में स्थिर रहता है।

शुक्र लगभग 42 दिन वक्री रहता है तथा लगभग वक्री होने से 2 दिन पूर्व एवं बाद में स्थिर रहता है।

बुध लगभग 24 दिन वक्री रहता है तथा लगभग वक्री होने से 1 दिन पूर्व एवं बाद में स्थिर रहता है।

इष्ट काल

'इष्ट' का शाब्दिक अर्थ है—वांछित या अभीष्ट तथा 'काल' का शाब्दिक अर्थ है—समय, अत: इष्ट काल का शाब्दिक अर्थ है—वांछित या अभीष्ट समय। इष्टकाल की गणना फलित ज्योतिष में वांछित समय ज्ञात करने के लिए आवश्यक होती है। शुद्ध जन्मांग बनाने के लिए शुद्ध इष्ट काल आवश्यक है।

ज्योतिष में सूर्योदय से लेकर वांछित समय तक के काल को इष्ट काल कहा जाता है। जन्मांग निर्माण में समय का मुख्य आधार इष्ट काल ही होता है। इष्ट काल जितना सूक्ष्म तथा शुद्ध होगा, जन्मांग भी उतना ही शुद्ध होगा तथा जब जन्मांग शुद्ध होगा, तब उसका फलादेश भी शुद्ध एवं सटीक होगा। अत: फलित ज्योतिष में सटीक एवं प्रामाणिक फलादेश का आधार—स्तंभ इष्ट काल ही है। इष्ट काल के आधार पर ही लग्न सारणी द्वारा स्थानीय अक्षांश पर शुद्ध लग्न की गणना की जाती है।

इष्ट काल का समय घड़ी—पल में होता है और यदि समय घंटा—मिनट में ज्ञात हो तो घंटा—मिनट को घड़ी—पल में परिवर्तित करके इष्ट काल ज्ञात करते हैं।

यहाँ पर इष्ट काल ज्ञात करने की स्थूल विधि समझाते हैं। सूक्ष्म विधि ज्योतिष के गणित खंड में बतलाई गई है—

उदाहरणार्थ : किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर 2008 को 11.25 ए.एम. पर लखनऊ में हुआ है। इष्ट काल ज्ञात करना है—

● सर्वप्रथम पंचांग में 2 अक्तूबर, 2008 का सूर्योदय ज्ञात किया। पंचांग में उक्त तिथि को सूर्योदय का समय 05—15 ए.एम. अंकित था।

● जन्म समय तथा सूर्योदय समय का अंतर ज्ञात किया, 11.25—5.51 = घंटा 5 मिनट 34 प्राप्त हुआ।

● प्राप्त अंतर घंटा—मिनट में है, अत: उक्त घंटा—मिनट को घड़ी—पल में परिवर्तित किया।

घंटा 5 मिनट 34 = घड़ी 13 पल 55

● अत: इष्ट काल घड़ी 13 पल 55 हुआ।

नोट : उक्त पंचांग काशी का है, परंतु जातक का जन्म लखनऊ का है, अत: सूक्ष्म रूप से गणित करने पर इष्ट काल उक्त प्राप्त इष्ट काल से थोड़ा भिन्न होगा।

नोट : यदि जातक का जन्म उक्त तिथि में ही काशी में हुआ होता तब शुद्ध इष्ट काल घड़ी 13 पल 51 विपल 48 प्राप्त होता, जो स्थूल रूप से प्राप्त इष्ट काल के काफी सन्निकट होता।

उदाहरणार्थ : किसी जातक का जन्म उक्त तिथि में ही 2.50 पी.एम. पर काशी में हुआ है। इष्ट काल ज्ञात करना है—

अक्तूबर 2008 का सूर्योदय समय त्र 5.51 ए.एम.

● जन्म समय तथा सूर्योदय समय का अंतर

= 14 घंटा 50 मिनट — 5 घंटा 51 मिनट

= 8 घंटा 59 मिनट

● प्राप्त अंतर को घड़ी—पल में परिवर्तित किया

= 22 घड़ी 28 पल

अत: इष्ट काल 22 घड़ी 28 पल

● सूक्ष्म रूप से जब इष्ट काल की गणना की गई, तब उक्त तिथि का इष्ट काल 22 घड़ी 24 पल 18 विपल प्राप्त हुआ, जो स्थूल गणित द्वारा प्राप्त इष्टकाल के लगभग बराबर ही था।

चार मेघों का विचार : आवर्तक, संवर्तक, पुष्कर, द्रोण—ये चार मेघ चतुर्मेघ कहलाते हैं। इनसे पूरे वर्ष में वर्षा का विशेष विचार किया जाता है। शक संवत् की जो वर्तमान संख्या हो उसमें से 1509 घटाकर 4 से भाग देने से जो शेष बचे वही क्रमश: 'मेघ' होता है।

उदाहरणार्थ : शक संवत् 1930 में से 1509 घटाकर 421 संख्या मिली। 421 ÷ 4 = शेष 1 रहा, अत: आवर्तक नामक मेघ है।

आवर्तक—खंड वृष्टि

संवर्तक—जल की प्रचुरता

पुष्कर—मंद वृष्टि

द्रोण—संतुलित वर्षा

संवत् समय के वाहन का विचार : वर्ष का राजा सूर्यादि ग्रहों में से जो हो, तदनुसार समय वाहन जानना अभीष्ट है। सूर्यादि ग्रहों के राजा होने पर क्रमश: समय वाहन इस प्रकार है—

राजा : सूर्य

वाहन : घोड़ा

राजा : गुरु

वाहन : चातक

राजा : चंद्र

वाहन : हिरण

राजा : शुक्र

वाहन : मेढक

राजा : मंगल

वाहन : हिरण

राजा : शनि

वाहन : भैंसा

राजा : बुध

वाहन : गीदड़

राजा :

वाहन :

● **गुर्रा विचार :** जिस प्रकार विक्रम संवत् के आरंभ में जो वार हो वही ग्रह वर्ष का राजा होता है, उसी प्रकार हिजरी सन् के प्रारंभ दिन अर्थात् मुहर्रम की पहली तारीख को जो वार हो वही ग्रह 'गुर्रापति' कहलाता है। इससे संपूर्ण वर्ष का फल देखा जाता है।

जैसे 30 दिसंबर, 2008 को हिजरी सन् 1430 प्रारंभ हुआ, अर्थात् मुहर्रम की पहली तारीख थी, उस दिन मंगलवार था। मंगलवार का स्वामी ग्रह मंगल होने से हिजरी सन् 1430 को मंगल ग्रह गुर्रापति कहलाएगा।

गुर्रापति मंगल द्वारा संपूर्ण वर्ष का फल देखा जाएगा, अर्थात् संपूर्ण वर्ष मंगल के गुण उपद्रव, मार—काट, युद्ध, शीत युद्ध, खलबली, अग्नि कांड, दुर्भिक्षादि फल होते हैं।

● **संक्रांति मुहूर्त ज्ञान :** पंचांगों में संक्रांति के दिन उसके सामने 15 मुहूर्ती, 45 मुहूर्ती आदि शब्द लिखे रहते हैं। इनका आधार व प्रयोजन निम्नानुसार्है—

हम जानते हैं कि भरणी, आर्द्रा, ज्येष्ठा, स्वाती, आश्लेषा व शतभिष इन 6 नक्षत्रों को जघन्य नक्षत्र कहते हैं। तीनों उत्तरा, विशाखा, पुनर्वसु व रोहिणी इन 6 नक्षत्रों को 'बृहत् नक्षत्र' कहते हैं तथा शेष 15 नक्षत्रों को 'सम नक्षत्र' कहते हैं।

जब संक्रांति के समय दिन नक्षत्र या चंद्र नक्षत्र बृहत् संज्ञक हो तो संक्रांति की 45 मुहूर्ती संक्रांति कहते हैं। जब संक्रांति जघन्य नक्षत्रों के दिन हो तो वह 15 मुहूर्ती कहलाती है। सम संज्ञक नक्षत्रों में 30 मुहूर्ती होती है।

45 मुहूर्ती संक्रांति से उस मास में चीजें सस्ती होती हैं। 30 मुहूर्ती संक्रांति में चीजें समान रूप से होती हैं तथा 15 मुहूर्ती संक्रांति में चीजों में तेजी रहती है।

वर्ष के दस पदाधिकारी

आकाशीय मंत्रि मंडल में प्रतिवर्ष ग्रहों को दस पद दिए जाते हैं। इनसे प्रतिवर्ष विभिन्न क्षेत्रों का शुभाशुभ फल विचार किया जाता है—

1. राजा विचार : चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को जो वार होता है, उस वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का राजा कहते हैं। यह ग्रह आकाशीय मंत्री परिषद् में प्रधान मंत्री कहलाता है तथा वर्ष में सभी प्रकार के शुभाशुभ मेदिनीय भविष्य को प्रभावित करता है। क्रूर ग्रह राजा हो तो ठगी, बेईमानी, कर—वृद्धि, दुर्घटनाएँ आदि अधिक होती हैं तथा शुभ ग्रह राजा होने पर शुभ फलों की वृद्धि होती है।

2. मंत्री विचार : मेष संक्रांति के समय जो वार हो, उस वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का मंत्री कहते हैं। इसमें भी क्रूर ग्रह व शुभ ग्रह आदि के सापेक्ष अशुभ या शुभ फलों का विचार किया जाता है।

3. सस्येश विचार : श्रावण या कर्क संक्रांति के दिन जो वार होता है, उस वार के स्वामी ग्रह सस्येश अर्थात् फसलों का विभागाध्यक्ष कहलाता है। यदि सस्येश शुभ ग्रह है तो फसलों की वृद्धि तथा यदि सस्येश अशुभ ग्रह है तो फसलों को हानि होती है।

4. दुर्गेश विचार : सिंह संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का दुर्गेश कहते हैं। यह सुरक्षा या प्रतिरक्षा का प्रमुख ग्रह होता है। शुभ या अशुभ ग्रह के अनुसार वर्ष की सुरक्षा होती है।

5. धनेश विचार : कन्या संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का धनेश कहते हैं। यह आर्थिक विभाग का प्रमुख होता है।

6. रसेश विचार : तुला संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को वर्ष का रसेश कहते हैं, रसेश ग्रह के द्वारा गुड़, चीनी, ईख, रस आदि का विचार किया जाता है।

7. नीरसेश विचार : मकर संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को नीरसेश कहते हैं। नीरसेश ग्रह से सभी प्रकार की धातुओं व व्यापार का विचार करते हैं।

8. फलेश विचार : मीन संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को फलेश कहते हैं। फलेश ग्रह से फल—फूल, साग—सब्जी का विचार किया जाता है।

9. धान्येश विचार : धनु संक्रांति के दिन जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को धान्येश कहते हैं। धान्येश ग्रह द्वारा खरीफ की फसलों का विचार करते हैं।

10. मेघेश विचार : सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय जो वार होता है उस वार के स्वामी ग्रह को मेघेश कहते हैं। सामान्यत: सूर्य आर्द्रा नक्षत्र को 21 जून को प्रवेश करता है। मेघेश से वर्ष में होनेवाली वर्षा

का विचार करते हैं।

उदाहरणार्थ : संवत् 2066 में उक्तानुसार वर्ष के दस पदाधिकारी निम्नानुसार होंगे।

1. राजा—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा—27 मार्च, 2009
दिन शुक्रवार—शुक्र

2. मंत्री—मेष संक्रांति—13 अप्रैल, 2009
समय 10.19 पी.एम., दिन सोमवार—चंद्र

3. सस्येश—कर्क संक्रांति—16 जुलाई, 2009
समय 12.36 पी.एम., दिन गुरुवार—बृहस्पति

4. दुर्गेश—सिंह संक्रांति— 16 अगस्त, 2009
समय 8.59 पी.एम., दिन रविवार—सूर्य

5. धनेश—कन्या संक्रांति—16 सितंबर, 2009
समय 8.55 पी.एम., दिन बुधवार—बुध

6. रसेश—तुला संक्रांति—17 अक्तूबर, 2009
समय 8.55 ए.एम., दिन शनिवार—शनि

7. धान्येश—धनु संक्रांति—15 दिसंबर, 2009
समय 11.31 पी.एम., दिन मंगलवार—मंगल

8. नीरसेश—मकर संक्रांति—14 जनवरी, 2010
समय 10.16 ए.एम. दिन गुरुवार—बृहस्पति

9. फलेश—मीन संक्रांति—14 मार्च, 2010
समय 8.05 पी.एम. दिन रविवार—सूर्य

10. मेघेश—सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश—21 जून, 2009
समय 27 घंटा 51 मिनट दिन रविवार—सूर्य

इस प्रकार संवत् 2066 में वर्ष के दस पदाधिकारी निम्न होंगे—

1. राजा—शुक्र
2. मंत्री—चंद्र
3. सस्येश—बृहस्पति
4. दुर्गेश—सूर्य
5. धनेश—बुध
6. रसेश—शनि
7. धान्येश—मंगल
8. नीरसेश—बृहस्पति
9. फलेश—सूर्य
10. मेघेश—सूर्य

❑

सारणी ज्ञान

अक्षांश—देशांतर सारणी

क्रम : 1

नगर : अनूप शहर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—21

रेखांश अंश—कला : 78—20

क्रम : 2

नगर : अमेठी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—10

रेखांश अंश—कला : 81—50

क्रम : 3

नगर : अमरोहा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—54

रेखांश अंश—कला : 74—31

क्रम : 4

नगर : अयोध्या

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—48

रेखांश अंश—कला : 82—14

क्रम : 5

नगर : अलीगढ़

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—58

रेखांश अंश—कला : 76—07

क्रम : 6

नगर : आगरा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—10

रेखांश अंश—कला : 78—50

क्रम : 7

नगर : आजमगढ़

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—39

रेखांश अंश—कला : 83—13

क्रम : 8

नगर : इटावा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—47

रेखांश अंश—कला : 79—20

क्रम : 9

नगर : इलाहाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—28

रेखांश अंश—कला : 81—54

क्रम : 10

नगर : उन्नाव

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—32

रेखांश अंश—कला : 80—32

क्रम : 11

नगर : एटा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—35

रेखांश अंश—कला : 78—40

क्रम : 12

नगर : कन्नौज

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—30

रेखांश अंश—कला : 79—58

क्रम : 13

नगर : कानपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—28

रेखांश अंश—कला : 80—20

क्रम : 14

नगर : कालपी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—10

रेखांश अंश—कला : 79—48

क्रम : 15

नगर : कासगंज

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—48

रेखांश अंश—कला : 78—42

क्रम : 16

नगर : काशी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—18

रेखांश अंश—कला : 83—00

क्रम : 17

नगर : कोंच (जालौन) उ.प्र.

राज्य : 26—00

अक्षांश अंश—कला : 79—20

रेखांश अंश—कला :

क्रम : 18

नगर : खीरी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—54

रेखांश अंश—कला : 80—48

क्रम : 19

नगर : खुर्जा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—15

रेखांश अंश—कला : 77—50

क्रम : 20

नगर : गाजीपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—34

रेखांश अंश—कला : 83—35

क्रम : 21

नगर : गाजियाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—40

रेखांश अंश—कला : 77—28

क्रम : 22

नगर : गोंडा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—28

रेखांश अंश—कला : 82—10

क्रम : 23

नगर : गोरखपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—45

रेखांश अंश—कला : 83—24

क्रम : 24

नगर : गोला

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—10

रेखांश अंश—कला : 80—36

क्रम : 25

नगर : घाटमपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—06

रेखांश अंश—कला : 80—13

क्रम : 26

नगर : चंदौसी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—27

रेखांश अंश—कला : 78—49

क्रम : 27

नगर : चित्रकूट

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—22

रेखांश अंश—कला : 81—00

क्रम : 28

नगर : जालौन

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—08

रेखांश अंश—कला : 79—23

क्रम : 29

नगर : जौनपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—46

रेखांश अंश—कला : 82—44

क्रम : 30

नगर : झाँसी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—27

रेखांश अंश—कला : 78—37

क्रम : 31

नगर : डलमऊ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—07

रेखांश अंश—कला : 81—05

क्रम : 32

नगर : नगीना

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 29—27

रेखांश अंश—कला : 78—29

क्रम : 33

नगर : पडरौना

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—54

रेखांश अंश—कला : 84—10

क्रम : 34

नगर : प्रतापगढ़

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—54

रेखांश अंश—कला : 82—00

क्रम : 35

नगर : पीलीभीत

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—38

रेखांश अंश—कला : 79—51

क्रम : 36

नगर : फतेहगढ़

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—23

रेखांश अंश—कला : 79—40

क्रम : 37

नगर : फर्रुखाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—55

रेखांश अंश—कला : 80—52

क्रम : 38

नगर : फिरोजाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—24

रेखांश अंश—कला : 79—37

क्रम : 39

नगर : फूलपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—09

रेखांश अंश—कला : 78—24

क्रम : 40

नगर : फैजाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—32

रेखांश अंश—कला : 82—07

क्रम : 41

नगर : बदायूँ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—47

रेखांश अंश—कला : 82—12

क्रम : 42

नगर : वाराणसी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—20

रेखांश अंश—कला : 79—31

क्रम : 43

नगर : बरेली

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—20

रेखांश अंश—कला : 83—00

क्रम : 44

नगर : बरेली

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—22

रेखांश अंश—कला : 79—27

क्रम : 45

नगर : बलिया

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—44

रेखांश अंश—कला : 84—11

क्रम : 46

नगर : बलरामपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—25

रेखांश अंश—कला : 82—15

क्रम : 47

नगर : बहेड़ी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—53

रेखांश अंश—कला : 79—40

क्रम : 48

नगर : बस्ती

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—48

रेखांश अंश—कला : 82—46

क्रम : 49

नगर : बहराइच

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—34

रेखांश अंश—कला : 81—38

क्रम : 50

नगर : बाँदा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—28

रेखांश अंश—कला : 80—22

क्रम : 51

नगर : बाराबंकी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—56

रेखांश अंश—कला : 81—13

क्रम : 52

नगर : बालामऊ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—18

रेखांश अंश—कला : 80—24

क्रम : 53

नगर : बिठूर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—37

रेखांश अंश—कला : 80—19

क्रम : 54

नगर : बिल्हौर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—32

रेखांश अंश—कला : 80—10

क्रम : 55

नगर : बिंदकी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—20

रेखांश अंश—कला : 80—33

क्रम : 56

नगर : बिलग्राम

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—10

रेखांश अंश—कला : 80—05

क्रम : 57

नगर : बुलंदशहर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—24

रेखांश अंश—कला : 77—54

क्रम : 58

नगर : वृंदावन

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—33

रेखांश अंश—कला : 77—44

क्रम : 59

नगर : भरवना

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—39

रेखांश अंश—कला : 79—11

क्रम : 60

नगर : भदोही

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—24

रेखांश अंश—कला : 82—38

क्रम : 61

नगर : मऊ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—50

रेखांश अंश—कला : 83—36

क्रम : 62

नगर : मऊरानीपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—15

रेखांश अंश—कला : 79—11

क्रम : 63

नगर : मछलीपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—41

रेखांश अंश—कला : 82—27

क्रम : 64

नगर : मथुरा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—28

रेखांश अंश—कला : 77—41

क्रम : 65

नगर : महोबा

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—18

रेखांश अंश—कला : 79—55

क्रम : 66

नगर : मुगल सराय

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—17

रेखांश अंश—कला : 83—11

क्रम : 67

नगर : मुरादाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—51

रेखांश अंश—कला : 78—49

क्रम : 68

नगर : मेरठ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 29—10

रेखांश अंश—कला : 77—45

क्रम : 69

नगर : मैनपुरी

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—14

रेखांश अंश—कला : 79—30

क्रम : 70

नगर : रामपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—54

रेखांश अंश—कला : 79—10

क्रम : 71

नगर : लखनऊ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—55

रेखांश अंश—कला : 81—00

क्रम : 72

नगर : लखीमपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—57

रेखांश अंश—कला : 80—49

क्रम : 73

नगर : ललितपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—22

रेखांश अंश—कला : 78—28

क्रम : 74

नगर : विंध्याचल

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—10

रेखांश अंश—कला : 82—30

क्रम : 75

नगर : शिकोहाबाद

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—00

रेखांश अंश—कला : 79—00

क्रम : 76

नगर : शाहजहाँपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—54

रेखांश अंश—कला : 79—57

क्रम : 77

नगर : संभल

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—35

रेखांश अंश—कला : 78—37

क्रम : 78

नगर : सहारनपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 29—58

रेखांश अंश—कला : 77—23

क्रम : 79

नगर : सारनाथ

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—24

रेखांश अंश—कला : 83—10

क्रम : 80

नगर : सुल्तानपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—16

रेखांश अंश—कला : 81—07

क्रम : 81

नगर : हमीरपुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—58

रेखांश अंश—कला : 80—12

क्रम : 82

नगर : हरदोई

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—23

रेखांश अंश—कला : 80—10

क्रम : 83

नगर : हाथरस

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—36

रेखांश अंश—कला : 78—06

क्रम : 84

नगर : हापुड़

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—43

रेखांश अंश—कला : 77—50

क्रम : 85

नगर : उरई

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—59

रेखांश अंश—कला : 79—30

क्रम : 86

नगर : चुनार

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—00

रेखांश अंश—कला : 83—00

क्रम : 87

नगर : बिजनौर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 28—20

रेखांश अंश—कला : 78—30

क्रम : 88

नगर : मिर्जापुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—50

रेखांश अंश—कला : 82—38

क्रम : 89

नगर : मुजफ्फरनगर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 29—22

रेखांश अंश—कला : 77—48

क्रम : 90

नगर : रायबरेली

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—14

रेखांश अंश—कला : 81—16

क्रम : 91

नगर : सीतापुर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 27—30

रेखांश अंश—कला : 80—45

क्रम : 92

नगर : लक्सर

राज्य : उ.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 29—48

रेखांश अंश—कला : 78—10

क्रम : 93

नगर : अल्मोड़ा

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—37

रेखांश अंश—कला : 79—40

क्रम : 94

नगर : काठगोदाम

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—05

रेखांश अंश—कला : 79—52

क्रम : 95

नगर : गंगोत्री

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 31—00

रेखांश अंश—कला : 79—50

क्रम : 96

नगर : चकराता

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 30—43

रेखांश अंश—कला : 77—57

क्रम : 97

नगर : टेहरी—गढ़वाल

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 31—30

रेखांश अंश—कला : 78—50

क्रम : 98

नगर : देहरादून

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 30—19

रेखांश अंश—कला : 78—40

क्रम : 99

नगर : नैनीताल

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—23

रेखांश अंश—कला : 79—30

क्रम : 100

नगर : पौड़ी

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 30—08

रेखांश अंश—कला : 78—52

क्रम : 101

नगर : बद्रीनाथ धाम

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 30—44

रेखांश अंश—कला : 79—32

क्रम : 102

नगर : मसूरी

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 30—27

रेखांश अंश—कला : 78—06

क्रम : 103

नगर : रानीखेत

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—40

रेखांश अंश—कला : 79—33

क्रम : 104

नगर : रामनगर

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—30

रेखांश अंश—कला : 79—10

क्रम : 105

नगर : रुड़की

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—52

रेखांश अंश—कला : 77—53

क्रम : 106

नगर : लाल कुआँ

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—10

रेखांश अंश—कला : 79—36

क्रम : 107

नगर : लैंस डाउन

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—54

रेखांश अंश—कला : 78—42

क्रम : 108

नगर : बटेश्वर

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 26—48

रेखांश अंश—कला : 78—24

क्रम : 109

नगर : हरिद्वार

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—58

रेखांश अंश—कला : 78—13

क्रम : 110

नगर : हल्द्वानी

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—13

रेखांश अंश—कला : 79—36

क्रम : 111

नगर : कोटद्वार

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—43

रेखांश अंश—कला : 78—33

क्रम : 112

नगर : टनकपुर

राज्य : उत्तराखंड

अक्षांश अंश—कला : 29—10

रेखांश अंश—कला : 80—18

क्रम : 113

नगर : अजमेर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—27

रेखांश अंश—कला : 74—42

क्रम : 114

नगर : अमृतसर

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 31—37

रेखांश अंश—कला : 74—55

क्रम : 115

नगर : अंबाला

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 30—21

रेखांश अंश—कला : 76—52

क्रम : 116

नगर : अलवर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 27—34

रेखांश अंश—कला : 76—38

क्रम : 117

नगर : आबू

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 24—40

रेखांश अंश—कला : 72—45

क्रम : 118

नगर : आरा

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—34

रेखांश अंश—कला : 84—32

क्रम : 119

नगर : इटारसी

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 22—30

रेखांश अंश—कला : 77—55

क्रम : 120

नगर : इंदौर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 22—44

रेखांश अंश—कला : 75—54

क्रम : 121

नगर : उज्जैन

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 23—09

रेखांश अंश—कला : 75—50

क्रम : 122

नगर : उदयपुर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 24—32

रेखांश अंश—कला : 73—48

क्रम : 123

नगर : ओरछा

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—21

रेखांश अंश—कला : 78—40

क्रम : 124

नगर : कटनी

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 23—47

रेखांश अंश—कला : 80—27

क्रम : 125

नगर : कालका

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 30—45

रेखांश अंश—कला : 76—58

क्रम : 126

नगर : कुरुक्षेत्र

राज्य : हरियाणा

अक्षांश अंश—कला : 29—56

रेखांश अंश—कला : 76—56

क्रम : 127

नगर : केकड़ी

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 25—56

रेखांश अंश—कला : 75—20

क्रम : 128

नगर : खंडवा

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 21—50

रेखांश अंश—कला : 76—23

क्रम : 129

नगर : खेतड़ी

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 28—00

रेखांश अंश—कला : 75—50

क्रम : 130

नगर : गया

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 24—49

रेखांश अंश—कला : 85—00

क्रम : 131

नगर : ग्वालियर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—14

रेखांश अंश—कला : 78—10

क्रम : 132

नगर : गुड़गाँव

राज्य : हरियाणा

अक्षांश अंश—कला : 28—27

रेखांश अंश—कला : 77—10

क्रम : 133

नगर : गुना

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—40

रेखांश अंश—कला : 77—20

क्रम : 134

नगर : चित्तौड़गढ़

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 24—54

रेखांश अंश—कला : 74—42

क्रम : 135

नगर : छतरपुर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—54

रेखांश अंश—कला : 79—38

क्रम : 136

नगर : छपरा

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—47

रेखांश अंश—कला : 84—47

क्रम : 137

नगर : जबलपुर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 23—10

रेखांश अंश—कला : 80—00

क्रम : 138

नगर : जमेशदपुर

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 22—50

रेखांश अंश—कला : 86—10

क्रम : 139

नगर : जयपुर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—55

रेखांश अंश—कला : 75—52

क्रम : 140

नगर : जालंधर

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 31—19

रेखांश अंश—कला : 75—36

क्रम : 141

नगर : जैसलमेर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—55

रेखांश अंश—कला : 70—57

क्रम : 142

नगर : जोधपुर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—20

रेखांश अंश—कला : 73—40

क्रम : 143

नगर : टीकमगढ़

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—45

रेखांश अंश—कला : 78—57

क्रम : 144

नगर : दतिया

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—39

रेखांश अंश—कला : 78—27

क्रम : 145

नगर : दरभंगा

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 26—10

रेखांश अंश—कला : 85—57

क्रम : 146

नगर : दिल्ली

राज्य : दिल्ली

अक्षांश अंश—कला : 28—38

रेखांश अंश—कला : 77—12

क्रम : 147

नगर : दुर्ग

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 21—11

रेखांश अंश—कला : 81—21

क्रम : 148

नगर : धनबाद

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 23—47

रेखांश अंश—कला : 86—30

क्रम : 149

नगर : धौलपुर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—42

रेखांश अंश—कला : 77—53

क्रम : 150

नगर : नीमच

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—27

रेखांश अंश—कला : 74—52

क्रम : 151

नगर : पलामू

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 23—52

रेखांश अंश—कला : 84—17

क्रम : 152

नगर : पचमढ़ी

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 22—30

रेखांश अंश—कला : 78—32

क्रम : 153

नगर : पटना

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—37

रेखांश अंश—कला : 85—13

क्रम : 154

नगर : पटियाला

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 30—20

रेखांश अंश—कला : 76—35

क्रम : 155

नगर : पन्ना

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—44

रेखांश अंश—कला : 80—14

क्रम : 156

नगर : पानीपत

राज्य : हरियाणा

अक्षांश अंश—कला : 29—23

रेखांश अंश—कला : 76—58

क्रम : 157

नगर : पुरुलिया

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 23—20

रेखांश अंश—कला : 86—25

क्रम : 158

नगर : पुष्कर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—29

रेखांश अंश—कला : 74—37

क्रम : 159

नगर : पूर्णिम

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—49

रेखांश अंश—कला : 87—31

क्रम : 160

नगर : बक्सर

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—34

रेखांश अंश—कला : 84—10

क्रम : 161

नगर : बाड़मेर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 25—45

रेखांश अंश—कला : 71—25

क्रम : 162

नगर : ब्यावर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 26—06

रेखांश अंश—कला : 74—21

क्रम : 163

नगर : बिलासपुर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 22—50

रेखांश अंश—कला : 82—10

क्रम : 164

नगर : बीकानेर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 28—10

रेखांश अंश—कला : 73—12

क्रम : 165

नगर : गया

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 24—41

रेखांश अंश—कला : 85—20

क्रम : 166

नगर : भटिंडा

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 30—11

रेखांश अंश—कला : 74—59

क्रम : 167

नगर : भरतपुर

राज्य : राजस्थान

अक्षांश अंश—कला : 27—15

रेखांश अंश—कला : 77—30

क्रम : 168

नगर : भागलपुर

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—15

रेखांश अंश—कला : 87—20

क्रम : 169

नगर : भिलाई

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 21—18

रेखांश अंश—कला : 81—45

क्रम : 170

नगर : भोपाल

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 23—16

रेखांश अंश—कला : 77—18

क्रम : 171

नगर : मुरैना

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—30

रेखांश अंश—कला : 78—50

क्रम : 172

नगर : मुंगेर

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—23

रेखांश अंश—कला : 86—30

क्रम : 173

नगर : रक्सौल

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 27—00

रेखांश अंश—कला : 85—00

क्रम : 174

नगर : राँची

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 23—23

रेखांश अंश—कला : 85—23

क्रम : 175

नगर : रायपुर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 21—15

रेखांश अंश—कला : 81—41

क्रम : 176

नगर : रीवाँ

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—31

रेखांश अंश—कला : 81—29

क्रम : 177

नगर : रोहतक

राज्य : हरियाणा

अक्षांश अंश—कला : 28—54

रेखांश अंश—कला : 76—38

क्रम : 178

नगर : ग्वालियर

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 26—10

रेखांश अंश—कला : 78—00

क्रम : 179

नगर : लुधियाना

राज्य : पंजाब

अक्षांश अंश—कला : 30—55

रेखांश अंश—कला : 75—54

क्रम : 180

नगर : शिवपुरी

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 25—20

रेखांश अंश—कला : 77—34

क्रम : 181

नगर : सतना

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 24—34

रेखांश अंश—कला : 80—55

क्रम : 182

नगर : समस्तीपुर

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 25—55

रेखांश अंश—कला : 85—50

क्रम : 183

नगर : यांची

राज्य : म.प्र.

अक्षांश अंश—कला : 23—23

रेखांश अंश—कला : 77—32

क्रम : 184

नगर : सासाराम

राज्य : बिहार

अक्षांश अंश—कला : 24—57

रेखांश अंश—कला : 84—30

क्रम : 185

नगर : कोहिमा

राज्य : नगालैंड

अक्षांश अंश—कला : 25—40

रेखांश अंश—कला : 94—50

क्रम : 186

नगर : अंडमान

राज्य : पूर्वी द्वीप

अक्षांश अंश—कला : 12—00

रेखांश अंश—कला : 92—40

क्रम : 187

नगर : अगरतला

राज्य : त्रिपुरा

अक्षांश अंश—कला : 23—50

रेखांश अंश—कला : 91—23

क्रम : 188

नगर : अहमदाबाद

राज्य : गुजरात

अक्षांश अंश—कला : 23—20

रेखांश अंश—कला : 72—38

क्रम : 189

नगर : काठमांडू

राज्य : नेपाल

अक्षांश अंश—कला : 27—42

रेखांश अंश—कला : 85—12

क्रम : 190

नगर : कलकत्ता

राज्य : प.बंगाल

अक्षांश अंश—कला : 23—34

रेखांश अंश—कला : 88—24

क्रम : 191

नगर : गुवाहाटी

राज्य : असम

अक्षांश अंश—कला : 26—11

रेखांश अंश—कला : 91—47

क्रम : 192

नगर : चेरापूँजी

राज्य : मणिपुर

अक्षांश अंश—कला : 25—17

रेखांश अंश—कला : 91—47

क्रम : 193

नगर : त्रिवेंद्रम

राज्य : केरल

अक्षांश अंश—कला : 8—29

रेखांश अंश—कला : 76—57

क्रम : 194

नगर : नासिक

राज्य : महाराष्ट्र

अक्षांश अंश—कला : 20—00

रेखांश अंश—कला : 73—52

क्रम : 195

नगर : पूना

राज्य : महाराष्ट्र

अक्षांश अंश—कला : 18—30

रेखांश अंश—कला : 73—58

क्रम : 196

नगर : बंगलौर

राज्य : मैसूर

अक्षांश अंश—कला : 12—58

रेखांश अंश—कला : 77—38

क्रम : 197

नगर : मुंबई

राज्य : महाराष्ट्र

अक्षांश अंश—कला : 18—55

रेखांश अंश—कला : 72—54

क्रम : 198

नगर : मद्रास

राज्य : तमिलनाडु

अक्षांश अंश—कला : 13—40

रेखांश अंश—कला : 80—17

क्रम : 199

नगर : शिमला

राज्य : हिमा. प्रदेश

अक्षांश अंश—कला : 31—06

रेखांश अंश—कला : 77—51

क्रम : 200

नगर : सिक्किम

राज्य : भूटान

अक्षांश अंश—कला : 27—30

रेखांश अंश—कला : 88—30

क्रम : 201

नगर : हैदराबाद

राज्य : आंध्र प्रदेश

अक्षांश अंश—कला : 17—24

रेखांश अंश—कला : 78—30

क्रम : 202

नगर : हावड़ा

राज्य : प. बंगाल

अक्षांश अंश—कला : 22—35

रेखांश अंश—कला : 88—23

होरा चक्र

15 अंश का एक होरा होता है। इस प्रकार राशि में दो होरा होते हैं। विषम राशि में 15 अंश तक सूर्य की होरा और 16 अंश से 30 अंश तक चंद्र की होरा होती है। सम राशि में 15 अंश तक चंद्र की होरा और 16 अंश से 30 अंश तक सूर्य की होरा होती है।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
15	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4
30	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5	4	5

द्रेष्काण चक्र

10 अंश का एक द्रेष्काण होता है। इस प्रकार एक राशि में तीन द्रेष्काण होते हैं।

प्रथम द्रेष्काण — 1 अंश से 10 अंश तक

द्वितीय द्रेष्काण — 11 अंश से 20 अंश तक

तृतीय द्रेष्काण — 21 अंश से 30 अंश तक

राशि का प्रथम द्रेष्काण उस राशि का, द्वितीय द्रेष्काण राशि से पंचम राशि का तथा तृतीय द्रेष्काण राशि से नवम राशि का होता है।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
0-10	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
10-20	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
20-30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8

सप्तमांश चक्र

4 अंश 17 कला 8 विकला का सप्तमांश होता है। विषम राशि में उसी राशि से सप्तमांश की गणना की जाती है तथा सम राशि में उस राशि की सातवीं राशि से सप्तमांश की गणना की जाती है।

अंश कलादि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
4-17-8	1	8	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6
8-34-17	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7

12-51-2	3	10	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8
17-8-34	4	11	6	1	8	3	10	5	12	7	2	9
21-25-42	5	12	7	2	9	4	11	6	1	8	3	11
30-0-0	7	2	9	4	11	6	1	8	3	10	5	1

नवमांश चक्र

राशि के नौवें हिस्से को नवमांश कहते हैं, अर्थात् एक राशि में 9 नवमांश होते हैं तथा प्रत्येक नवमांश का मान 3 अंश 20 कला होता है।

अग्नि तत्त्व (मेष, सिंह एवं धनु) की राशियों में मेष नवांश से प्रारंभ होता है, पृथ्वी तत्त्व (वृष, कन्या एवं मकर) की राशियों में मकर नवांश से प्रारंभ होता है, वायु तत्त्व (मिथुन, तुला एवं कुंभ) की राशियों में तुला नवांश से प्रारंभ होता है तथा जल तत्त्व (कर्क, वृश्चिक एवं मीन) की राशियों में कर्क नवांश से प्रारंभ होता है।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृशि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
3-20	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4
6-40	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5
10-00	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9	5
13-20	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10	7
16-40	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11	8
20-00	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12	9
23-20	7	4	1	10	7	4	1	10	7	4	1	10
26-40	8	5	2	11	8	5	2	11	8	5	2	11
30-00	9	6	3	12	9	6	3	12	9	6	3	12

दशमांश चक्र

एक राशि का हिस्सा दशमांश होता है, अर्थात् एक राशि में 10 दशमांश होते हैं। प्रत्येक दशमांश का मान 3 अंश का होता है।

विषम राशि में उसी राशि से दशमांश की गणना की जाती है, जबकि सम राशि में राशि से नवम राशि से दशमांश की गणना की जाती है।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
0-3	1	10	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8
3-6	2	11	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9
6-9	3	12	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10
9-12	4	1	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11
12-15	5	2	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12
15-18	6	3	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1
18-21	7	4	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2
21-24	8	5	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3
25-27	9	6	11	8	1	10	3	12	5	2	7	4
27-30	10	7	12	9	2	11	4	1	6	3	8	5

द्वादशांश चक्र

राशि का बारहवाँ हिस्सा द्वादशांश होता है, अर्थात् एक राशि में 12 द्वादशांश होते हैं। प्रत्येक द्वादशांश का मान 2 अंश 30 कला होता है।

द्वादशांश की गणना चाहे विषम राशि हो या सम राशि, सदैव अपनी राशि से ही प्रारंभ होती है।

अंश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
2-30	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
5-00	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1
7-30	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2
10-0	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
12-30	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4
15-00	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5
17-30	7	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6
20-00	8	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7
22-30	9	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8
25-00	10	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9
27-30	11	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
30-00	12	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

षोडशांश चक्र

एक राशि में 16 षोडशांश होते हैं। इस प्रकार एक षोडशांश का मान 1 अंश 52 कला 30 विकला का होता है। षोडशांश की गणना चर राशि में मेष से, स्थिर राशि में सिंह से और द्विस्वभाव राशि में धनु राशि से की जाती है।

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 1

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 5

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 9

अंश कला विकला : 1—52—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 2

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 6

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 10

अंश कला विकला : 3—45—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 3

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 7

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 11

अंश कला विकला : 5—37—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 4

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 8

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 12

अंश कला विकला : 7—30—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 5

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 9

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 1

अंश कला विकला : 9—22—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 6

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 10

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 2

अंश कला विकला : 11—15—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 7

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 11

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 3

अंश कला विकला : 13—7—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 8

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 12

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 5

अंश कला विकला : 15—00—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 9

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 1

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 5

अंश कला विकला : 16—52—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 10

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 2

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 6

अंश कला विकला : 18—45—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 11

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 3

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 7

अंश कला विकला : 20—37—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 12

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 4

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 8

अंश कला विकला : 22—30—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 1

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 5

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 9

अंश कला विकला : 24—22—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 2

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 6

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 10

अंश कला विकला : 26—15—00

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 3

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 7

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 11

अंश कला विकला : 28—7—30

चर मेष, कर्क, तुला, मकर : 4

स्थिर सिंह, वृष, वृशि, कुंभ : 8

द्विस्वभाव मिथुन, कन्या, धनु, मीन : 12

अंश कला विकला : 30—00—00

षष्टटांश चक्र

अंश : 0—30

मेष : 1

वृष : 2

मिथुन : 3

कर्क : 4

सिंह : 5

कन्या : 6

तुला : 7

वृशि : 8

धनु : 9

मकर : 10

कुंभ : 11

मीन : 12

अंश : 1—00

मेष : 2

वृष : 3

मिथुन : 4

कर्क : 5

सिंह : 6

कन्या : 7

तुला : 8

वृशि : 9

धनु : 10

मकर : 11

कुंभ : 12

मीन : 1

अंश : 1—30

मेष : 3

वृष : 4

मिथुन : 5

कर्क : 6

सिंह : 7

कन्या : 8

तुला : 9

वृशि : 10

धनु : 11

मकर : 12

कुंभ : 1

मीन : 2

अंश : 2—00

मेष : 4

वृष : 5

मिथुन : 6

कर्क : 7

सिंह : 8

कन्या : 9

तुला : 10

वृशि : 11

धनु : 12

मकर : 1

कुंभ : 2

मीन : 3

अंश : 2—30

मेष : 5

वृष : 6

मिथुन : 7

कर्क : 8

सिंह : 9

कन्या : 10

तुला : 11

वृशि : 12

धनु : 1

मकर : 2

कुंभ : 3

मीन : 4

अंश : 3—00

मेष : 6

वृष : 7

मिथुन : 8

कर्क : 9

सिंह : 10

कन्या : 11

तुला : 12

वृशि : 1

धनु : 2

मकर : 3

कुंभ : 4

मीन : 5

अंश : 3—30

मेष : 7

वृष : 8

मिथुन : 9

कर्क : 10

सिंह : 11

कन्या : 12

तुला : 1

वृशि : 2

धनु : 3

मकर : 4

कुंभ : 5

मीन : 6

अंश : 4—00

मेष : 8

वृष : 9

मिथुन : 10

कर्क : 11

सिंह : 12

कन्या : 1

तुला : 2

वृशि : 3

धनु : 4

मकर : 5

कुंभ : 6

मीन : 7

अंश : 4—30

मेष : 9

वृष : 10

मिथुन : 11

कर्क : 12

सिंह : 1

कन्या : 2

तुला : 3

वृशि : 4

धनु : 5

मकर : 6

कुंभ : 7

मीन : 8

अंश : 5—00

मेष : 10

वृष : 11

मिथुन : 12

कर्क : 3

सिंह : 2

कन्या : 3

तुला : 4

वृशि : 5

धनु : 6

मकर : 7

कुंभ : 8

मीन : 9

अंश : 5—30

मेष : 11

वृष : 12

मिथुन : 1

कर्क : 2

सिंह : 3

कन्या : 4

तुला : 5

वृशि : 6

धनु : 7

मकर : 8

कुंभ : 9

मीन : 10

अंश : 6—00

मेष : 12

वृष : 1

मिथुन : 2

कर्क : 3

सिंह : 4

कन्या : 5

तुला : 6

वृशि : 7

धनु : 8

मकर : 9

कुंभ : 10

मीन : 11

अंश : 6—30

मेष : 1

वृष : 2

मिथुन : 3

कर्क : 4

सिंह : 5

कन्या : 6

तुला : 7

वृश्चि : 8

धनु : 9

मकर : 10

कुंभ : 11

मीन : 12

अंश : 7—00

मेष : 2

वृष : 3

मिथुन : 4

कर्क : 5

सिंह : 6

कन्या : 7

तुला : 8

वृश्चि : 9

धनु : 10

मकर : 11

कुंभ : 12

मीन : 1

अंश : 7—30

मेष : 3

वृष : 4

मिथुन : 5

कर्क : 6

सिंह : 7

कन्या : 8

तुला : 9

वृशि : 10

धनु : 11

मकर : 12

कुंभ : 1

मीन : 2

अंश : 8—00

मेष : 4

वृष : 5

मिथुन : 6

कर्क : 7

सिंह : 8

कन्या : 9

तुला : 10

वृशि : 11

धनु : 12

मकर : 1

कुंभ : 2

मीन : 3

अंश : 8—30

मेष : 5

वृष : 6

मिथुन : 7

कर्क : 8

सिंह : 9

कन्या : 10

तुला : 11

वृश्चि : 12

धनु : 1

मकर : 2

कुंभ : 3

मीन : 4

अंश : 9—00

मेष : 6

वृष : 7

मिथुन : 8

कर्क : 9

सिंह : 10

कन्या : 11

तुला : 12

वृश्चि : 1

धनु : 2

मकर : 3

कुंभ : 4

मीन : 5

अंश : 9—30

मेष : 7

वृष : 8

मिथुन : 9

कर्क : 10

सिंह : 11

कन्या : 12

तुला : 1

वृशि : 2

धनु : 3

मकर : 4

कुंभ : 5

मीन : 6

अंश : 10—00

मेष : 8

वृष : 9

मिथुन : 10

कर्क : 11

सिंह : 12

कन्या : 1

तुला : 2

वृश्चि : 3

धनु : 4

मकर : 5

कुंभ : 6

मीन : 7

अंश : 10—30

मेष : 9

वृष : 10

मिथुन : 11

कर्क : 12

सिंह : 1

कन्या : 2

तुला : 3

वृश्चि : 4

धनु : 5

मकर : 6

कुंभ : 7

मीन : 8

अंश : 11—00

मेष : 10

वृष : 11

मिथुन : 12

कर्क : 1

सिंह : 2

कन्या : 3

तुला : 4

वृशि : 5

धनु : 6

मकर : 7

कुंभ : 8

मीन : 9

अंश : 11—30

मेष : 11

वृष : 12

मिथुन : 1

कर्क : 2

सिंह : 3

कन्या : 4

तुला : 5

वृशि : 6

धनु : 7

मकर : 8

कुंभ : 9

मीन : 10

अंश : 12—00

मेष : 12

वृष : 1

मिथुन : 2

कर्क : 3

सिंह : 4

कन्या : 5

तुला : 6

वृशि : 7

धनु : 8

मकर : 9

कुंभ : 10

मीन : 11

अंश : 12—30

मेष : 1

वृष : 2

मिथुन : 3

कर्क : 4

सिंह : 5

कन्या : 6

तुला : 7

वृशि : 8

धनु : 9

मकर : 10

कुंभ : 11

मीन : 12

अंश : 13—00

मेष : 2

वृष : 3

मिथुन : 4

कर्क : 5

सिंह : 6

कन्या : 7

तुला : 8

वृशि : 9

धनु : 10

मकर : 11

कुंभ : 12

मीन : 1

अंश : 13—30

मेष : 3

वृष : 4

मिथुन : 5

कर्क : 6

सिंह : 7

कन्या : 8

तुला : 9

वृश्चि : 10

धनु : 11

मकर : 12

कुंभ : 1

मीन : 2

अंश : 14—00

मेष : 4

वृष : 5

मिथुन : 6

कर्क : 7

सिंह : 8

कन्या : 9

तुला : 10

वृश्चि : 11

धनु : 12

मकर : 1

कुंभ : 2

मीन : 3

अंश : 14—30

मेष : 5

वृष : 6

मिथुन : 7

कर्क : 8

सिंह : 9

कन्या : 10

तुला : 11

वृशि : 12

धनु : 1

मकर : 2

कुंभ : 3

मीन : 4

अंश : 15—00

मेष : 6

वृष : 7

मिथुन : 8

कर्क : 9

सिंह : 10

कन्या : 11

तुला : 12

वृशि : 1

धनु : 2

मकर : 3

कुंभ : 4

मीन : 5

अंश : 15—30

मेष : 7

वृष : 8

मिथुन : 9

कर्क : 10

सिंह : 11

कन्या : 12

तुला : 1

वृशि : 2

धनु : 3

मकर : 4

कुंभ : 5

मीन : 6

अंश : 16—00

मेष : 8

वृष : 9

मिथुन : 10

कर्क : 11

सिंह : 12

कन्या : 1

तुला : 2

वृशि : 3

धनु : 4

मकर : 5

कुंभ : 6

मीन : 7

अंश : 16—30

मेष : 9

वृष : 10

मिथुन : 11

कर्क : 12

सिंह : 1

कन्या : 2

तुला : 3

वृशि : 4

धनु : 5

मकर : 6

कुंभ : 7

मीन : 8

अंश : 17—00

मेष : 10

वृष : 11

मिथुन : 12

कर्क : 1

सिंह : 2

कन्या : 3

तुला : 4

वृशि : 5

धनु : 6

मकर : 7

कुंभ : 8

मीन : 9

अंश : 17—30

मेष : 11

वृष : 12

मिथुन : 1

कर्क : 2

सिंह : 3

कन्या : 4

तुला : 5

वृंशि : 6

धनु : 7

मकर : 8

कुंभ : 9

मीन : 10

अंश : 18—00

मेष : 12

वृष : 1

मिथुन : 2

कर्क : 3

सिंह : 4

कन्या : 5

तुला : 6

वृश्चि : 7

धनु : 8

मकर : 9

कुंभ : 10

मीन : 11

अंश : 18—30

मेष : 1

वृष : 2

मिथुन : 3

कर्क : 4

सिंह : 5

कन्या : 6

तुला : 7

वृश्चि : 8

धनु : 9

मकर : 10

कुंभ : 11

मीन : 12

अंश : 19—00

मेष : 2

वृष : 3

मिथुन : 4

कर्क : 5

सिंह : 6

कन्या : 7

तुला : 8

वृशि : 9

धनु : 10

मकर : 11

कुंभ : 12

मीन : 1

अंश : 19—30

मेष : 3

वृष : 4

मिथुन : 5

कर्क : 6

सिंह : 7

कन्या : 8

तुला : 9

वृशि : 10

धनु : 11

मकर : 12

कुंभ : 1

मीन : 2

अंश : 20—00

मेष : 4

वृष : 5

मिथुन : 6

कर्क : 7

सिंह : 8

कन्या : 9

तुला : 10

वृशि : 11

धनु : 12

मकर : 1

कुंभ : 2

मीन : 3

अंश : 20—30

मेष : 5

वृष : 6

मिथुन : 7

कर्क : 8

सिंह : 9

कन्या : 10

तुला : 11

वृशि : 12

धनु : 1

मकर : 2

कुंभ : 3

मीन : 4

अंश : 21—00

मेष : 6

वृष : 7

मिथुन : 8

कर्क : 9

सिंह : 10

कन्या : 11

तुला : 12

वृशि : 1

धनु : 2

मकर : 3

कुंभ : 4

मीन : 5

अंश : 21—30

मेष : 7

वृष : 8

मिथुन : 9

कर्क : 10

सिंह : 11

कन्या : 12

तुला : 1

वृश्चि : 2

धनु : 3

मकर : 4

कुंभ : 5

मीन : 6

अंश : 22—00

मेष : 8

वृष : 9

मिथुन : 10

कर्क : 11

सिंह : 12

कन्या : 1

तुला : 2

वृश्चि : 3

धनु : 4

मकर : 5

कुंभ : 6

मीन : 7

अंश : 22—30

मेष : 9

वृष : 10

मिथुन : 11

कर्क : 12

सिंह : 1

कन्या : 2

तुला : 3

वृशि : 4

धनु : 5

मकर : 6

कुंभ : 7

मीन : 8

अंश : 23—00

मेष : 10

वृष : 11

मिथुन : 12

कर्क : 1

सिंह : 2

कन्या : 3

तुला : 4

वृशि : 5

धनु : 6

मकर : 7

कुंभ : 8

मीन : 9

अंश : 23—30

मेष : 11

वृष : 12

मिथुन : 1

कर्क : 2

सिंह : 3

कन्या : 4

तुला : 5

वृशि : 6

धनु : 7

मकर : 8

कुंभ : 9

मीन : 10

अंश : 24—00

मेष : 12

वृष : 1

मिथुन : 2

कर्क : 3

सिंह : 4

कन्या : 5

तुला : 6

वृशि : 7

धनु : 8

मकर : 9

कुंभ : 10

मीन : 11

अंश : 24—30

मेष : 1

वृष : 2

मिथुन : 3

कर्क : 4

सिंह : 5

कन्या : 6

तुला : 7

वृशि : 8

धनु : 9

मकर : 10

कुंभ : 11

मीन : 12

अंश : 25—00

मेष : 2

वृष : 3

मिथुन : 4

कर्क : 5

सिंह : 6

कन्या : 7

तुला : 8

वृशि : 9

धनु : 10

मकर : 11

कुंभ : 12

मीन : 1

अंश : 25—30

मेष : 3

वृष : 4

मिथुन : 5

कर्क : 6

सिंह : 7

कन्या : 8

तुला : 9

वृशि : 10

धनु : 11

मकर : 12

कुंभ : 1

मीन : 2

अंश : 26—00

मेष : 4

वृष : 5

मिथुन : 6

कर्क : 7

सिंह : 8

कन्या : 9

तुला : 10

वृशि : 11

धनु : 12

मकर : 1

कुंभ : 2

मीन : 3

अंश : 26—30

मेष : 5

वृष : 6

मिथुन : 7

कर्क : 8

सिंह : 9

कन्या : 10

तुला : 11

वृशि : 12

धनु : 1

मकर : 2

कुंभ : 3

मीन : 4

अंश : 27—00

मेष : 6

वृष : 7

मिथुन : 8

कर्क : 9

सिंह : 10

कन्या : 11

तुला : 12

वृशि : 1

धनु : 2

मकर : 3

कुंभ : 4

मीन : 5

अंश : 27—30

मेष : 7

वृष : 8

मिथुन : 9

कर्क : 10

सिंह : 11

कन्या : 12

तुला : 1

वृशि : 2

धनु : 3

मकर : 4

कुंभ : 5

मीन : 6

अंश : 28—00

मेष : 8

वृष : 9

मिथुन : 10

कर्क : 11

सिंह : 12

कन्या : 1

तुला : 2

वृशि : 3

धनु : 4

मकर : 5

कुंभ : 6

मीन : 7

अंश : 28—30

मेष : 9

वृष : 10

मिथुन : 11

कर्क : 12

सिंह : 1

कन्या : 2

तुला : 3

वृशि : 4

धनु : 5

मकर : 6

कुंभ : 7

मीन : 8

अंश : 29—00

मेष : 10

वृष : 11

मिथुन : 12

कर्क : 1

सिंह : 2

कन्या : 3

तुला : 4

वृशि : 5

धनु : 6

मकर : 7

कुंभ : 8

मीन : 9

अंश : 29—30

मेष : 11

वृष : 12

मिथुन : 1

कर्क : 2

सिंह : 3

कन्या : 4

तुला : 5

वृश्चि : 6

धनु : 7

मकर : 8

कुंभ : 9

मीन : 10

अंश : 30—00

मेष : 12

वृष : 1

मिथुन : 2

कर्क : 3

सिंह : 4

कन्या : 5

तुला : 6

वृश्चि : 7

धनु : 8

मकर : 9

कुंभ : 10

मीन : 11

त्रिमांश चक्र (विषम राशियों में)

अंश : 1 से 5

मेष : 1

वृष : 1

मिथुन : 1

कर्क : 1

सिंह : 1

कन्या : 1

तुला : 1

वृशि : 1

धनु : 1

मकर : 1

कुंभ : 1

मीन : 1

अंश : 6 से 10

मेष : 11

वृष : 11

मिथुन : 11

कर्क : 11

सिंह : 11

कन्या : 11

तुला : 11

वृशि : 11

धनु : 11

मकर : 11

कुंभ : 11

मीन : 11

अंश : 11 से 18

मेष : 9

वृष : 9

मिथुन : 9

कर्क : 9

सिंह : 9

कन्या : 9

तुला : 9

वृशि : 9

धनु : 9

मकर : 9

कुंभ : 9

मीन : 9

अंश : 19 से 25

मेष : 3

वृष : 3

मिथुन : 3

कर्क : 3

सिंह : 3

कन्या : 3

तुला : 3

वृशि : 3

धनु : 3

मकर : 3

कुंभ : 3

मीन : 3

अंश : 26 से 30

मेष : 7

वृष : 7

मिथुन : 7

कर्क : 7

सिंह : 7

कन्या : 7

तुला : 7

वृशि : 7

धनु : 7

मकर : 7

कुंभ : 7

मीन : 7

त्रिशांश चक्र (सम राशियों में)

अंश : 1 से 5

वृष : 2

कर्क : 2

कन्या : 2

वृश्चिक : 2

मकर : 2

मीन : 2

अंश : 6 से 12

वृष : 6

कर्क : 6

कन्या : 6

वृश्चिक : 6

मकर : 6

मीन : 6

अंश : 13 से 20

वृष : 12

कर्क : 12

कन्या : 12

वृश्चिक : 12

मकर : 12

मीन : 12

अंश : 21 से 25

वृष : 10

कर्क : 10

कन्या : 10

वृश्चिक : 10

मकर : 10

मीन : 10

अंश : 26 से 30

वृष : 8

कर्क : 8

कन्या : 8

वृश्चिक : 8

मकर : 8

मीन : 8

लत्ता दोष चक्र

विवाह नक्षत्र	4	5	10	12	13	15	17	19	21	26	27
सूर्य	20	21	26	1	2	4	6	8	10	15	16
चंद्र	15	26	4	6	7	9	11	13	15	20	21
मंगल	2	3	8	10	11	13	15	17	19	24	15
बुध	10	11	16	18	19	21	23	15	27	5	6
गुरु	26	27	5	7	8	10	12	14	16	21	22
शुक्र	8	9	14	16	17	19	21	23	15	3	4
शनि	24	15	3	5	6	8	10	12	14	19	20
राहु-केतु	23	24	2	4	5	7	9	11	13	18	19

पात दोष चक्र

विवाह नक्षत्र	4	5	10	12	13	15	17	19	21	26	27
सूर्य नक्षत्र	6	5	1	3	2	3	1	4	2	2	1
सूर्य नक्षत्र	7	6	5	6	5	8	6	9	7	11	10
सूर्य नक्षत्र	11	10	8	11	10	13	11	18	16	12	11
सूर्य नक्षत्र	14	13	13	16	15	22	20	19	17	16	15
सूर्य नक्षत्र	19	18	18	15	24	23	21	23	21	19	18
सूर्य नक्षत्र	24	23	27	26	25	27	15	26	24	24	23

अग्नि—वास चक्र

शुक्ल पक्ष की तिथि : 1

कृष्ण पक्ष की तिथि : x

रवि : पृ

सोम : पृ

मंगल : आ

बुध : पा

गुरु : पृ

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 2

कृष्ण पक्ष की तिथि : x

रवि : पृ

सोम : आ

मंगल : पा

बुध : पृ

गुरु : पृ

शुक्र : आ

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 3

कृष्ण पक्ष की तिथि : x

रवि : आ

सोम : पा

मंगल : पृ

बुध : पृ

गुरु : आ

शुक्र : पा

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 4

कृष्ण पक्ष की तिथि : 1

रवि : पा

सोम : पृ

मंगल : पृ

बुध : आ

गुरु : पा

शुक्र : पृ

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 5

कृष्ण पक्ष की तिथि : 2

रवि : पृ

सोम : पृ

मंगल : आ

बुध : पा

गुरु : पृ

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 6

कृष्ण पक्ष की तिथि : 3

रवि : पृ

सोम : आ

मंगल : पा

बुध : पृ

गुरु : पृ

शुक्र : आ

शनि : पा

शुक्ल पक्ष की तिथि : 7

कृष्ण पक्ष की तिथि : 4

रवि : आ

सोम : पा

मंगल : पृ

बुध : पृ

गुरु : आ

शुक्र : पा

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 8

कृष्ण पक्ष की तिथि : 5

रवि : पा

सोम : पृ

मंगल : पृ

बुध : आ

गुरु : पा

शुक्र : पृ

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 9

कृष्ण पक्ष की तिथि : 6

रवि : पृ

सोम : पृ

मंगल : आ

बुध : पा

गुरु : पृ

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 10

कृष्ण पक्ष की तिथि : 7

रवि : पृ

सोम : आ

मंगल : पा

बुध : पृ

गुरु : पृ

शुक्र : आ

शनि : पा

शुक्ल पक्ष की तिथि : 11

कृष्ण पक्ष की तिथि : 8

रवि : आ

सोम : पा

मंगल : पृ

बुध : पृ

गुरु : आ

शुक्र : पा

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 12

कृष्ण पक्ष की तिथि : 9

रवि : पा

सोम : पृ

मंगल : पृ

बुध : आ

गुरु : पा

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 13

कृष्ण पक्ष की तिथि : 10

रवि : पृ

सोम : पृ

मंगल : आ

बुध : पा

गुरु : पृ

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : 14

कृष्ण पक्ष की तिथि : 11

रवि : पृ

सोम : आ

मंगल : पा

बुध : पृ

गुरु : पृ

शुक्र : आ

शनि : पा

शुक्ल पक्ष की तिथि : 15

कृष्ण पक्ष की तिथि : 12

रवि : आ

सोम : पा

मंगल : पृ

बुध : पृ

गुरु : आ

शुक्र : आ

शनि : पा

शुक्ल पक्ष की तिथि : X

कृष्ण पक्ष की तिथि : 13

रवि : पा

सोम : पृ

मंगल : पृ

बुध : आ

गुरु : पा

शुक्र : पृ

शनि : पृ

शुक्ल पक्ष की तिथि : x

कृष्ण पक्ष की तिथि : 14

रवि : पृ

सोम : पृ

मंगल : आ

बुध : पा

गुरु : पृ

शुक्र : पृ

शनि : आ

शुक्ल पक्ष की तिथि : x

कृष्ण पक्ष की तिथि : 30

रवि : पृ

सोम : आ

मंगल : पा

बुध : पृ

गुरु : पृ

शुक्र : आ

शनि : पा

आ— आकाश
पा— पाताल
पृ.— पृथ्वी (अग्नि का वास पृथ्वी पर शुभ)

नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं. मं. गु.	बु.	शु.श
चंद्र	सू.बु.	मं.गु.शु.श.	X
मंगल	सू.चं.गु.	शु.श.	बु.
बुध	सू.शु.	मं.गु.श.	च.
गुरु	सू.च.मं.	श.	बु.शु.
शुक्र	बु.शनि	मं. गु.	सू.च.
शनि	बु.शु.	गु.	सू.चं.मं.

घंटा और घड़ी का चक्र

घंटा : 1

घड़ी—पल : 02—30

घंटा : 13

घड़ी—पल : 32—30

घंटा : 2

घड़ी—पल : 05—00

घंटा : 14

घड़ी—पल : 35—00

घंटा : 3

घड़ी—पल : 07—30

घंटा : 15

घड़ी—पल : 37—30

घंटा : 4

घड़ी—पल : 10—00

घंटा : 16

घड़ी—पल : 40—00

घंटा : 5

घड़ी—पल : 12—30

घंटा : 17

घड़ी—पल : 42—30

घंटा : 6

घड़ी—पल : 15—00

घंटा : 18

घड़ी—पल : 45—00

घंटा : 7

घड़ी—पल : 17—30

घंटा : 19

घड़ी—पल : 47—30

घंटा : 8

घड़ी—पल : 20—00

घंटा : 20

घड़ी—पल : 50—00

घंटा : 9

घड़ी—पल : 22—30

घंटा : 21

घड़ी—पल : 52—50

घंटा : 10

घड़ी—पल : 25—00

घंटा : 22

घड़ी—पल : 55—00

घंटा : 11

घड़ी—पल : 27—30

घंटा : 23

घड़ी—पल : 57—30

घंटा : 12

घड़ी—पल : 30—00

घंटा : 24

घड़ी—पल : 60—00

घड़ी और घंटा का चक्र

घड़ी : 1

घंटा—मिनट : 00—24

घड़ी : 21

घंटा—मिनट : 08—24

घड़ी : 41

घंटा—मिनट : 16—24

घड़ी : 2

घंटा—मिनट : 00—48

घड़ी : 22

घंटा—मिनट : 08—48

घड़ी : 42

घंटा—मिनट : 26—48

घड़ी : 3

घंटा—मिनट : 01—12

घड़ी : 23

घंटा—मिनट : 09—12

घड़ी : 43

घंटा—मिनट : 17—12

घड़ी : 4

घंटा—मिनट : 01—36

घड़ी : 24

घंटा—मिनट : 09—36

घड़ी : 44

घंटा—मिनट : 17—36

घड़ी : 5

घंटा—मिनट : 02—00

घड़ी : 25

घंटा—मिनट : 10—00

घड़ी : 45

घंटा—मिनट : 18—00

घड़ी : 6

घंटा—मिनट : 02—24

घड़ी : 26

घंटा—मिनट : 10—24

घड़ी : 46

घंटा—मिनट : 18—24

घड़ी : 7

घंटा—मिनट : 02—48

घड़ी : 27

घंटा—मिनट : 10—48

घड़ी : 47

घंटा—मिनट : 18—48

घड़ी : 8

घंटा—मिनट : 03—12

घड़ी : 28

घंटा—मिनट : 11—12

घड़ी : 48

घंटा—मिनट : 19—12

घड़ी : 9

घंटा—मिनट : 03—36

घड़ी : 29

घंटा—मिनट : 11—36

घड़ी : 49

घंटा—मिनट : 19—36

घड़ी : 10

घंटा—मिनट : 04—00

घड़ी : 30

घंटा—मिनट : 12—00

घड़ी : 50

घंटा—मिनट : 20—00

घड़ी : 11

घंटा—मिनट : 04—24

घड़ी : 31

घंटा—मिनट : 12—24

घड़ी : 51

घंटा—मिनट : 20—24

घड़ी : 12

घंटा—मिनट : 04—48

घड़ी : 32

घंटा—मिनट : 12—48

घड़ी : 52

घंटा—मिनट : 20—48

घड़ी : 13

घंटा—मिनट : 05—12

घड़ी : 33

घंटा—मिनट : 13—12

घड़ी : 53

घंटा—मिनट : 21—12

घड़ी : 14

घंटा—मिनट : 05—36

घड़ी : 34

घंटा—मिनट : 13—36

घड़ी : 54

घंटा—मिनट : 21—36

घड़ी : 15

घंटा—मिनट : 06—00

घड़ी : 35

घंटा—मिनट : 14—00

घड़ी : 55

घंटा—मिनट : 22—00

घड़ी : 16

घंटा—मिनट : 06—24

घड़ी : 36

घंटा—मिनट : 14—24

घड़ी : 56

घंटा—मिनट : 22—24

घड़ी : 17

घंटा—मिनट : 06—48

घड़ी : 37

घंटा—मिनट : 14—48

घड़ी : 57

घंटा—मिनट : 22—48

घड़ी : 18

घंटा—मिनट : 07—12

घड़ी : 38

घंटा—मिनट : 15—12

घड़ी : 58

घंटा—मिनट : 23—12

घड़ी : 19

घंटा—मिनट : 07—36

घड़ी : 39

घंटा—मिनट : 15—36

घड़ी : 59

घंटा—मिनट : 23—36

घड़ी : 20

घंटा—मिनट : 08—00

घड़ी : 40

घंटा—मिनट : 16—00

घड़ी : 60

घंटा—मिनट : 24—00

घंटा और घड़ी का चक्र

मिनट : 1

पल—विपल : 02—30

मिनट : 31

घड़ी—पल—विपल : 01—17—30

मिनट : 2

पल—विपल : 05—00

मिनट : 32

घड़ी—पल—विपल : 01—20—00

मिनट : 3

पल—विपल : 07—30

मिनट : 33

घड़ी—पल—विपल : 01—22—30

मिनट : 4

पल—विपल : 10—00

मिनट : 34

घड़ी—पल—विपल : 01—25—00

मिनट : 5

पल—विपल : 12—30

मिनट : 35

घड़ी—पल—विपल : 01—27—30

मिनट : 6

पल—विपल : 15—00

मिनट : 36

घड़ी—पल—विपल : 01—30—00

मिनट : 7

पल—विपल : 17—30

मिनट : 37

घड़ी—पल—विपल : 01—32—30

मिनट : 8

पल—विपल : 20—00

मिनट : 38

घड़ी—पल—विपल : 01—35—00

मिनट : 9

पल—विपल : 22—30

मिनट : 39

घड़ी—पल—विपल : 01—37—30

मिनट : 10

पल—विपल : 25—00

मिनट : 40

घड़ी—पल—विपल : 01—40—00

मिनट : 11

पल—विपल : 27—30

मिनट : 41

घड़ी—पल—विपल : 01—42—30

मिनट : 12

पल—विपल : 30—00

मिनट : 42

घड़ी—पल—विपल : 01—45—00

मिनट : 13

पल—विपल : 32—30

मिनट : 43

घड़ी—पल—विपल : 01—47—30

मिनट : 14

पल—विपल : 35—00

मिनट : 44

घड़ी—पल—विपल : 01—50—00

मिनट : 15

पल—विपल : 37—30

मिनट : 45

घड़ी—पल—विपल : 01—52—30

मिनट : 16

पल—विपल : 40—00

मिनट : 46

घड़ी—पल—विपल : 01—55—00

मिनट : 17

पल—विपल : 42—30

मिनट : 47

घड़ी—पल—विपल : 01—57—30

मिनट : 18

पल—विपल : 45—00

मिनट : 48

घड़ी—पल—विपल : 02—00—00

मिनट : 19

पल—विपल : 47—30

मिनट : 49

घड़ी—पल—विपल : 02—02—30

मिनट : 20

पल—विपल : 50—00

मिनट : 50

घड़ी—पल—विपल : 02—05—00

मिनट : 21

पल—विपल : 52—30

मिनट : 51

घड़ी—पल—विपल : 02—07—30

मिनट : 22

पल—विपल : 55—00

मिनट : 52

घड़ी—पल—विपल : 02—10—00

मिनट : 23

पल—विपल : 57—30

मिनट : 53

घड़ी—पल—विपल : 02—12—30

मिनट : 24

पल—विपल : 60—00

मिनट : 54

घड़ी—पल—विपल : 02—15—00

मिनट : 25

पल—विपल : 01—02—30

मिनट : 55

घड़ी—पल—विपल : 02—17—30

मिनट : 26

पल—विपल : 01—05—00

मिनट : 56

घड़ी—पल—विपल : 02—20—00

मिनट : 27

पल—विपल : 01—07—30

मिनट : 57

घड़ी—पल—विपल : 02—22—30

मिनट : 28

पल—विपल : 01—10—00

मिनट : 58

घड़ी—पल—विपल : 02—25—00

मिनट : 29

पल—विपल : 01—12—30

मिनट : 59

घड़ी—पल—विपल : 02—27—30

मिनट : 30

पल—विपल : 01—15—00

मिनट : 60

घड़ी—पल—विपल : 02—30—00

संकेताक्षरों का ज्ञान

र	रविवार	ध	धनु	उ.षा.	उत्तराषाढ़
सो	सोमवार	म	मकर	श्र	श्रवण
मं	मंगलवार	कुं	कुंभ	ध	धनिष्ठा
बु	बुधवार	मी	मीन	श	शतभिष
गु	गुरुवार	अ	अश्विनी	पू.भा.	पूर्वा भाद्रपद
शु	शुक्रवार	भ	भरणी	उ.भा.	उत्तरा भाद्रपद
श	शनिवार	कृ	कृत्तिका	रे	रेवती
सू	सूर्य	रो	रोहिणी	घ	घटी
चं	चंद्र	मृ	मृगशिरा	प	पल
मं	मंगल	आ	आर्द्रा	वि	विपल
बु	बुध	पुन	पुनर्वसु	घं	घंटा
बृ	बृहस्पति	पु	पुष्य	मि	मिनट
शु	शुक्र	आश	आश्लेषा	से	सेकंड
श	शनि	म	मघा	व	वक्री
रा	राहु	पू.फा.	पू.फाल्गुनी	म	मार्गी
के	केतु	उ.फा	उ.फाल्गुनी	रा	राशि
मे	मेष	ह	हस्त	ति	तिथि
वृ	वृष	चि	चित्रा	न	नक्षत्र
मि	मिथुन	स्वा	स्वाति	क	करण
क	कर्क	वि	विशाखा	यो	योग
सिं	सिंह	अनु	अनुराधा	दि.मा.	दिनमान
क	कन्या	ज्ये	ज्येष्ठा	रा.मा.	रात्रिमान
तु	तुला	मू	मूल	सू.उ.	सूर्य उदय
वृश्चि	वृश्चिक	पू.षा.	पूर्वाषाढ़	सू.अ.	सूर्य अस्त
वि	विष्कुंभ	व्र	व्रज	प्री	प्रीति
ऐं	ऐंद्र	आ	आयुष्मान्	वै	वैधृति
सौ	सौभाग्य	ब	बव	शो	शोभन
बा	बालव	सु	सुकर्मा	तै	तैतिल
धृ	धृति	ग	गर	धू	धूल

व	वणिज	ग	गंड	वि	विष्टि
वृ	वृद्धि	भ	भद्रा	धु	ध्रुव
श	शकुनि	व्या	व्याघात	च	चतुष्पद
ह	हर्षण	ना	नाग	व	वज्र
किं	किंस्तुघ्न	सि	परिध	व्य	व्यपिपात
वरी	वरीयान	प	परिध	शि	शिव
सि	सिद्ध	सा	साध्य	शु	शुभ

ग्रहों के प्रतीक चिह्न

क्रम	ग्रह	प्रतीक चिह्न
1.	सूर्य	☉
2.	चंद्र	☽
3.	मंगल	♂
4.	बुध	☿
5.	बृहस्पति	♃
6.	शुक्र	♀
7.	शनि	♄
8.	राहु	☊
9.	केतु	☋
10.	हर्शल	♅
11.	नेपच्यून	♆
12.	प्लूटो	♇

राशियों के प्रतीक चिह्न

क्रम	ग्रह	प्रतीक चिन्ह
1.	मेष	♈
2.	वृष	♉
3.	मिथुन	♊
4.	कर्क	♋
5.	सिंह	♌

6.	कन्या	♍
7.	तुला	♎
8.	वृश्चिक	♏
9.	धनु	♐
10.	मकर	♑
11.	कुंभ	♒
12.	मीन	♓

विंशोत्तरी दशा चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20
नक्षत्र	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाती	विशाखा	अनु.	ज्येष्ठा	मूल.	पू.षा.
	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिष	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्विनी	भरणी

अंतर्दशा चक्र

सूर्यांतर्दशा चक्र

ग्रह : वर्ष

सूर्य : 0

चंद्र : 0

भौम : 0

राहु : 0

गुरु : 0

शनि : 0

बुध : 0

केतु : 0

शुक्र : 1

ग्रह : मास

सूर्य : 3

चंद्र : 6

भौम : 4

राहु : 10

गुरु : 9

शनि : 11

बुध : 10

केतु : 4

शुक्र : 0

ग्रह : दिन

सूर्य : 18

चंद्र : 0

भौम : 6

राहु : 24

गुरु : 18

शनि : 12

बुध : 6

केतु : 6

शुक्र : 0

चंद्रांतर्दशा चक्र

ग्रह : वर्ष

सूर्य : 0

भौम : 0

राहु : 1

गुरु : 1

शनि : 1

बुध : 1

केतु : 0

शुक्र : 1

सूर्य : 0

ग्रह : मास

सूर्य : 10

भौम : 7

राहु : 6

गुरु : 4

शनि : 7

बुध : 5

केतु : 7

शुक्र : 8

सूर्य : 6

ग्रह : दिन

सूर्य : 0

भौम : 0

राहु : 0

गुरु : 0

शनि : 0

बुध : 0

केतु : 0

शुक्र : 0

सूर्य : 0

भौमांतर्दशा चक्र

ग्रह : वर्ष

भौम : 0

राहु : 1

गुरु : 0

शनि : 1

बुध : 0

केतु : 0

शुक्र : 1

सूर्य : 0

चंद्र : 0

ग्रह : मास

भौम : 4

राहु : 0

गुरु : 11

शनि : 1

बुध : 11

केतु : 4

शुक्र : 2

सूर्य : 4

चंद्र : 7

ग्रह : दिन

भौम : 27

राहु : 18

गुरु : 6

शनि : 9

बुध : 27

केतु : 27

शुक्र : 0

सूर्य : 6

चंद्र : 0

राह्वंतर्वशा चक्र

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम
वर्ष	2	2	2	2	1	3	0	1	1
मास	8	4	10	6	0	0	10	6	0
दिन	12	24	6	18	18	0	24	0	18

जीवांतर्दशा चक्र

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	19	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

शन्यंतर्दशा चक्र

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु
वर्ष	3	2	1	3	0	1	1	2	2
मास	0	8	1	2	11	7	1	10	6
दिन	3	9	9	0	12	0	9	6	12

बुधांतर्दशा चक्र

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि
वर्ष	2	0	2	0	1	0	2	2	2
मास	4	11	10	10	5	11	6	3	8
दिन	27	27	0	6	0	27	18	6	9

केत्वंतर्दशा चक्र

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

शुक्रांतर्दशा चक्र

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
वर्ष	3	1	1	1	3	2	3	2	1
मास	4	0	8	2	0	8	2	10	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0	0

प्रत्यंतर्दशा चक्र

सूर्य की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	भौम	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घटी	24	0	18	12	24	6	18	18	0

सू.द. चंद्रमा की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	0
घटी	0	30	0	0	30	30	30	0	0

सू.द. मंगल की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घटी	21	54	48	57	51	21	0	18	30

सू.द. राहु की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घटी	36	12	18	54	54	0	12	0	54

सू.द. गुरु की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घटी	24	36	48	48	0	24	0	48	12

सू.द. शनि की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

मास	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घटी	9	27	57	0	6	30	57	18	36

सू.द. बुध की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	17
घटी	21	51	0	18	30	51	54	48	27

सू.द. केतु की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घटी	21	0	18	30	21	54	48	57	51

सू. द. शुक्र की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्रमा की दशा में चंद्रमा की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घटी	0	30	0	0	30	30	30	0	0

चंद्रमा की दशा में मंगल की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घटी	15	30	0	15	45	15	0	30	30

चंद्रमा की दशा राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	25	15	1
घटी	0	0	30	30	30	0	0	0	30

चंद्रमा की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्रमा की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घटी	15	45	15	0	30	30	15	30	0

चंद्रमा की दशा में बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घटी	15	45	0	30	30	45	30	0	45

चंद्रमा की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घटी	15	0	30	30	15	30	0	15	45

चंद्रमा की दशा शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्रमा की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घटी	0	0	30	0	0	30	30	30	0

मंगल की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घटी	34	3	36	16	49	34	30	21	15
पल	30	0	0	30	30	30	0	0	0

मंगल की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	29	20	29	23	22	3	18	1	22
घटी	42	24	51	33	3	0	54	30	3

मंगल की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घटी	48	12	36	36	0	48	0	36	24

मंगल की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घटी	10	31	16	30	57	15	16	51	12
पल	30	30	30	0	0	0	30	0	0

मंगल की दशा में बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घटी	34	49	30	51	45	49	33	36	31
पल	30	30	30	0	0	0	30	0	0

मंगल की दशा केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घटी	34	30	21	15	34	3	36	16	49
पल	30	0	0	0	30	0	0	30	30

मंगल की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घटी	0	0	0	30	0	0	30	30	30

मंगल की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घटी	18	30	21	54	48	57	51	21	0

मंगल की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घटी	30	15	30	0	15	45	15	0	30

मंगल की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घटी	48	36	54	42	42	0	36	0	42

राहु की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घटी	12	48	24	24	0	12	0	24	36

राहु की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घटी	27	21	51	0	18	30	51	54	48

राहु की दशा में बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घटी	3	33	0	54	30	33	42	24	21

राहु की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घटी	3	0	54	30	3	42	24	51	33

राहु की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घटी	12	0	54	36	12	18	54	54	0

राहु की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घटी	0	30	0	0	30	30	30	0	0

राहु की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घटी	3	42	24	51	33	3	0	54	30

गुरु की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	22	1	28	14	8	8	4	14	25
घटी	24	36	48	48	0	24	0	48	12

गुरु की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घटी	24	12	12	0	36	0	12	48	36

गुरु की दशा में बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घटी	36	36	0	48	0	36	24	48	36

गुरु की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घटी	36	0	48	0	36	24	48	12	36

गुरु की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरु की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घटी	24	0	48	12	24	36	48	28	0

गुरु की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरु की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	19	20	14	23	17	19	26	16	28
घटी	36	42	48	12	36	36	0	48	0

गुरु की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घटी	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि की दशा और शनि के ही अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घटी	28	25	10	30	9	15	10	27	24
पल	30	30	30	0	0	0	30	0	0

शनि की दशा बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घटी	16	31	30	27	45	31	21	12	25
पल	30	30	0	0	0	30	0	0	30

शनि की दशा केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घटी	16	30	57	15	16	51	12	10	31
पल	30	0	0	0	30	0	0	30	30

शनि की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घटी	0	0	0	30	0	0	30	30	30

शनि की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घटी	6	30	57	18	36	9	27	57	0

शनि की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	1	1	2	2	3	2	1	1	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घटी	30	15	30	0	15	45	15	0	30

शनि की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घटी	16	51	12	10	31	16	30	57	1
पल	30	0	0	30	30	30	0	0	0

शनि की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घटी	54	48	27	21	51	0	18	30	51

शनि की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घटी	36	24	12	12	0	36	0	12	48

बुध की दशा और बुध की अंतर्दशा में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घटी	49	34	30	21	15	34	3	36	16
पल	30	30	0	0	0	30	0	0	30

बुध की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घटी	49	30	51	45	49	33	36	31	34
पल	30	0	0	0	30	0	0	30	30

बुध की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घटी	0	0	0	30	0	0	30	30	30

बुध की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	1	1	1	0	1
दिन	25	25	17	15	10	18	23	17	21
घटी	18	30	51	54	48	27	21	51	0

बुध की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घटी	30	45	30	0	49	15	45	0	30

बुध की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घटी	49	33	36	31	34	49	30	51	45
पल	30	0	0	30	30	38	0	0	0

बुध की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घटी	42	24	21	3	33	0	54	30	33

बुध की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घटी	48	12	36	36	0	48	0	36	24

बुध की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घटी	25	16	31	30	27	45	31	21	12
पल	30	30	30	0	0	0	30	0	0

केतु की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	23	7	22	19	3	20
घटी	34	30	21	15	34	3	36	16	49
पल	30	0	0	0	30	0	0	30	30

केतु की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घटी	0	0	0	30	0	0	30	30	30

केतु की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घटी	18	30	21	54	48	57	51	21	0

केतु की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घटी	30	15	30	0	15	45	15	0	30

केतु की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	0	1	0	0	0	0	0	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घटी	30	15	30	0	15	45	15	0	30

केतु की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घटी	42	24	51	33	3	0	54	30	3

केतु की दशा गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	1	1	1	0	1	0	0	1	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घटी	48	12	36	36	0	48	0	36	24

केतु की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घटी	10	31	16	30	57	15	16	51	12
पल	30	30	30	0	0	0	30	0	0

केतु की दशा में बुध के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि
मास	1	0	0	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घटी	34	49	30	51	45	49	33	36	31
पल	30	30	0	0	0	30	0	0	30

शुक्र की दशा में शुक्र के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10

शुक्र की दशा में सूर्य के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0

शुक्र की दशा में चंद्रमा के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य
मास	1	1	3	2	2	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0

शुक्र की दशा में मंगल के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घटी	30	0	0	30	30	30	0	0	0

शुक्र की दशा में राहु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3

शुक्र की दशा में गुरु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24

शुक्र की दशा में शनि के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	शनि	बुध	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरु
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घटी	30	30	0	0	0	30	0	0	0

शुक्र की दशा में केतु के अंतर में प्रत्यंतर

ग्रह	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	गुरू	शनि	बुध
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घटी	30	0	0	0	30	0	0	30	30

अष्टोत्तरी दशा ज्ञान चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
जन्म नक्षत्र	आर्द्रा	मघा	हनुत	अनुराधा	पू.षा.	धनिष्ठा	उ.भा.	कृत्तिका
	पुनर्वसु	पू.फा.	चित्रा		उ.षा.	शतभिष	रेवती	रोहिणी
		पुष्य	उ.फा.	स्वाती	ज्येष्ठा	अभिजित		अश्विनी
	आश्लेषा		विशाखा	मूल	श्रवण	पू.भा.	भरणी	मृगशिरा

अष्टोत्तरी अंतर्दशा चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र
वर्ष	0	0	0	0	0	1	0	1
मास	4	10	5	11	6	0	8	2
दिन	0	0	10	10	20	20	0	0

चंद्रांतर्दशा चक्र

ग्रह	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य
वर्ष	2	1	2	1	2	1	2	0
मास	1	1	4	4	7	8	11	10
दिन	0	10	10	20	20	0	0	0

भौमांतर्दशा चक्र

ग्रह	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
वर्ष	0	1	0	1	0	1	0	1
मास	7	3	8	4	10	6	5	1
दिन	3	3	26	26	20	20	10	10
घटी	20	20	40	40	0	0	0	0

बुधांतर्दशा चक्र

ग्रह	बुध	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सुर्य	चंद्र	मंगल
वर्ष	2	1	2	1	3	0	2	1
मास	8	6	11	10	3	11	4	3
दिन	3	26	26	20	20	10	10	3
घटी	20	40	40	0	0	0	0	20

शन्यंतर्दशा चक्र

ग्रह	शनि	गुरु	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध
वर्ष	0	1	1	1	0	1	0	1
मास	11	9	1	11	6	4	8	6
दिन	3	3	10	10	0	0	40	40

गुर्वंतर्दशा चक्र

ग्रह	गुरू	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि
वर्ष	3	2	3	1	2	1	2	1
मास	4	1	8	0	7	4	11	9
दिन	3	10	10	20	20	26	26	3
घटी	20	0		0	0	40	40	20

राह्वांतर्दशा चक्र

ग्रह	राहु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु
वर्ष	1	2	0	1	0	1	1	2
मास	4	4	8	8	10	10	1	1
दिन	0	0	0	0	20	20	10	10
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्रांतर्दशा चक्र

ग्रह	शुक्र	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	शनि	गुरु	राहु
वर्ष	4	1	2	1	3	1	3	2
मास	1	2	11	6	3	11	8	4
दिन	0	0	0	20	200	10	10	0
घटी	0	0	0	0	0	0	0	0

योगिनी दशा चक्र

दशा स्वामी वर्ष	मंगल चंद्र 1	पिंगला सूर्य 2	धान्या गुरु 3	भ्रामरी मंगल 4	भद्रिका बुध 5	उल्का शनि 6	सिद्ध शुक्र 7	संकटा राहु केतु 8
	आर्द्रा चित्रा श्रवण	पुनर्वसु स्वाती धनिष्ठा	पुष्य विशाखा शतभिष	आश्लेषा अनुराधा पू.भा. अश्विनी	मघा ज्येष्ठा उ.भा. भरणी	पू.फा. मूल रेवती कृत्तिका	उ.फा. पू.षा. रोहिणी	हस्त उ.षा. मृगशिरा

मंगला में अंतर्दशा चक्र

दशा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	0	0	1	1	1	2	2	2
दिन	10	20	0	10	20	0	10	20

पिंगला में अंतर्दशा चक्र

दशा	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	1	2	2	3	4	4	5	0
दिन	10	0	20	10	0	20	10	20

धान्या में अंतर्दशा चक्र

दशा	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	3	4	5	6	7	8	1	2
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

भ्रामरी में अंतर्दशा चक्र

दशा	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0
मास	5	6	8	9	10	1	2	4
दिन	10	20	0	10	20	10	20	0

भद्रिका में अंतर्दशा चक्र

दशा	भद्रिका	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी
वर्ष	0	0	0	1	0	0	0	0
मास	8	10	11	1	1	3	5	6
दिन	10	0	20	10	20	10	0	20

उल्का में अंतर्दशा चक्र

दशा	उल्का	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका
वर्ष	1	1	1	0	0	0	0	0
मास	0	2	4	2	4	6	8	10
दिन	0	0	0	0	0	0	0	0

सिद्धा में अंतर्दशा चक्र

दशा	सिद्धा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का
वर्ष	1	1	0	0	0	0	0	1
मास	4	6	2	4	7	9	11	2
दिन	10	20	10	20	0	10	20	0

संकटा में अंतर्दशा चक्र

दशा	संकटा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्का	सिद्धा
वर्ष	1	0	0	0	0	1	1	1
मास	9	2	5	8	10	1	4	6
दिन	10	20	10	0	20	10	0	20

अवकहड़ा चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वर्ण	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशीश	गण	नाड़ी	युन्जा	हंसका
अश्विनी	चु.चे.चो.ला.	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	पूर्व	अग्नि
भरणी	ली.लू.ले.लो.	मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मानव	मध्य	पूर्व	अग्नि
कृत्तिका	अ.इ.उ.ए.	मे1,वृ.3	क्ष.1,वै.3	चतुष्पद	छाग	वानर	मं.1,शु.3	राक्षस	अन्त्य	पूर्व	अ.1,पृ.3
रोहिणी	ओ.वा.वी.वु	वृष	वैश्य	चतुष्पद	सर्प	नकुल	शुक्र	मानव	अन्त्य	पूर्व	पृथ्वी
मृगशिरा	वे.वो.का.की.	वृ.2मि.2	वै.2शू.2	न.2 न.2	सर्प	नकुल	शु.2बु.2	देव	मध्य	पूर्व	पृ.2,वा.2
आर्द्रा	कु.घ.ङ.छ.	मिथुन	शूद्र	नर	श्वान	मृग	बुध	मानव	आदि	मध्य	वायु
पुनर्वसु	के.को.हा.ही.	मि.3क.1	शू. 3 ब्रा.1	न. 3 जा	मार्जार	मूषक	बु.3चं.1	देव	आदि	मध्य	वा.3,ज.1
पुष्य	हु.हे.हो.डा.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	छाग	वानर	चंद्र	देव	मध्य	मध्य	जल
आश्लेषा	डी.डू.डे.डो.	कर्क	ब्राह्मण	जलचर	मार्जार	मूषक	चंद्र	राक्षस	अंत्य	मध्य	जल
मघा	म.मी.मू.मे.	सिंह	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मार्जार	सूर्य	राक्षस	अंत्य	मध्य	अग्नि
पू.फाल्गुनी	मो.टा.टी.टू	सिंह	क्षत्रिय	वनचर	मूषक	मार्जार	सूर्य	मानव	मध्य	मध्य	अग्नि
उ.फाल्गुनी	टे.टो.पा.पी.	सिं.1 कं.3	क्ष.1 वै.3	व.1 न. 3	गौ	व्याघ्र	सू.1 बु.3	मानव	आदि	मध्य	अ.1पृ.3
हस्त	पू.ष.ण.ठ.	कन्या	वैश्य	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	मध्य	पृथ्वी

चित्रा	पे.पो.रा.री.	क- 2,तु 2	वै.2 शू. 2	पनर	व्याघ्र	गौ	बु, 2,शु, 2	राक्षस	मध्य	मध्य	पृ.2,वा.2
स्वाती	रू.रे.रो.ता.	तुला	शूद्र	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अंत्य	मध्य	वायु
विशाखा	ती.तू.ते.तो.	तु.3 वृ.1	न.3 ब्रा.1	न.3 ब्रा.1	व्याघ्र	गौ	शु.3 मं.1	राक्षस	अंत्य	मध्य	वा.3,ज.1
अनुराधा	ना.नी.नू.ने.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	अंत्य	जल
ज्येष्ठा	नो.या.यी.यू.	वृश्चिक	ब्राह्मण	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	अंत्य	जल
मूल	ये.यो.भ.भी.	धनु	क्षत्रिय	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अंत्य	अग्नि
पूर्वाषाढ़	भू.ध.फ.ढ.	धनु	क्षत्रिय न.11	च.11	मर्कट	मेष	गुरु	मानव	मध्य	अन्त्य	अग्नि
उत्तराषाढ़	भे.भो.ज.जो.	ध.1 म. 3	क्ष. 1 वै 3	चतुष्पद	नकुल	मेष	गु.1श.3	मानव	अन्त्य	अंत्य	अ.1,पृ.3
श्रावण	खी.खू.खे.खो.	मकर	वैश्य	न.111 ज.211	मर्कट	सर्प	शनि	देव	अन्त्य	अंत्य	पृथ्वी
धनिष्ठा	ग.गी.गु.गे.	म.2 कु. 2	वै.2शू.2	ज.2,न.2	सिंह	मेष गज	शनि	राक्षस	मध्य	अंत्य	पृ.2,वा.2
शतभिषा	गो.स.सी.सु.	कुंभ	शूद्र	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	अंत्य	वायु
पूर्वाभाद्रपद्र	से.सो.द.दी.	कु.3 मी. 1	शू.3ब्रा.1	न.3 ज.3	सिंह	गज	श.3,गु.1	मानव	आदि	अंत्य	वा.3,ज.1
उत्तराभाद्रपद	दू.ध.झ.	मीन	ब्राह्मण	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मानव	मध्य	अंत्य	जल
रेवती	दे.दो.च.ची.	मीन	ब्राह्मण	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अंत्य	पूर्व	जल